सम्पादकीय

युद्ध विराम से दुनिया में शांति की उम्मीद, इजराइल-हमास जंग में मारे गए 50 हजार लोग

इजराइल और हमास के बीच युद्ध विराम पर सहमति की घोषणा निश्चित रूप से एक बड़ी उपलब्धि है, लेकिन जब तक यह वास्तव में जमीन पर नहीं उतरेगी, तब तक फिर से जंग की आशंका बनी रहेगी। दरअसल, पिछले वर्ष मई के बाद कई बार तात्कालिक या अस्थायी युद्धविराम को लेकर पहलकदमी हुई, लेकिन फिर कुछ दिनों बाद हमलों में लोगों के मारे जाने की खबरें आती रहीं। जाहिर है, यह कुछ दिनों के लिए भी युद्ध को विराम देने को लेकर प्रतिबद्धता में कमी और शांति के प्रति उपेक्षा का भाव ही रहा कि अब तक इजराइली हमलों में फिलिस्तीनी लोगों के मारे जाने की खबरें आ रही हैं।

मगर अब युद्ध विराम के सवाल पर इजराइल और हमास के बीच ताजा सहमति की खबर से इस बार शांति की राह तैयार होने की उम्मीद पैदा हुई है। फिलहाल समझौते का जो स्वरूप सामने आया है, उसके मुताबिक हमास की ओर से चरणबद्ध तरीके से इजराइली बंधकों और इजराइल में सैकड़ों फिलिस्तीनी कैदियों की रिहाई सुनिश्चित की जाएगी। साथ ही, गाजा में विस्थापित लोगों को वापस लौटने की भी अनुमति दी जाएगी। इसके अलावा, युद्ध से प्रभावित इलाकों में मानवीय सहायता पहुंचाने की व्यवस्था होगी। गौरतलब है कि मौजूदा युद्ध की शुरुआत सात अक्तूबर, 2023 को इजराइल पर हमास के उस हमले से हुई थी, जिसमें करीब बारह सौ लोग मारे गए थे। उसके बाद हमास को जवाब देने के नाम पर इजराइल के गाजा पर हमले को एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया माना गया था। मगर तब से लेकर पंद्रह महीने बीत चुके हैं और गाजा पर इजराइल का हमला लगातार जारी है। एक आंकड़े के मुताबिक, इजराइल के हमले में अब तक करीब पचास हजार लोग मारे गए हैं। गाजा में बीस लाख से ज्यादा लोग विस्थापित हो चुके हैं। इजराइल का कहना है कि वह हमास के आतंक का खात्मा कर देगा। लेकिन यह पड़ताल का मसला है कि इजराइल के हमले में हमास के कितने सदस्य मारे गए और कितने आम लोगों को जान गंवानी पड़ी। अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि इस युद्ध में मारे गए आम लोगों में बड़ी संख्या बच्चों और महिलाओं की है, जिनका युद्ध से कोई वास्ता नहीं था। गाजा पर हमले के क्रम में अस्पताल, स्कूल और हमले से बचने के लिए पनाह लेने वाली जगहों को भी नहीं बख्शा गया। युद्ध को लेकर अंतरराष्ट्रीय नियम-कायदों का भी कोई खयाल रखना जरूरी नहीं समझा गया। इस सबके लिए इजराइल पर जनसंहार और वहां के प्रधानमंत्री पर युद्ध अपराध का आरोप भी लगाया गया। इजराइल और हमास के बीच युद्ध को खत्म कराने के लिए संयुक्त राष्ट्र से लेकर कई स्तर पर कोशिशें जारी थीं, मगर उसका कोई सकारात्मक नतीजा नहीं निकल पा रहा था। अब इतने लंबे समय के बाद अगर युद्धविराम पर दोनों पक्षों के बीच सहमति बन सकी है तो इस बात की कोशिश होनी चाहिए कि अब उसमें कोई अड़चन न खड़ी की जाए, उस पर अमल भी सुनिश्चित किया जाए और शांति निरंतरता में कायम हो। ऐसी स्थिति फिर नहीं पैदा होनी चाहिए कि एक ओर युद्ध विराम पर सहमति की घोषणा हो और दूसरी ओर हमले और उसमें लोगों का मारा जाना जारी रहे। यह एक स्थापित हकीकत है कि किसी भी समस्या या विवाद का हल अंतहीन युद्ध नहीं हो सकता।

आज का इतिहास — बढ़ता राजस्थान

18 जनवरी की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- हेनरी मोरगन ने 1670 में पानामा पर कब्ज़ा किया।
- ब्रैडनबर्ग के फ्रेडरिक तृतीय 1701 को प्रशिया की गद्दी पर बैठे।
- 1778 में 'हवाई द्वीपसमूह' की खोज करने वाले जेम्स कुक पहले यूरोपियन बने।
- अमेरिकी में एरिजोना परिसंघ क्षेत्र का 1862 में गठन।
- 'वेसले कॉलेज, मेलबर्न की स्थापना 1866 में हुई।
- आलिशान गाड़िया बनाने वाली ब्रिटिश कंपनी 'बेंटले मोटर्स लिमिटेड' की स्थापना 1919 में हुई।
- सन 1930 में महान लेखक रवीन्द्रनाथ टैगोर ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम की यात्रा की।
- झूठ पकड़ने वाली मशीन का 1951 को नीदरलैंड में पहली बार इस्तेमाल हुआ।
- 1952 में मिस्र में ब्रिटेन के खिलाफ़ दंगे भड़के।
- 1954 को इटली में फनफानी ने सरकार का गठन किया।
- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की सहयोगी मीरा बेन (मैडलिन स्लैड) ने 1959 में भारत छोड़ा।
- जापान तथा अमेरिका ने 1960 में संयुक्त रक्षा समझौता किया।
- अमेरिका ने 1962 में नेवादा में परमाणु परीक्षण किया।
- यूरोपीय साझा बाज़ार से ब्रिटेन को अलग करने की फ्रांस ने 1963 में वकालत की।
- पूर्वी कजाखस्तान में तत्कालीन सोवियत संघ ने 1963 में परमाणु परीक्षण किया।
- मिस्र एवं इजरायल ने 1974 में हथियारों का समझौता किया।
- जासूसी के आरोप में फ्रांस ने 1976 को 40 सोवियत अधिकारियों को देश से निष्कासित किया।
- आज़ादी सच्चाई और मानवाधिकार के समर्थन में 1989 को चेकोस्लोवाकिया में करोड़ों लोगों ने प्रदर्शन किया।
- ईस्टर्न एयरलाइन को आर्थिक कारणों से 1991 में आज ही के दिन बंद कर दिया गया था।
- 'नफीसा जोसेफ' 1997 में 'मिस इंडिया' बनीं।
- पश्चिम अफ्रीकी देश सियरा लियोन में 2002 में गृह युद्ध समाप्त।
- लीबिया 2003 में संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग का अध्यक्ष नियुक्त।
- 2004 में हुई क्रिकेट की एकदिवसीय शृंखला में भारत ने आस्ट्रेलिया को 19 रनों से हराया।
- इच्छा मृत्यु पर संयुक्त राज्य अमेरिका में सुप्रीम कोर्ट ने 2006 में मुहर लगायी।
- जॉर्ज क्लूने को 2008 में संयुक्त राष्ट्र के शांतिदूत बनाये गये।
- 'बंगाल क्रिकेट एसोसिएशन' ने 2009 में सौरव गांगुली को सोने के बैट से सम्मानित किया।

18 जनवरी को जन्मे व्यक्ति

- अमेरिकी राजनेता डेनियल वेब्सटर का जन्म 1782 में हुआ।
- महाराष्ट्र के महान विद्वानसमाज सुधारक महादेव गोविंद रानाडे का जन्म 1842 में हुआ।
- वीणा वादक सुन्दरम बालचंद्रन का जन्म 1927 में हुआ।

विशेष आलेख

आठवें वेतन आयोग का स्वर्णिम युग-मोदी है तो मुमकिन है

— प्रो. आरके जैन

आठवें वेतन आयोग से यह अपेक्षा की जा रही है कि यह केंद्रीय कर्मचारियों के वेतन में 20-30% तक की प्रभावशाली वृद्धि का मार्ग प्रशस्त करेगा। महंगाई भत्ता, परिवहन भत्ता और आवास भत्ता जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में व्यापक सुधार की संभावनाएं भी इस आयोग से जुड़ी हुई हैं। इन भत्तों में वृद्धि न केवल कर्मचारियों के दैनिक खर्चों का बोझ कम करेगी, बल्कि उनके जीवनस्तर को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगी। इससे कर्मचारियों का मनोबल सुदृढ़ होगा, और वे अपने कार्यक्षेत्र में अधिक ऊर्जा और समर्पण के साथ योगदान कर सकेंगे। यह आयोग पेंशनभोगियों के लिए भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहा है। वृद्धावस्था में बढ़ती चिकित्सा आवश्यकताओं और अन्य आर्थिक चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए पेंशन राशि में संभावित वृद्धि पेंशनभोगियों की आर्थिक सुरक्षा को सुनिश्चित करेगी।

भारत में केंद्रीय कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के कल्याण हेतु वेतन आयोगों की परंपरा प्रशासनिक व्यवस्था की एक सशक्त नींव रही है। इन आयोगों का प्रमुख उद्देश्य कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के वेतन और भत्तों की संरचना को बदलती आर्थिक परिस्थितियों, महंगाई और जीवन की नई अपेक्षाओं के अनुरूप सुसंगत बनाना है। 1956 में पहले वेतन आयोग की स्थापना से लेकर अब तक सात आयोगों ने कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के जीवन में उल्लेखनीय सुधार लाने हेतु कई ऐतिहासिक सिफारिशें की हैं। आठवां वेतन आयोग इस गौरवशाली परंपरा को नई ऊंचाई प्रदान करने का माध्यम बन रहा है। इसका उद्देश्य न केवल कर्मचारियों की वित्तीय स्थिति को मजबूत करना है, बल्कि उनके जीवनस्तर को और अधिक गरिमापूर्ण बनाना भी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सशक्त नेतृत्व में केंद्र सरकार ने कर्मचारियों और पेंशनभोगियों की भलाई को सदैव प्राथमिकता दी है। यह आयोग अपनी सिफारिशों के माध्यम से वेतन और भत्तों में सकारात्मक बदलाव लाने के साथ-साथ कर्मचारियों के जीवन को समृद्ध बनाने की दिशा में एक दूरदर्शी और क्रांतिकारी प्रयास है।

पेंशन योजनाओं और स्वास्थ्य सेवाओं में अपेक्षित सुधार से पेंशनभोगियों को न केवल आत्मनिर्भरता का अनुभव होगा, बल्कि उन्हें गरिमापूर्ण और सुखमय जीवन जीने का अवसर भी प्राप्त होगा।

वेतन आयोग का प्रभाव केवल कर्मचारियों और पेंशनभोगियों तक सीमित नहीं है; यह समग्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के प्रवाह को भी गहराई से प्रभावित करता है। जब सरकारी कर्मचारियों की क्रय शक्ति में वृद्धि होती है, तो उनका उपभोक्ता खर्च बढ़ता है, जिससे आर्थिक गतिविधियों में एक नई ऊर्जा का संचार होता है। इसके परिणामस्वरूप रियल एस्टेट, ऑटोमोबाइल, खुदरा व्यापार, और तकनीकी सेवाओं जैसे क्षेत्रों में मांग का तेजी से विस्तार होता है, जो इन उद्योगों को अभूतपूर्व ऊंचाइयों तक ले जाता है। उपभोक्ता मांग में यह वृद्धि उत्पादन में तेज़ी और रोजगार के नए अवसरों का सृजन करती है, जिससे राष्ट्र की आर्थिक प्रगति को नया बल मिलता है। जब कर्मचारियों की वित्तीय स्थिति सुदृढ़ होती है, तो उनके आत्मविश्वास में भी जबरदस्त इज़ाफा होता है। इसका प्रभाव न केवल उनकी व्यक्तिगत समृद्धि पर पड़ता है, बल्कि यह पूरे राष्ट्र की आर्थिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में शुरू की गई योजनाएं, जैसे डिजिटल इंडिया, आत्मनिर्भर भारत, और स्किल इंडिया, ने कर्मचारियों को तकनीकी रूप से सक्षम और बहुमुखी कौशल से सशक्त बनाने में क्रांतिकारी भूमिका निभाई है। इन पहलों ने कर्मचारियों के कार्य प्रदर्शन को आधुनिक युग की चुनौतियों के लिए तैयार किया है, जिससे उनकी दक्षता और प्रेरणा को नई दिशा मिली है। इन योजनाओं का समन्वय वेतन आयोग के सुधारों के साथ मिलकर न केवल कर्मचारियों को अधिक उत्पादक और सक्षम बनाएगा, बल्कि उनकी कार्यक्षमता में भी अभूतपूर्व सुधार लाएगा। यह समग्र रूप से एक ऐसी स्थिति का निर्माण करेगा, जो न केवल व्यक्तिगत और औद्योगिक प्रगति को प्रोत्साहित करेगी, बल्कि भारत को आर्थिक शक्ति के नए शिखर पर स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगी। यद्यपि वेतन आयोग की सिफारिशों को लागू करने से आरंभ में सरकार के खजाने पर कुछ दबाव पड़ सकता है, लेकिन इसके दीर्घकालिक परिणाम राष्ट्र की आर्थिक बुनियाद को सुदृढ़ करने वाले सिद्ध होंगे। जब कर्मचारियों और पेंशनभोगियों की वित्तीय स्थिति सशक्त होती है, तो उनका आत्मविश्वास नई ऊंचाइयों पर पहुंचता है। यह आत्मविश्वास न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन में ऊर्जा का संचार करता है, बल्कि उनकी सेवाओं में समर्पण, निष्ठा, और कार्यकुशलता को भी बढ़ाता है। इसका सकारात्मक प्रभाव प्रशासनिक तंत्र की दक्षता पर पड़ता है, जो देश के समग्र विकास की रफ्तार को तीव्र करता है। आठवां वेतन आयोग कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के जीवन में बदलाव लाने के साथ उनकी प्रेरणा, संतोष और आत्मसम्मान को बढ़ाने का भी प्रयास है। यह आयोग कर्मचारियों को उनकी जिम्मेदारियों को और अधिक प्रभावी ढंग से निभाने के लिए प्रोत्साहित करेगा, जिससे सरकारी प्रशासन की गुणवत्ता में सुधार होगा। इसके परिणामस्वरूप न केवल कार्य प्रदर्शन उत्कृष्ट होगा, बल्कि देश की प्रशासनिक प्रणाली अधिक संगठित और सक्षम बनेगी। आठवां वेतन आयोग केवल वेतनवृद्धि का प्रतीक नहीं है; यह एक ऐसा परिवर्तनकारी कदम है, जो कर्मचारियों और पेंशनभोगियों को उनके जीवन के हर पहलू में नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए प्रतिबद्ध है। यह पहल उनके कार्य और जीवन दोनों में संतुलन स्थापित कर, भारत की प्रगति को एक नई दिशा प्रदान करेगी।

भारत अंतरिक्ष में सैटेलाइट जोड़ने वाला विश्व का चौथा देश बना

— रामस्वरूप रावतसरे

भारत ने वर्ष 2025 की शुरुआत के साथ ही अंतरिक्ष क्षेत्र में बड़ी सफलता हासिल की है। इसरो ने अंतरिक्ष में ही स्पेडेक्स मिशन के दो सैटेलाइट मॉड्यूल आपस में जोड़ लिए हैं। इस मिशन में 'डॉकिंग' की प्रक्रिया पूरी हो गई है। यह क्षमता हासिल करने वाला भारत विश्व का चौथा देश बन गया है। इस मिशन के लिए 30 दिसम्बर, 2024 को सैटेलाइट छोड़े गए थे और बाद में धीमे-धीमे इन सैटेलाइट को पास में लाकर जोड़ दिया गया। इसरो अब इसी मिशन के बाकी लक्ष्य पूरा करने के लिए कदम बढ़ाएगा।

इसरो ने 16 जनवरी, 2025) को यह जानकारी देते हुए अपने ट्विटर पर लिखा, स्पेस क्राफ्ट डॉकिंग सफलतापूर्वक पूरी हुई। यह एक ऐतिहासिक क्षण था। पहले 15 मीटर से 3 मीटर होल्ड पॉइंट तक पास लाया गया। डॉकिंग की शुरुआत सटीकता के साथ हुई, इसके बाद अंतरिक्ष यान को सफलतापूर्वक कैप्चर किया गया3 डॉकिंग सफलतापूर्वक पूरी हुई।भारत अंतरिक्ष डॉकिंग को सफल बनाने वाला चौथा देश बन गया। पूरी टीम को बधाई। भारत को बधाई।

इसरो की इस सफलता पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बधाई दी है। उन्होंने एक्स (पहले ट्विटर) पर लिखा, 'सैटेलाइट की अंतरिक्ष डॉकिंग में सफलता के लिए सफल प्रदर्शन के लिए इसरो के हमारे वैज्ञानिकों और पूरे समुदाय को बधाई। यह आने वाले वर्षों में भारत के महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष मिशनों के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।' इस मिशन की सफलता भारत को अंतरिक्ष में स्पेस स्टेशन बनाने, अपने अंतरिक्ष यात्री को भेजने और बाकी स्पेस मिशन पूरे करने में मदद करेगी। इसरो ने जो प्रक्रिया पूरी की है उसे डॉकिंग कहा जाता है। डॉकिंग से पहले दोनों सैटेलाइट मॉड्यूल अलग थे।

इसरो द्वारा लॉन्च किए गए मिशन में से एसडीएक्स-01 चेसर सैटेलाइट है जबकि एसडीएक्स -02 टार्गेट सैटेलाइट है। इसका मतलब है कि एसडीएक्स -01 कक्षा में स्थापित किए जाने के बाद एसडीएक्स -02 की तरफ बढ़ा और अंत में दोनों जुड़ गए। पीएसएलवी सी -60 रॉकेट ने इन्हें आपस में लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर छोड़ा था। इसके बाद इन्हें जोड़ने की प्रक्रिया चालू की गई। दोनों सैटेलाइट को जोड़ने की प्रक्रिया यानि डॉकिंग 7 जनवरी, 2025 को चालू की गई। इसके लिए सबसे पहले दोनों को 20 किलोमीटर की दूरी पर रोका गया था। इसके बाद टार्गेट सैटेलाइट एसडीएक्स-01 को स्टार्ट किया गया। 10 जनवरी, 2025 को यह दोनों 1.5 किलोमीटर पास लाए गए। 11 जनवरी को 225 मीटर पर लाए गए। 12 जनवरी को यह 100 मीटर पर आए। इस बाद इसरो ने इन्हें 15 मीटर और फिर 3 मीटर करीब लाया। दोनों को फिर वापस 15 मीटर पर ले जाया गया। इसके बाद 16 जनवरी, 2025 की सुबह दोनों मॉड्यूल आपस में जोड़ दिए गए। अब इन पर आगे और भी प्रयोग भी किए जाएँगे।

अब सारे प्रयोग पूरे होने के बाद दोनों सैटेलाइट को अनडॉक यानी एक-दूसरे से अलग भी किया जाएगा। यह दोनों इसके बाद लगभग 2 साल तक अलग-अलग प्रयोग में काम आएँगे। एसडीएक्स - 01 सैटेलाइट पर छोटे कैमरे भी लगे हुए हैं। यह कैमरे इसके बाद तस्वीरें और वीडियो लेंगे। इसके अलावा भी इस पर कई सेंसर लगे हैं। यह सेंसर अंतरिक्ष में होने वाली गतिविधियों का पता लगाएँगे। इनमें से एक सेंसर रेडियेशन का स्तर भी मापेगा। इन सैटेलाइट को भारत में स्थित सैटेलाइट नियंत्रण सेंटर से नियंत्रित किया जाएगा।जानकारी के अनुसार इसरो ने सोमवार को रात 10 बजे श्रीहरिकोटा में स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से पीएसएलवी सी-60 रॉकेट लॉन्च किया था।

शख्सियत — बढ़ता राजस्थान

नमस्कार मित्रों हमारे आज की शख्सियत कॉलम के स्टार हैं भारतीय पुलिस सेवा के जाँबाज अधिकारी श्री राहुल बारहट। अपराधियों के एनकाउंटर का जिक्र हो और इस जाँबाज आईपीएस का जिक्र ना चले हो ही नहीं सकता । 31 दिसम्बर सन 1980 को गुजरात के अहमदाबाद में जन्में इस युवा ने अपराध के खात्मे का प्रण उस समय लिया जब ये आईपीएस बने और तब से सच में अपराधियों ने अपना मार्ग बदल लिया जिस मार्ग से ये गुजरे। बी.ई (कंप्यूटर) की शिक्षा के बाद आईपीएस बने और मालासर गांव में गैंगस्टर व पांच लाख के ईनामी बदमाश आनंदपालसिंह के खात्मे के बाद सुर्खियों में छाए रहे और युवाओं व पुलिस फोर्स के लिए आदर्श स्थापित हुए। गैंगस्टर आनंदपाल सिंह का एनकाउंटर 24 जून 2017 को इन्होंने चूरू जिले पुलिस कप्तान के रूप में नेतृत्व करते हुए किया और आनंदपाल का एनकाउंटर करने वाली टीम में खुद शामिल थे। जाँबाज आईपीएस को पूरे देश में ख्याति मिली आज उत्प्रवासी संरक्षक, पीओई मुबंई पद को सुशोभित कर रहे हैं। इससे पूर्व उप महानिरीक्षक पुलिस, आरपीटीसी जोधपुर। पुलिस अधीक्षक, जोधपुर ग्रामीण। पुलिस अधीक्षक, बाड़मेर। कमाण्डेन्ट,3 बटालियन, आरएसी बीकानेर। पुलिस अधीक्षक, चूरू। पुलिस अधीक्षक, झालावाड़। पुलिस उपायुक्त, जोधपुर (पूर्व) कमांडेंट, आरपीटीसी, जोधपुर। पुलिस अधीक्षक,बाड़मेर। पुलिस अधीक्षक, जालोर। पुलिस अधीक्षक, एटीएस जयपुर। सहायक अधीक्षक पुलिसए एटीएस जयपुर। सहायक अधीक्षक पुलिस, सर्कल सांगानेर जयपुर शहर (पूर्व) फाउंडेशनल कोर्स के तहत भोपाल गए। सहायक अधीक्षक पुलिस, सर्कल सांगनगर जयपुर (पूर्व) कमांडेंट आरपीटीसी जोधपुर का अतिरिक्त पदभार संभाला। सीमा सुरक्षा बल आईजी की प्रशस्ति सूची में प्रशंसा पत्र प्राप्त आईपीएस की श्रेणी में आते हैं। पुलिस फोर्स के लिए राजा बनकर कार्य किया जोकि उस जिले के पुलिसकर्मी आज भी नहीं भूले हैं जहां जिस जिले में राहुल एसपी रहे थे। दैनिक बढ़ता राजस्थान की टीम इनके उजवल भविष्य की कामना करती है।

रूपक शर्मा

बारहट राहुल मनहर्दन
(वरिष्ठ आईपीएस)

2025_018 — बढ़ता राजस्थान

Suduko

9								4
			2	9			8	
4	2		7	8		9	3	6
							9	
7				1		3	4	
8		3	4	7		6	2	5
5	8			4	6			3
3	4	7	1	2		8	6	9
1		6	8	3		4		2

Ans_2025_017

6	5	1	9	2	4	8	7	3
8	3	7	1	5	6	4	2	9
9	2	4	7	8	3	5	1	6
3	4	5	6	1	8	2	9	7
7	9	6	2	4	5	3	8	1
1	8	2	3	7	9	6	4	5
4	7	8	5	3	1	9	6	2
5	1	9	4	6	2	7	3	8
2	6	3	8	9	7	1	5	4

कैसे खेलें

वर्ग को 1 से 9 तक अंकों से ऐसे भरें कि आड़ी व खड़ी पंक्ति के साथ ही 3 गुणा 3 के बॉक्स में 1 से 9 तक अंक आएं। कोई अंक दुबारा नहीं आए।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आज कई विविध लाभों को पूरा करेंगे। ...

मेष
महिलाओं के बारे में विशेष ध्यान रखें। वाणी एवं व्यवहार में सावधानी बरतें। विदेश से कोई समाचार मिल सकता है। कानूनी बातों का निर्णय सोच-समझकर करें। आज घर, परिवार एवं व्यापार जैसे तमाम क्षेत्रों में आपको लाभ होगा।

वृष
अनुकूल वातावरण रहेगा और साथियों का सहयोग मिलेगा। आज आप प्यार एवं भावना के प्रवाह में रहेंगे। दोस्त, स्वजनों और रिश्तेदारों की ओर से कोई उपहार मिल सकता है। आप उनके साथ अपना दिन खुशी में गुजार सकेंगे।

मिथुन
आज रिश्तेदार एवं मित्रों के साथ मुलाकात से आप आनंद का अनुभव करेंगे। आर्थिक योजना में आपको पहले थोड़ी मुसीबत हो सकती है, आपके जरूरी काम भी शुरुआती विलंब के बाद आसानी से पूरे होने पर शांति का अहसास करेंगे।

कर्क
आज आपको काफी संवेदनशीलता का अनुभव होगा। इस कारण किसी के द्वारा आपकी भावना को ठेस पहुंच सकती है। आज आपको मां की बीमारी की चिंता होगी। मकान या जमीन के दस्तावेजी काम आज न करें। आपका मन द्रवित हो उठेगा।

सिंह
मित्रों के साथ आनंददायक प्रवास होगा, तो दांपत्यजीवन में भी आप ज्यादा निकटता बना सकेंगे। अविवाहितों को जीवनसाथी की तलाश में सफलता मिलेगी। कमिशन, ब्याज से आपकी आय में वृद्धि होगी।

कन्या
जमीन-जायदाद के दस्तावेजी काम कर सकेंगे। आपका आज का दिन प्रतिकूलताओं एवं अनुकूलताओं से भरा होगा। लेखन-साहित्य से जुड़े काम कर सकेंगे। हांलाकि, व्यवसायिक स्थल पर प्रतिकूल परिस्थिति रहेगी।

तुला
दूसरों की ओर से चिंता कम होगी। इस कारण आप का मन खुश रहेगा। परिजनों या दोस्तों के साथ अच्छे भोजन का अवसर मिलेगा। कोई आकस्मिक यात्रा हो सकती है। आर्थिक मामलों से संबंधित व्यवस्था कर सकेंगे।

वृश्चिक
आज आप के लिए नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। आप पर अधिकारियों की कृपा दृष्टि रहेगी। परिवार में उत्सव और उल्लास का माहौल बना रहेगा। मन में भावनात्मकता बढ़ेगी। मां की ओर से फायदा होगा।

धनु
काम का बोझ ज्यादा रहेगा। नए काम की शुरुआत न करें। शारीरिक स्वास्थ्य बिगड़ेगा। मन बेचैन एवं चिंतित रहेगा। वाणी पर संयम रखें। खर्च ज्यादा होगा। आज आपका दिन शुभ है। व्यापार बढ़ाने को लेकर आपके प्रयास रंग लाएंगे।

मकर
मानसिक व्यग्रता को दूर करने के लिए आध्यात्मिकता, योग का सहारा लें। महिला और पानी से बचकर रहें। अभ्यास के लिए समय मध्यम है। आज आप को ज्यादा संवेदनशील एवं भावुकता भरे विचार आएंगे।

कुंभ
प्रवास, सुंदर भोजन एवं प्रियजन के साथ से आप रोमांचित रहेंगे। पत्नी के संग से मन प्रसन्न रहेगा। आज आपको कोर्ट-कचहरी से जुड़े मामलों के लेकर सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है। आज मन भावनाओं से व्यथित रहेगा।

मीन
अधिकारियों का रवैया नकारात्मक रहेगा। विरोधियों के साथ वाद-विवाद न करें। संतान से मतभेद हो सकते हैं। यात्रा की संभावना है। धनखर्च होगा। कार्य सफलता में विलंब होने के कारण निराशा का अनुभव होगा। काम समय से पूरा नहीं होगा।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,हमीरपुरा रोड खण्डवा,निवाई टोंक (राज.) से मुद्रित एवं 185/ 116 ''प्रतीक्षा'' सेक्टर-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर से प्रकाशित, संपादक-तनुजा पठान*। प्रधान संपादक-राम बिलास विजयवर्गीय मो. 9414242258, 9214048888,जयपुर फोन नं.0141-2796794,795 टोंक कार्यालय-बाईपास निवाई, टोंक फोन नं.01432-244881 निवाई 01438-222201,202,203 अलवर कार्यालय-मेहताब सिंह का नोहरा,अलवर मो. 7733000123,कोटा कार्यालय-छावनी मेन रोड,कोटा मो.9414823448 । ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

राष्ट्रीय
सहारा
नई दिल्ली • शनिवार • 18 जनवरी • 2025
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

बारह ज्ञानी एक घंटे में जितने प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं उससे कहीं अधिक प्रश्न मूर्ख व्यक्ति एक मिनट में पूछ सकता है

-स्वामी शिवानंद

बंद हुआ कारोबार

अमेरिकी निवेश व अनुसंधान कंपनी हिंडनबर्ग रिसर्च ने अचानक अपना कारोबार समेटने का ऐलान कर दिया। कंपनी के संस्थापक नेट एंडरसन ने अपने परिचितों, परिवार व मित्रों का हवाला देते हुए वेबसाइट पर पर्सनल नोट में लिखा- मैंने हिंडनबर्ग रिसर्च को भंग करने का फैसला किया है। नेट ने कहा यह अचानक लिया गया फैसला नहीं है। काफी सोच-समझकर लिया गया फैसला है। 2017 में हिंडनबर्ग रिसर्च का गठन करने वाले एंडरसन ने इसे अपने जीवन का एक अध्याय बताते हुए, जीवन का मुख्य केंद्र नहीं है कहा। अमेरिकी अकाउंटेंट हैरी मार्कोपोलस को अपना रोल मॉडल मानने वाले एंडरसन ने ऐसे वक्त यह घोषणा की है, जब अमेरिका के नये राष्ट्रपति के तौर पर डोनाल्ड ट्रंप शपथ लेने वाले हैं। आलोचकों के अनुसार जॉर्ज सोरेस के

साथ हिंडनबर्ग के कथित संबंधों व ट्रंप प्रशासन के दबाव का अंदेशा व्यक्त किया है। इस शॉर्ट सेलिंग कंपनी को 2024 में भारतीय बाजार नियामक संस्था सेबी द्वारा कारण बताओ नोटिस भी जारी किया गया था। क्योंकि कंपनी ने सेबी प्रमुख माधवी बुच पर वित्तीय धोखाधड़ी के आरोप मढे थे। उससे पहले हिंडनबर्ग ने देश के प्रमुख औद्योगिक समूह अडाणी पर गंभीर आरोपों द्वारा भारत में सुर्खियां बटोरी थीं। समूह के मालिक गौतम अडानी पर अपनी ही कंपनियों के शेयरों में हेराफेरी कर सौ अरब डॉलर कमाने का आरोप था। रिपोर्ट सार्वजनिक होते ही अडानी ग्रुप को डेढ़ सौ अरब डॉलर का नुकसान होते ही वह विश्व के बीस अतिसमृद्धों की सूची से बाहर हो गए। हिंडनबर्ग की रिपोर्टों का हवाला देकर विपक्ष ने एकजुट होकर मोदी सरकार पर हमला बोल दिया था। हिंडनबर्ग ने अमेरिका के अलावा विदेशों की विभिन्न कंपनियों में गैर-कानूनी लेन-देन व वित्तीय अनियमितताओं का खुलासा किया, जिससे उनके शेयर्स बुरी तरह ध्वस्त होने से उन्हें जबरदस्त नुकसान झेलना पड़ा। अरबपतियों व कुलीन वर्ग के साम्राज्य को हिलाने की जरूरत पर जोर देने वाली कंपनी के इस फैसले से खुश होने वाले भले ही चुनिंदा हैं मगर हतप्रभ रहने वाले लाखों हैं। असल में यह फैसला उसे क्यों लेना पड़ा, जब तक यह स्पष्ट नहीं हो जाता, हर कोई अपने-अपने कयास लगाता रहेगा। दुनिया भर को अपने निशाने पर रखने वाले एंडरसन ने अभी अपनी भविष्य की योजनाओं के भी स्पष्ट संकेत नहीं दिए हैं। हो न हो, वह बड़ी तैयारी से कुछ अनोखा ही कर दिखाएंगे।

युद्धविराम और शांति

इस्राइल और हमास के बीच करीब 15 महीना से जारी युद्ध के बाद आखिरकार शांति समझौता हो गया जिसका स्वागत किया जाना चाहिए। इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने जब तक इस शांति समझौते का अनुमोदन नहीं किया था तब तक विश्व समुदाय में असमंजस की स्थिति बनी हुई थी। ऐसी अफवाहें थी कि इस्राइल के कुछ धुर दक्षिणपंथी नेता इस समझौते का विरोध कर रहे थे और प्रधानमंत्री नेतन्याहू इस दबाव में शांति समझौते का अनुमोदन करने के लिए कैबिनेट वोट में देरी की। खुशी की बात है कि उन्होंने समझौते का अनुमोदन कर दिया है और अब कैबिनेट से पारित हो जाएगा। हालांकि इस क्षेत्र की भू-रणनीति की स्थिति इतनी जटिल है जिसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि शांति समझौते की जमीन बहुत भुर-भुरी है। आने वाला

समय ही बता पाएगा कि क्या इस शांति समझौते से अस्थाई शांति का रास्ता निकल पाएगा या नहीं। अमेरिका और कतर की मध्यस्थता में यह शांति समझौता संभव हो सका है, लेकिन विश्व समुदाय के नेताओं को इस समझौते को सफलतापूर्वक लागू करवाने के लिए और अधिक प्रयास करने की जरूरत है। दोनों युद्धरत देश के बीच युद्ध विराम के कई प्रयास पहले भी हुए हैं, लेकिन समझौते पर पारस्परिक सहमति न बनने के लिए जितना हमास के नेता जिम्मेदार हैं उससे कहीं अधिक प्रधानमंत्री नेतन्याहू है। समझौते के प्रावधानों के तहत शुरुआती छह सप्ताह तक युद्ध विराम रहेगा। इस दौरान हमास 33 इस्राइली बंधकों को रिहा करेगा। दूसरे चरण में सभी बंधकों की रिहाई हो जाएगी और अस्थाई शांति समझौता लागू हो जाएगा। इस दौरान गाजा से सभी इस्राइली सैनिकों की वापसी हो जाएगी। इस शांति समझौते को जमीन पर उतरने में अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति ट्रंप की बड़ी भूमिका है जिन्होंने चेतावनी दी थी कि उनके पद ग्रहण (20 जनवरी) से पहले बंधकों की रिहाई हो जानी चाहिए। गौरतलब है कि गाजा पर इस्राइल की सैनिक कार्रवाई में 46 हजार से ज्यादा लोग मारे गए। बहरहाल, उम्मीद की जानी चाहिए की इस शांति समझौते के बाद विश्व समुदाय गाजा के पुनर्निर्माण में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे और स्थाई शांति का हर संभव प्रयास करेंगे।

कटाक्ष/ कबीरदास

असली वाली आजादी!

भागवत जी बोले हैं तो सही ही होगा कि आजादी तो पिछले साल ही मिली थी, राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के बाद। बाकी समझदार को इशारा ही काफी है। आजादी की सालगिरह आ रही है। क्यों न इसी सालगिरह से भारत का नया स्वतंत्रता दिवस घोषित कर दिया जाए। कब तक हम झूठ-मूठ का स्वतंत्रता दिवस मनाते रहेंगे। कब तक 15 अगस्त वाला स्वतंत्रता दिवस ढोते रहेंगे। वह वाला स्वतंत्रता दिवस तो वैसे भी पाकिस्तान के स्वतंत्रता दिवस के ऐन बाद में पड़ता है। यानी यहां भी हिन्दुओं का अपमान।

माना कि आजादी और स्वतंत्रता दिवस का मामला काफी कन्फ्यूजनात्मक हो रखा है। इतने साल हमें बताया गया कि भारत को 15 अगस्त 1947 में आजादी मिली। बीच में शोर मचा कि इमर्जेंसी हटी और आजादी आई। पर बाद में ये बात भी आई-गई हो गई। फिर एक दिन कंगना जी ने एलान कर दिया कि आजादी तो 2014 में आई थी, मोदी जी के गद्दी पर आने के बाद। और अब भागवत जी कह रहे हैं कि आजादी तो पिछली जनवरी में आई थी, मोदी जी के राम मंदिर का उद्घाटन करने के बाद। चलो पहले वाली नेहरू-गांधी वाली आजादी तो मान लिया कि नकली थी, उसकी लड़ाई भी नकली थी। पर 2014 से 2024 के बीच में जो था वह क्या था? आजादी या गुलामी। अगर आजादी 2024 की जनवरी में ही आई थी, तब तो कन्हैया, उमर खालिद वगैरह ही सही थे। जब आजादी आई ही नहीं थी, तो आजादी लेकर रहने के नारे गलत कैसे हो सकते थे। वो बेचारे तो उस आजादी के लिए लड़ रहे थे, जिसके लिए भागवत जी इंतजार कर रहे थे। वैसे इसमें इतने ज्यादा कन्फ्यूजन वाली बात भी नहीं है। 2014 में आजादी मिली हो तो और 2024 में मिली हो तो, इस माने में एक ही बात है कि इससे नेहरू जी का पत्ता तो कट जाएगा; स्वतंत्र देश के प्रधानमंत्री का नंबर वन, मोदी जी के नाम पर लिख जाएगा। रही बात कई स्वतंत्रता दिवसों की तो स्वतंत्रता दिवस तो जितने ज्यादा हों उतना ही अच्छा। बाकी दिन तो मोदी जी का डंडा चलेगा। वैसे भी जब हमारे यहां अलग-अलग राष्ट्रगान और राष्ट्र गीत हो सकते हैं, जब इंडिया और भारत दो-दो नाम हो सकते हैं, तो क्या दो स्वतंत्रता दिवस नहीं हो सकते हैं--असली और गैर-असली।

इनके मताधिकार के मायने

जारवा आदिवासी

प्रमोद भार्गव

आदिम जनजाति जारवा अंडमान-द्वीप समूह की एक प्रमुख जनजाति है। ये आज भी अर्ध-खानाबदोश आदिम जीवन-शैली जी रहे हैं। प्राकृतिक रूप में उपलब्ध वन-संसाधन ही इनके आजीविका के प्रमुख साधन हैं। स्थानीय प्रकृति और पर्यावरण से जुड़े रहकर ये अपनी जीवन-शैली में मस्त हैं। जारवा लोग बाहरी संपर्क से अलग-थलग हैं। इसी कारण उनकी अनूठी सांस्कृतिक परंपरा और भाषा-बोली संरक्षित हैं। वे दक्षिणी और मध्य अंडमान द्वीप समूह के पश्चिमी समुद्री तटों पर रहते है। स्थानीय प्रशासन के तमाम प्रयासों के बाद अब इस जनजाति समूह को संवैधानिक लोकतांत्रिक धारा से जोड़े जाने की ऐतिहासिक पहल हुई है।

इस समुदाय के 19 सदस्यों के नाम मतदाता सूची में दर्ज करके, उन्हें मतदाता पहचान-पत्र दिए गए हैं। अंडमान द्वीप समूह के मुख्य सचिव चंद्रभूषण कुमार ने दक्षिण अंडमान जिले के जिरकाटांग स्थित बस्ती में पहुंचकर पहली बार मतदाता बने लोगों को पहचान-पत्र सौंपे। जारवा समुदाय की इन पहचान-पत्रों से भारतीय होने की नागरिकता सुनिश्चित हुई है। साथ ही यह उनकी निजता की रक्षा के लिए एक व्यापक उपाय भी है। इस कार्यवाही से उम्मीद जगी है कि भविष्य में इस द्वीप समूह के सभी लोग भारतीय नागरिक के रूप में मतदाता बना दिए जाएंगे। वरना एक समय इस द्वीप समूह में प्रवेश पाना मौत को आमंत्रण देना था।

इस कार्यवाही को पूरी करने में अंडमान आदिम जनजाति विकास समिति की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही, जिसने सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त और सम्मानजनक तरीके से उनकी भाषा में चुनावी प्रक्रिया के बारे में जारवा समुदाय से संवाद करके उनके बीच जागरूकता पैदा करके इस प्रक्रिया को सुगम बनाया। जारवा समुदाय अंडमान द्वीप समूह के दक्षिण और मध्य तथा पश्चिमी समुद्री तटों पर रहते हैं। यह पूरा क्षेत्र जैव विविधता से समृद्ध है। इसे ही इस समुदाय ने अपने पारंपरिक जीवनशैली के अनुरूप ढाल लिया है। जारवा समुदाय के साथ पहला उल्लेखनीय दोस्ताना संबंध अप्रैल 1996 में हुआ था, जो बाहरी दुनिया के साथ उनके संपर्क में एक अहम मोड़ साबित हुआ। इस संबंध के लिए शायद प्रकृति ने ही घटनाक्रम रचा था। दरअसल, जारवा जनजाति के 21 वर्षीय एनमेई को अपने बाएं टखने में गहरी चोट आई थी। प्रशासन ने करुणा का परिचय देते हुए एनमेई का उदारतापूर्वक उपचार कराया और ठीक होने के बाद उन्हें सुरक्षित बस्ती में वापस भेज दिया। यहां से प्रशासन और समुदाय के बीच विश्वास का जो संवाद बना, उसने आज इस समुदाय के

लोगों के भारतीय नागरिक होने के पहचान के रूप में मतदाता पहचान-पत्र सौंपने का मार्ग प्रशस्त किया। अन्यथा जारवा समूह से जो भी कोई संपर्क करने की सोचता था, उसे हिंसक टकराव का सामना करना पड़ता रहा है। दरअसल, जो लोग स्वयं को सभ्य और आधुनिक समाज का हिस्सा मानते रहे हैं, वही लोग प्राकृतिक अवस्था में रह इन लोगों को इंसान मानने की बजाय लगभग जंगली जानवर ही मानते रहे हैं। आधुनिक कहे जाने वाले समाज की यह एक ऐसी विडंबना है, जो सभ्यता के दायरे में कतई नहीं आती।

अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में रह रहे लुप्तप्राय जारवा प्रजाति की महिलाओं को स्वादिष्ट भोजन का लालच देकर सैलानियों के सामने नचाने के कुछ साल पहले वीडियो-दृश्य ब्रिटिश अखबारों में सिलसिलेवार छपे थे। इन्हें शासन-प्रशासन के स्तर पर झुठलाने कवायद की गई थी, परंतु यह ठोस हकीकत थी। अभयारण्य में दुर्लभ वन्य जीवों को देखने की मंशा की तरह, दुर्लभ मानव प्रजातियों को भी देखने की इच्छा नव-धनाढ्यों और रसूखदारों में पनप रही है, और जिस सरकारी तंत्र को आदिवासियों की सुरक्षा के लिए तैनात किया गया था, वही इन्हें लालच देकर नचवाने का काम कर रहा था। इसी कुत्सित मानसिकता के चलते कुछ लोग जारवाओं को इंसानों की बजाए, मनोरंजक खिलौने भी मानते रहे हैं। आधुनिक विकास और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए वन कानून में लगातार हो रहे बदलावों के चलते अंडमान में ही नहीं देश भर की जनजातियों की संख्या लगातार घट रही हैं। आहार और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी जरूरतों की कमी होती जा रही है। इन्हीं वजहों के चलते अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में अलग-अलग दुर्गम टापुओं पर जंगलों में समूह बनाकर रहने वाली जनजातियों का अन्य समुदायों और प्रशासन से बहुत सीमित संपर्क है। यही वजह है कि इनकी संख्या घटकर महज 381 रह गई है।

एक अन्य टापू पर रहने वाले ग्रेट अंडमानी जनजाति के लोगों की आबादी केवल 97 के करीब है। इन लोगों में प्रतिरोधात्मक क्षमता इतनी कम होती है कि ये एक बार बीमार हुए तो इनका बचना नामुमकिन हो जाता है। हालांकि अब इनकी प्रतिरोधात्मक क्षमता बढ़ाने के लिए टीकाकरण करने और पौष्टिक खुराक देने के उपाय निरंतर किए जा रहे हैं। मतदान का अधिकार मिल जाने से तय है, यहां लोकतांत्रिक गतिविधियां भी कालांतर में बढ़ेंगी। करीब दो दशक पहले तक ये लोग पूरी तरह निर्वस्त्र रहते थे, लेकिन सरकारी कोशिशों और इनकी बोली के जानकार दुभाषियों के माध्यम से समझाइश देने पर इन्होंने थोड़े-बहुत कपड़े पहनने अथवा पत्ते लपेटने शुरू कर दिए हैं।

भारत की सांस्कृतिक विविधता अनूठी खूबसूरती है। यहां विभिन्न आदिवासी समुदायों को अपने पुरातन व सनातन परिवेश में रहने की स्वतंत्रता हासिल है। हमारे देश के सांस्कृतिक परिवेश में नग्नता कभी फूहड़ अश्लीलता का पर्याय नहीं रही। पाश्चात्य मूल्यों और भौतिकवादी आधुनिकता ने ही प्राकृतिक व स्वाभाविक नग्नता को दमित काम-वासना की पृष्ठभूमि में रेखांकित किया है। वरना हमारे यहां तो खजुराहो, कोणार्क और कामसूत्र जैसे नितांत व मौलिक रचनाधर्मिता से स्पष्ट होता है कि एक राष्ट्र के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य में हम कितनी व्यापक मानसिक दृष्टि से परिपक्व लोग थे। अब लोगों को जो मत का अधिकार मिला है, उसके तहत ये अन्य समुदायों में विलय होंगे और इनका आवागमन भी बढ़ेगा। इनकी प्रतिरोधात्मक क्षमता भी बढ़ेगी।

(लेख में विचार निजी हैं)

> भारत की सांस्कृतिक विविधता अनूठी खूबसूरती है। यहां विभिन्न आदिवासी समुदायों को अपने पुरातन व सनातन परिवेश में रहने की स्वतंत्रता हासिल है। हमारे देश के सांस्कृतिक परिवेश में नग्नता कभी फूहड़ अश्लीलता का पर्याय नहीं रही। पाश्चात्य मूल्यों और भौतिकवादी आधुनिकता ने ही प्राकृतिक व स्वाभाविक नग्नता को दमित काम-वासना की पृष्ठभूमि में रेखांकित किया है

दुनिया के 64 फीसद वाहन स्वामी ईवी अपनाने को तैयार

- भारत सहित दुनिया के विभिन्न हिस्सों में 10 में से छह से अधिक उपभोक्ता अपना अगला वाहन खरीदते समय इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) पर विचार करने को तैयार हैं
- सॉफ्टवेयर सेवा प्रदाता टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) द्वारा दुनिया के विभिन्न हिस्सों में मौजूद लोगों के बीच कराए गए एक अध्ययन का यह निष्कर्ष है
- अध्ययन के मुताबिक, ईवी वाहन निर्माताओं का कहना है कि उन्हें उन्नत बैटरी प्रौद्योगिकी, जटिल वाहन डिजाइन और उत्पादन से जुड़े अर्थशास्त्र जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है

स्रोत : मीडिया इनपुट्स)

अमेरिका, चीन और रूस के बाद भारत स्पेस डॉकिंग के मामले में विश्व में चौथा सबसे बड़ा देश बन गया है। मोदी से घृणा करने वाले लोग भारत के लिए जो कुछ भी अच्छा है उसे बिसराने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ते। सही मायनों में ये लोग ही गोदी मीडिया हैं।

मिन्हाज मर्चेंट, लेखक/पत्रकार
@MinhazMerchant

स्वच्छ गंगा और महिला सशक्तिकरण

महाकुंभ

मो. नजीब अहसन

21वीं सदी का यह दौर मानवता के इतिहास में एक ऐसा समय है, जब दुनिया भर में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन तेजी से हो रहे हैं। ऐसे में जब भी बात महिलाओं के अधिकारों और उनके सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक सशक्तिकरण की होती है, तो यह एक ऐसे संघर्ष की कहानी बयां करता है, जो सदियों से चली आ रही है। विश्व के कई देशों में आज भी महिलाएं समानता, स्वतंत्रता और अपने मौलिक अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ रही हैं। अलबत्ता इस वैश्विक संघर्ष के बीच भारत ने महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में नई इबारतें लिखी हैं और अनोखी पहचान बनाई है। इस लिहाज से भारत की चर्चा का खास महत्त्व है। महिलाओं की सहभागिता और योगदान ने यहां के पारंपरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक ताने-बाने को मजबूती दी है।

मौजूदा संदर्भ में बात करें तो भारत का परिदृश्य बदल चुका है। यह बदलाव केवल महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं, बल्कि समाज और देश की प्रगति के लिए एक नये युग की शुरुआत का संकेत है। भारत में महिला सशक्तिकरण की कहानी केवल संघर्ष और चुनौतियों तक सीमित नहीं है। यह वह समय है, जब भारतीय महिलाएं परंपरा और आधुनिकता के संतुलन को साधते हुए अपनी पहचान को नये सिरे से गढ़ रही हैं। इस दौर में जब वैश्विक मंच पर महिला सशक्तिकरण की बातें हो रही हैं, भारत ने न केवल अपनी महिलाओं को आगे बढ़ने का अवसर दिया है, बल्कि यह दिखाया है कि बदलाव संभव है। एक ऐसा ही उदाहरण है, सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) और राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) का ऑल-विमेन राफ्टिंग अभियान, जो एक प्रेरणादायक बदलाव का प्रतीक बनकर उभरा है। यह ऐतिहासिक पहल पुरुषों के वर्चस्व वाले क्षेत्र में महिलाओं की साहसिक दस्तक है, जो न केवल परंपराओं को चुनौती देती है, बल्कि नये आयाम भी गढ़ती है। उत्तराखंड के गंगोत्री से पश्चिम बंगाल के गंगा सागर तक 2,500 किलोमीटर की यात्रा न केवल साहसिक है, बल्कि प्रेरणादायक भी। यह अभियान उन्हें साहस, सामूहिकता और नेतृत्व की नई ऊंचाइयों तक पहुंचा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य सिर्फ गंगा के प्रवाह को संरक्षित

करना ही नहीं, बल्कि लोगों के दिलों में उसकी पवित्रता और महत्ता की लौ जलाना भी है। गंगा, जो भारतीय जनमानस के लिए मात्र एक जलधारा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्ता का भी प्रतीक है। पर बीते दशकों में बढ़ते प्रदूषण और अतिक्रमण के कारण यह जीवनरेखा काफी चुनौतियों का सामना कर रही है। गंगा के किनारे रहने वाले हर नागरिक को यह समझने की आवश्यकता है कि उनकी छोटी-छोटी आदतें, जैसे प्लास्टिक का उपयोग बंद करना, गंगा के तटों की सफाई बनाए रखना और जल संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, गंगा के संरक्षण में बड़ा योगदान दे सकती हैं। गंगा और उसकी सहायक नदियों के कायाकल्प के इस संकल्प में महिलाओं की भागीदारी समाज को यह संदेश देती है कि नदी संरक्षण सिर्फ एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक पवित्र आंदोलन है। गंगा का संरक्षण केवल सरकारी योजनाओं और नीतियों पर निर्भर नहीं हो सकता। यह एक सामूहिक जिम्मेदारी है, जिसमें समाज के हर वर्ग को अपनी भूमिका निभानी होगी। इस अभियान के दौरान महिलाओं ने गंगा के किनारे बसे समुदायों के साथ बातचीत की और उन्हें जल संरक्षण के महत्व से अवगत कराया। वेटलैंड्स का दौरा, घाटों पर संवाद, और जल संरक्षण पर आधारित क्विज़ जैसे कार्यक्रमों ने गंगा संरक्षण की दिशा में सामूहिक चेतना को बढ़ावा दिया। अभियान इस बात को भी रेखांकित करता है कि गंगा का संरक्षण केवल पर्यावरणीय सुधार नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक स्थिरता के लिए भी आवश्यक है। जब हम गंगा को साफ रखने की बात करते है, तो इसका अर्थ केवल प्रदूषण को रोकना नहीं, बल्कि समग्र पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखना भी है।

यह अभियान इस दिशा में एक प्रेरणादायक कदम है। इस अभियान ने महिलाओं को एक नई पहचान दी है। इसके माध्यम से यह संदेश स्पष्ट है कि महिलाएं समाज में किसी भी भूमिका को निभाने में सक्षम हैं, चाहे वह नेतृत्व हो, संरक्षण हो या समाज में बदलाव लाने की जिम्मेदारी। महिला सशक्तिकरण केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है; यह समाज की प्रगति और स्थिरता का आधार भी है। अपनी रोमांचक यात्रा के दौरान, राफ्टिंग दल ने पांच राज्यों के विभिन्न जिलों में स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर नदियों के किनारों को संवारने का संकल्प लिया। इस अभियान ने स्वच्छता का ऐसा महोत्सव रचा, जिसमें हर आयु और वर्ग के लोग प्रेरणा और उत्साह से भर उठे। यह यात्रा सिर्फ रोमांच और चुनौतियों से भरा एक अनुभव नही थी, बल्कि नदियों के प्रति सम्मान और समुदायों के बीच एकता की एक नई धारा प्रवाहित करने का प्रयास है।

प्रेम | संत राजिन्दर

प्रेम क्या है? यह समझना अधिकतर लोगों की सबसे बड़ी दुविधा होती है। यह एक ऐसा प्रश्न है जिसके समाधान की खोज प्राचीन काल से चली आ रही है। प्रेम के बारे में लाखों कविताएं व पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं और हर युग में आए दार्शनिकों ने भी प्रेम के स्वरूप की व्याख्या करने के अनेक प्रयत्न किए हैं। 'प्रेम' शब्द का प्रयोग हममें से अधिक लोग भिन्न-भिन्न संबंधों के प्रति अपनी भावनाओं को प्रकट करने के लिए करते हैं। जैसे माता-पिता और बच्चे में प्यार होता है तो भाई-बहन और रिश्तेदारों का भी आपस में प्यार होता है। मित्रों का आपस में प्रेम होता है। इसके अलावा हमें अपने देश के प्रति भी प्रेम होता है तथा बहुत सी बार हमें अपनी संपत्ति के साथ भी लगाव होता है। ऐसा पाया जाता है कि कुछ देशों में लोगों को अपने पालतू जानवरों से भी प्रेम होता है। आमतौर पर जब प्रेम के बारे में विचार किया जाता है तो हम स्त्री-पुरुष के आपसी प्रेम के बारे में सोचते हैं। इसके अलावा हम कई बार सारी मानवजाति व समस्त सृष्टि के प्रेम के बारे में भी बात करते हैं। हर इंसानी रिश्ते या निर्जीव वस्तुओं जैसे कि अपने घर या अपनी निजी वस्तुओं के प्रति भी प्रेम का अनुभव भिन्न-भिन्न होता है, परंतु प्रेम के हर रूप में कुछ-न-कुछ गुण एक जैसे होते हैं। जैसे कि इस संसार की किसी वस्तु के प्रति प्रेम के मामले में उस वस्तु से मोह होता है। जिसे हम प्रेम करते हैं उसकी हमें बहुत आवश्यकता होती है। उसके लिए हम अपने दिल में गहरा लगाव रखते हैं और हमें यह डर लगा रहता है कि कहीं वह वस्तु हमसे खो न जाए। चाहे प्रेम अपने परिवार के प्रति हो या मित्रों के प्रति, चाहे अपने देश के प्रति, उसमें प्रेम के ये गुण हमेशा मौजूद रहते हैं। जब हम उनके साथ हों जिन्हें हम प्यार करते हैं तो हम प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। हम उनके साथ शांति, एकाग्रता, संतुष्टि और पूर्णता की भावना महसूस करते हैं। संत-महापुरुष हमें समझाते हैं कि इस दुनिया का बाहरी प्रेम केवल कुछ समय के लिए ही रहता है। इसके विपरीत यदि हम सदा-सदा का प्रेम पाना चाहते हैं तो वह हमें केवल प्रभु द्वारा ही मिल सकता है। प्रभु के प्रति प्रेम को अनुभव करने के लिए हमें संपूर्ण सृष्टि के प्रति प्रेम को अपने अंदर जागृत करना होगा।

रीडर्स मेल

समझदारी दिखाए भारत

डोनाल्ड ट्रंप की नीतियां वैश्विक व्यापार संतुलन में बदलाव का संकेत है। अमेरिका में विनिर्माण बढ़ाने और आयात पर कर लगाने की उनकी घोषणा, भारत जैसे देशों के लिए चुनौतीपूर्ण है। हालांकि यह संकट अवसर भी बन सकता है यदि भारत अपनी नीतियों में समुचित सुधार करे। विदेशी निवेश में संभावित कमी से भारतीय मुद्रा पर दबाव बढ़ेगा, जिससे आयात महंगा हो सकता है, लेकिन यह स्थिति आत्मनिर्भरता की दिशा में बड़ा कदम हो सकती है। सरकार को चाहिए कि विदेशी माल पर आयात शुल्क बढ़ाकर घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहित करे। जैसे, इलेक्ट्रिक वाहनों और स्वदेशी तिलहन उत्पादन को बढ़ावा देना न केवल तेल आयात पर निर्भरता घटाएगा, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ करेगा। यदि सही नीतिगत फैसले लिए जाएं, तो भारत इस संकट को अपनी आर्थिक मजबूती में बदल सकता है।

अवनीश कुमार गुप्ता, आजमगढ़

युद्धविराम सही कदम

यह खबर पूरी दुनिया के लोगों को राहत पहुंचाने वाली है कि हमास और इस्राइल के बीच युद्धविराम के समझौते को लेकर अमल शुरू हो गया है। इस्राइल और हमास के बीच जारी इस विनाशकारी युद्ध में अब तक हजारों नागरिक मारे गए हैं, सैकड़ों लोगों को बंधक बनाया गया और उन पर अत्याचार किए इसके अलावा मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक गाजा की नब्बे फीसद आबादी विस्थापित हो चुकी है। हमास और इस्राइल के बीच जंग छिड़ने से लेबनान, सीरिया, ईराक और यमन भी इसकी चपेट में आ चुके है। इस युद्ध को रोकने और सहमति से समझौते पर पहल करने में अमेरिका या अन्य जिस किसी भी मुल्क ने अपनी भूमिका निभाई है वो वाकई सराहनीय है। युद्ध विराम की खबर ना केवल हमास और इस्राइल के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लोगों के लिए नववर्ष में राहत पहुंचाने वाली है क्योंकि दुनिया में युद्ध कहीं भी हो इसके नकारात्मक प्रभाव किसी ना किसी रूप में पूरी दुनिया के लोगों को भोगने पड़ते हैं। बहरहाल, युद्धविराम पर दोनों पक्षों के सहमत होने से धीरे-धीरे ही सही परंतु शांति का मार्ग भी प्रशस्त होगा। युद्ध के बावजूद अंत में संवाद से ही समाधान निकलता है। उम्मीद है युद्धविराम के इस छोटे प्रयास से शांति का रास्ता निकलेगा।

हितेंद्र डेढ़ा, दिल्ली

इसरो की ऊंची छलांग

चंद्रमा और सूरज पर अपने सफल अभियान को अंजाम देने के बाद इसरो ने पहली बार अंतरिक्ष में दो उपग्रहों की गुरुवार को सफल डॉकिंग कराकर एक और ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की जिसकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। कभी साइकिल तो कभी बैलगाड़ी पर लादकर अपने राकेट, मिसाइलों और उपग्रहों को प्रक्षेपण स्थल पर ले जाने वाले और टीन शेड में अपने उपग्रहों को तैयार करने वाले हमारे होनहार वैज्ञानिक ने आज इस उपलब्धि को हासिल कर देश को दुनिया में चौथे स्थान पर खड़ा कर दिया है। यह वैज्ञानिकों के परिश्रम का ही परिणाम है। इस उपलब्धि से चंद्रयान-4, भारत के महत्त्वाकांक्षी अंतरिक्ष स्टेशन के निर्माण और गगनयान अभियानों में सहायता मिलेगी। चंद्रमा पर मानव भेजने और वहां से मिट्टी के नमूने लाने हेतु यह अभियान मील का पत्थर साबित होगा।

संजय डागा, ई मेल से

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा
वर्ष-34, अंक 152

सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवीन हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित।
। समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्रा* ।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स - 23352370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750
आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

चिंतन

पुलिस जांच तंत्र में तत्काल सुधार जरूरी

पुलिस तंत्र को अपनी कार्यप्रणाली में सतत सुधार करते रहना चाहिए। कानूनों के क्रियान्वयन में जहां उसे संवेदनशील बनने की जरूरत है, वहीं जांच में अत्याधुनिक तकनीकों व तरीकों को अपनाने की आवश्यकता है। पूर्वधारणा के आधार पर या शिकायतकर्ता के आरोपों की गहन जांच किए बिना अपराध के लिए किसी को आरोपी बना देने की मानसिकता से बाहर निकलने की जरूरत है। सुप्रीम कोर्ट ने एक बार फिर से पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाया है। शीर्ष अदालत ने पुलिस को संवेदनशील बनने की नसीहत के साथ चेतावनी दी है कि किसी व्यक्ति के खिलाफ भारतीय दंड संहिता के तहत आत्महत्या के लिए उकसाने की धारा केवल मृतक के व्यथित परिवार के सदस्यों की भावनाओं को शांत करने के लिए यांत्रिक ढंग से नहीं लगाई जानी चाहिए। न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन की पीठ ने एक मामले की सुनवाई के दौरान कहा है आरोपियों को जांच प्रक्रिया के दौरान ऐसी स्थिति के दुरुपयोग का शिकार न होना पड़े, जिसे साबित नहीं किया जा सके। पीठ ने दो टूक कहा, 'ऐसा लगता है कि पुलिस भादंसं की धारा 306 का लापरवाही से और बहुत आसानी से इस्तेमाल करती है। वैसे जहां मूल आधार हो, उन वास्तविक मामलों में शामिल व्यक्तियों को बख्शा नहीं जाना चाहिए।' दरअसल, सुप्रीम कोर्ट आत्महत्या के लिए उकसाने के एक मामले की सुनवाई कर रहा था, इस दौरान कोर्ट ने पुलिस की जांच प्रणाली में खामियों को उजागर किया है। शीर्ष अदालत ने कहा कि अधीनस्थ अदालत को भी 'बहुत सावधानी और सतर्कता' बरतनी चाहिए तथा भले ही किसी मामले में जांच एजेंसियां धारा 306 के तत्वों के प्रति पूरी तरह से उपेक्षा दिखा रही हों, अधीनस्थ अदालत को यांत्रिक रूप से आरोप तय करके 'सुरक्षित खेल खेलने की प्रवृत्ति' नहीं अपनानी चाहिए। शीर्ष अदालत ने कहा कि किसी मामले को भादंसं की धारा 306 के दायरे में लाने के लिए आत्महत्या का मामला होना चाहिए और यह भी तथ्य होना चाहिए कि उक्त अपराध के लिए कथित तौर पर उकसाने वाले व्यक्ति ने आत्महत्या के लिए उकसाने या आत्महत्या के लिए मजबूर करने के लिए कोई निश्चित कार्य करके सक्रिय भूमिका निभाई होगी। यह तो बानगी है। अनेक ऐसे मामले आए दिन प्रकाश में आते रहते हैं, जिसमें पुलिस कानून के गलत इस्तेमाल करते हुए दिखती है। कभी जांच की जटिलता से बचने के लिए, कभी दबाव में, कभी आपसी खुंदक में, कभी अपनी वाहवाही के लिए पुलिस आरोपों की जांच में या तो शीघ्रता बरतती है, या पूर्वधारणा का सहारा लेती है या फिर आरोपित को ही दोषी मानकर कार्रवाई करने लगती है। इसीलिए देश में पुलिस सुधार को लेकर मांग उठती रही है। पुलिस सुधार को लेकर सर्वोच्च न्यायालय निर्देश दे चुका है। शीर्ष अदालत ने स्वायत्तता, जवाबदेही और लोकोन्मुखता के बिंदुओं पर पुलिस तंत्र में सुधार की बात कही थी। पुलिस की स्वायत्तता को मजबूत कर उसे बाह्य दबावों से मुक्त रखने के लिए सर्वोच्च न्यायालय ने निर्देश दिया था कि डीजीपी, आईजी, एसपी, एसएचओ की दो वर्ष की निश्चित तैनाती मिलनी चाहिए। राज्यों को नए सिरे से लोकोन्मुख पुलिस अधिनियम बनाने का निर्देश दिया था। पुलिस सुधारों को लोकतंत्र व सामाजिक कल्याण से जोड़कर ही इनके वास्तविक उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है। मौजूदा सरकार को पुलिस सुधार को लागू करने की तरफ आगे बढ़ना चाहिए।

सामरिक शक्ति
योगेश कुमार गोयल

समुद्र में दुश्मनों के लिए अदृश्य खतरा है आईएनएस सूरत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 जनवरी को मुंबई के नौसेना डॉकयार्ड में जिन तीन युद्धपोतों को भारतीय नौसेना में कमीशन किया, उनमें सबसे महत्वपूर्ण है 'आईएनएस सूरत'। यह युद्धपोत न केवल भारत की समुद्री सुरक्षा को मजबूत करेगा बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत की शक्ति और सामरिक क्षमताओं को भी प्रदर्शित करेगा। इसकी उन्नत तकनीक, स्वदेशी निर्माण और तेज निर्माण प्रक्रिया इसे विशेष बनाते हैं। आईएनएस सूरत का निर्माण और संचालन भारतीय नौसेना के लिए एक ऐसा नया युग लेकर आया है, जो भविष्य में देश की रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक सिद्ध होगा। वास्तव में आईएनएस सूरत केवल एक युद्धपोत नहीं है बल्कि भारतीय नौसेना के भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक है, साथ ही भारत के आत्मनिर्भर रक्षा उद्योग और उन्नत प्रौद्योगिकी के समन्वय का प्रतीक भी है। इसके सफल संचालन से भारतीय नौसेना अन्य आधुनिक युद्धपोतों और प्रणालियों के विकास की ओर अग्रसर होगी। आईएनएस सूरत को पर्यावरणीय मानकों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है। इसमें इको-फ्रेंडली प्रौद्योगिकियों और ईंधन दक्षता को प्राथमिकता दी गई है। यह युद्धपोत न केवल ताकतवर है बल्कि समुद्री पर्यावरण के प्रति भी जिम्मेदार है। आईएनएस सूरत स्वदेशी रूप से निर्मित फ्रंटलाइन युद्धपोत और गाइडेड मिसाइल विध्वंसक जहाज है, जिसे अत्याधुनिक तकनीकों और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) से लैस किया गया है। इस युद्धपोत को इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि यह दुश्मन के रडार से बचकर उस पर सटीक हमला भी कर सके।

इसके उन्नत स्टील्थ फीचर्स और उन्नत रडार सिस्टम इसे समुद्र में एक अद्वितीय ताकत बनाते हैं। आईएनएस सूरत भारतीय नौसेना के विशाखापत्तनम श्रेणी के स्टील्थ गाइडेड मिसाइल विध्वंसक पोतों में चौथा और परियोजना-15बी के तहत निर्मित विध्वंसक पोतों की श्रृंखला का अंतिम पोत है। इस युद्धपोत का नाम गुजरात के सूरत शहर के नाम पर रखा गया है, जो अपने व्यापार और औद्योगिक समृद्धि के लिए प्रसिद्ध है। आईएनएस सूरत में सतह से हवा में मार करने वाले दो वर्टिकल लांचर हैं, जिनसे एक बार में 16 ब्रह्मोस मिसाइलें दागी जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त, इसमें रॉकेट लांचर और टॉरपीडो लांचर भी हैं, जो दुश्मन की पनडुब्बियों को नष्ट करने में सक्षम हैं। संयुक्त गैस और गैस प्रणोदन प्रणाली से संचालित यह युद्धपोत चार गैस टर्बाइनों से लैस है। समुद्री परीक्षणों के दौरान इसने 30 नॉट्स (लगभग 56 किलोमीटर प्रतिघंटा) की गति प्राप्त की। उन्नत सेंसर और रडार सिस्टम से लैस यह युद्धपोत किसी भी मौसम में, दिन और रात, दुश्मनों की गतिविधियों का पता लगाने में सक्षम है। इस पर चेतक, एडवांस्ड लाइट हेलीकॉप्टर (एएलएच), सी किंग और एमएच-60आर हेलीकॉप्टर संचालित किए जा सकते हैं। इसमें इंटीग्रेटेड ब्रिज सिस्टम और अत्याधुनिक नेविगेशन सिस्टम लगाया गया है, जो समुद्र में सटीक मार्गदर्शन सुनिश्चित करता है। आईएनएस सूरत का समुद्री परीक्षण 15 जून 2024 को शुरू हुआ था और 25 नवंबर 2024 को समाप्त हुआ। छह महीने से भी कम अवधि में इसने सभी परीक्षण पास कर लिए, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। परीक्षणों के दौरान इसने विभिन्न परिचालन स्थितियों में अपनी क्षमता और विश्वसनीयता को साबित किया। परीक्षणों के दौरान आईएनएस सूरत ने समुद्री सुरक्षा, दुश्मन पनडुब्बियों के खिलाफ ऑपरेशन और विभिन्न प्रकार की मिसाइलों तथा हथियारों की लॉचिंग का सफल प्रदर्शन किया। इसमें 30 नॉट्स की गति प्राप्त करने और अत्यंत चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में संचालन क्षमता का परीक्षण किया गया। यह युद्धपोत सतह से सतह पर और सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों से दुश्मन के ठिकानों पर सटीक हमला कर सकता है। सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें इसे दुश्मन के विमानों और ड्रोन के खिलाफ भी सक्षम बनाती हैं। आईएनएस सूरत भारतीय नौसेना के लिए एक अभूतपूर्व उपलब्धि और 'मेक इन इंडिया' अभियान का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह भारत की समुद्री शक्ति को नई ऊंचाइयों पर ले जाने वाला एक ऐसा अत्याधुनिक युद्धपोत है, जो समुद्र में दुश्मनों के लिए एक अदृश्य खतरा है। यह भारत के समुद्री क्षेत्र में सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। भारतीय महासागरीय क्षेत्र में चीन और अन्य देशों की बढ़ती गतिविधियों के बीच आईएनएस सूरत का निर्माण भारत की रणनीतिक जरूरतों को पूरा करता है। कुल मिलाकर देखा जाए तो आईएनएस सूरत भारतीय नौसेना के लिए सामरिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

(लेखक सामरिक मामलों के विश्लेषक हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

निवेश
डॉ. जयंतीलाल भंडारी

प्रवासी भारतीयों से सहयोग की अपेक्षा

भारत ने 2047 तक विकसित देश बनने का जो लक्ष्य रखा है, उस लक्ष्य को पाने के लिए प्रवासी भारतीयों से नए सहयोग की अपेक्षा है। अपेक्षा है कि प्रवासी भारत की विभिन्न परियोजनाओं में स्वयं निवेश करें और अपने विदेशी मित्रों को भी निवेश के लिए प्रेरित करें। उल्लेखनीय है कि 18वें प्रवासी भारतीय सम्मेलन के बाद प्रवासी भारत के विकास में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) बढ़ाने के लिए प्रेरित हुए हैं। देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का प्रवाह अप्रैल 2000 से सितंबर 2024 तक 1000 अरब डॉलर को पार कर गया है। खासतौर से चालू वित्त वर्ष 2024-25 में अप्रैल से सितंबर 2024 के दौरान 42.1 अरब डॉलर का विदेशी निवेश आया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 9 जनवरी को ओडिशा के भुवनेश्वर में 18वें प्रवासी भारतीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि इस समय जहां भारत के प्रवासी भारत के विकास में बड़ा योगदान दे रहे हैं, वहीं भारत के टैलेंट का डंका पूरी दुनिया में बज रहा है। हमारे प्रोफेशनल दुनिया की बड़ी कंपनियों के जरिए ग्लोबल में अपना अभूतपूर्व योगदान रहे हैं। वस्तुतः विदेशों में भारत के प्रवासी भारत के राजदूत हैं और अपने-अपने देशों में प्रभाव रखते हैं। ऐसे में अब भारत ने 2047 तक विकसित देश बनने का जो लक्ष्य रखा है, उस लक्ष्य को पाने के लिए प्रवासी भारतीयों से नए सहयोग की अपेक्षा है। अपेक्षा है कि प्रवासी भारत की विभिन्न परियोजनाओं में स्वयं निवेश करें और अपने विदेशी मित्रों को भी निवेश के लिए प्रेरित करें। उल्लेखनीय है कि 18वें प्रवासी भारतीय सम्मेलन के बाद प्रवासी भारत के विकास में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) बढ़ाने के लिए प्रेरित हुए हैं।

इस सम्मेलन में शामिल कई प्रवासी उद्यमी और कारोबारी यह कहते हुए दिखाई दिए कि नए वर्ष 2025 में भारतीय प्रवासियों से एफडीआई से संबंधित उजली संभावनाओं को मुट्ठी में लेने के लिए यह जरूरी होगा कि भारत विदेशी निवेश की सीमा बढ़ाने, नियामक बाधाओं को हटाने, बुनियादी ढांचे के विकास, व्यापार-कारोबार में बेहतरी, निवेश की क्षेत्रीय सीमाओं को उदार बनाने, नियामक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने, नौकरशाही संबंधी बाधाओं को कम करने और कॉरपोरेट को उनके विवादों को सुलझाने में मदद करने के लिए न्यायिक परिवेश बेहतर बनाने की डगर पर आगे बढ़े। गौरतलब है कि प्रवासी भारतीयों ने वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के द्वारा जारी रिपोर्ट पर भी विशेष रूप से ध्यान दिया, जिसके मुताबिक देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का प्रवाह अप्रैल 2000 से सितंबर 2024 तक 1000 अरब डॉलर को पार कर गया है। खासतौर से चालू वित्त वर्ष 2024-25 में अप्रैल से सितंबर 2024 के दौरान 42.1 अरब डॉलर का विदेशी निवेश आया है। यह निवेश 60 सेक्टर, 31 राज्य और केंद्र शासित क्षेत्रों में रहा है तथा यह एफडीआई का यह अब तक का रिकॉर्ड प्रवाह है। खास बात यह भी है कि वर्ष 2014 के बाद से अब तक पिछले 10 वर्षों में 667.4 अरब डॉलर का एफडीआई आया है। भारत के आर्थिक विकास की यात्रा में एफडीआई का यह विशाल आकार एक बड़ी उपलब्धि है। यह वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में भारत के बढ़ते प्रभाव को भी दिखाता है। यदि हम भारत में एफडीआई के स्रोत देशों की ओर देखें तो पाते हैं कि भारत में एफडीआई का सबसे बड़ा स्रोत मॉरीशस रहा है। मॉरीशस ने कुल विदेशी निवेश में 25 प्रतिशत का योगदान दिया है। सिंगापुर 24 प्रतिशत एफडीआई के साथ दूसरे स्थान पर है। अमेरिका 10 प्रतिशत निवेश के साथ तीसरे स्थान है। इसके अलावा बड़े निवेशक देशों में नीदरलैंड्स , जापान और ब्रिटेन शामिल हैं। भारत में जिन क्षेत्रों में विदेशी निवेश आकर्षित हुआ है, उनमें आईटी, फाइनेंशियल सर्विसेज, टेलीकम्युनिकेशंस, ट्रेडिंग, इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कंसल्टेंसी सहित सर्विस सेक्टर प्रमुख सेक्टर हैं। निःसंदेह देश को विदेशी निवेश का पसंदीदा देश बनाने में तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था की अहम भूमिका है। पिछले वित्त वर्ष 2023-24 में देश की विकास दर अनुमानों से अधिक

8.2 फीसदी रही है और इस चालू वित्त वर्ष 2024-25 में भी यह करीब 7 फीसदी रह सकती है। भारत में तेजी से विदेशी निवेश आकर्षित होने के कई कारण हैं। भारत विश्व अर्थव्यवस्था में नई शक्ति प्राप्त कर रहा है। चार वैश्विक रूझान जनसांख्यिकी, डिजिटलीकरण, डीकार्बोनाइजेशन व डीग्लोबलाइजेशन न्यू इंडिया के पक्ष में हैं। भारत में मजबूत राजनीतिक नेतृत्व है। जिन सुधारों से विदेशी निवेशक आकर्षित हुए हैं, उनमें मेक इन इंडिया पहल, आर्थिक उदार नीतियां, जीएसटी, प्रतिस्पर्धी श्रमिक लागत और रणनीतिक प्रोत्साहन, कई सेक्टर में 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति, स्टार्टअप फंडिंग के लिए एंजेल टैक्स खत्म होना, विदेशी कंपनियों के लिए कारपोरेट टैक्स में कमी प्रमुख हैं। देश में प्रतिभाशाली नई पीढ़ी की कौशल दक्षता, आउटसोर्सिंग और देश में बढ़ते हुए मध्यम वर्ग की चमकीली क्रयशक्ति के कारण विदेशी निवेश भारत की ओर तेजी से बढ़ने लगा है। कानून के कई प्रावधानों को अपराध की श्रेणी से बाहर करने और एफडीआई के लिए नए रास्ते जैसे अभूतपूर्व कदमों से देश की ओर विदेशी निवेश का प्रवाह तेजी से बढ़ते हुए दिखाई दे रहा है। इसमें कोई दो मत नहीं है कि प्रवासी भारतीय इस बात से वाकिफ हुए हैं कि वैश्विक स्तर पर सुस्त बाजारों और चीन की आर्थिक रफ्तार सुस्त होने के बीच भारत ने विदेशी निवेश प्राप्त करने का अब तक एक शानदार मुकाम हासिल किया है। विनिर्माता और निवेशक चीन का विकल्प तलाश रहे हैं और इस समय एशिया में अधिकांश निवेशकों को भारत से बेहतर कोई नहीं दिख रहा है। देश की अर्थव्यवस्था की चाल में लगातार सुधार और विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफपीआई) से अच्छा निवेश प्राप्त होने की बदौलत भारतीय शेयरों में तेजी दर्ज की जा रही है। विदेशी निवेश की बदौलत भारत विश्व में नई परियोजनाओं की घोषणा करने वाला तीसरा देश बन गया है और अंतरराष्ट्रीय परियोजना वित्त सौदों में दूसरा सबसे बड़ा देश बन गया है। निश्चित रूप से देश का बढ़ता मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर देश में एफडीआई की बड़ी ताकत बना है। मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में भारत 456 अरब डॉलर विनिर्माण मूल्य के साथ दुनिया में पांचवें स्थान पर है तथा नया विश्व मैन्युफैक्चरिंग हब बनने की ओर अग्रसर है। भारत के मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को जिस तरह सुविधाओं के साथ तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है, उससे दुनिया भर के निवेशक भारत आने के लिए उत्सुक हैं।

इस समय भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया की सबसे बड़ी पांचवीं अर्थव्यवस्था है। अब इसे तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने और भारत को विकसित देश बनाने की डगर पर आगे बढ़ाने के लिए उद्योगपतियों द्वारा अहम भूमिका निभाई जा रही हैं। हम उम्मीद करें कि एफडीआई के लिए भारत को पसंदीदा देश बनाए जाने की बहुआयामी संभावनाओं को साकार करने के लिए सरकार और अधिक प्रयास करेगी। नए वर्ष 2025 में भारत की विशाल कौशल प्रशिक्षित युवा आबादी नवाचार, तकनीकी और डिजिटल नवोन्मेषों के साथ भारत को दुनिया के विदेशी निवेशकों की नजरों में और अधिक पसंदीदा देश बनाने की डगर पर तेजी से आगे कदम बढ़ाएगी। वर्ष 2025 में प्रवासी भारतीयों और उनके विदेशी मित्रों से अधिक एफडीआई प्राप्त होने, भारत की नई लॉजिस्टिक नीति और गति शक्ति योजना के कारगर कार्यान्वयन, नीतिगत सुधारों, उत्पादों के कारोबार के लिए सिंगल विंडो मंजूरी, इन्फ्रास्ट्रक्चर, श्रमिकों के नए दौर के अनुरूप शिक्षण प्रशिक्षण के साथ-साथ विभिन्न आर्थिक और वित्तीय सुधारों से भारत दुनिया के पहले पांच सबसे पसंदीदा एफडीआई वाले देशों के ऊंचे क्रम पर रेखांकित होते हुए दिखाई देगा। इससे देश को 2047 तक विकसित देश बनाने की डगर पर आगे बढ़ने में भी मदद मिलेगी।

(लेखक ख्यात अर्थशास्त्री हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)
लेख पर अपनी प्रतिक्रिया edit@haribhoomi.com पर दे सकते हैं।

शरणागति के संत 'गोस्वामी तुलसीदास'

संकलित
दर्शन

भगवान शंकर जी ने भी विष पिया और गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी। दोनों ने समाज को रामकथामृत देकर धन्य कर दिया। संसार में और समुद्र में अमृत-मंथन करने पर विष अवश्य निकलेगा, पर उसमें राम को जोड़ दिया तो वह विष भी अमृत हो जाएगा। यही तुलसीदास जी ने किया :

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई, गोपद सिंधु अनल सित लाई।
गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही, राम कृपा करि चितवा जाही।।

राम नाम के प्रति गोस्वामी जी की आस्था तो सावन मास के अंधे की तरह थी, जिन्हें राम प्रेम में सब हरा ही हरा दिखाई देता था। राम की कृपा के प्रति गोस्वामी तुलसीदास जी की यह जो दीनता और शरणागति है, यही उनका चरम पुरुषार्थ है। कृपा के मूल में पुरुषार्थ नहीं होता है, अपितु पुरुषार्थ के मूल में कृपा होती है। रामचरितमानस कृपासाध्य ग्रंथ है, साधन साध्य नहीं। कर्म, उपासना, साधन, अनुष्ठानादि सब ठीक हैं, पर यह सब पाने के साधन हैं, किंतु जिसके जीवन में प्राप्तव्य ही कृपा से प्राप्त हुआ हो, वह क्या करे? रामचरितमानस में पुरुषार्थ के चरम आदर्श श्री लक्ष्मण जी और कृपा के चरम आदर्श श्री भरत जी दोनों के आदर्श और सर्वस्व श्रीराम हैं। इसका तात्पर्य यह है कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने वाल्मीकि जी, व्यास जी और जितने भी श्रेष्ठतम पुराणकार हुए सबकी वंदना की है, पर उन्होंने अपने ग्रंथ में न तो इतिहास को उठाया, न किसी ग्रंथ से कुछ लिया।

अर्जुन को अपनी विद्या पर था घमंड, शिवजी ने तोड़ा था

संकलित
प्रेरणा

महाभारत का प्रसंग है। कोरव और पांडवों का युद्ध तय हो गया था। दोनों ही पक्ष युद्ध की तैयारियां कर रहे थे। उस समय अर्जुन ने एक पर्वत पर देवराज इंद्र से दिव्यास्त्र पाने के लिए तप किया। देवराज इंद्र प्रकट हुए और उन्होंने कहा कि मुझसे दिव्यास्त्र लेने से पहले तुम्हें शिव जी को प्रसन्न करना होगा। इंद्र देव की बात मानकर अर्जुन ने शिव जी को प्रसन्न करने तप शुरू कर दिया। जिस जगह अर्जुन तप कर रहे थे, वहां एक दिन एक जंगली सूअर आ गया। सूअर एक मायावी दैत्य था। अर्जुन ने जैसे ही जंगली सूअर को देखा, उन्होंने अपने धनुष पर बाण चढ़ा लिया। तभी वहां किरात वनवासी पहुंच गया। किरात वनवासी कोई और नहीं, बल्कि शिवजी ही थे, जो वेष बदलकर आए थे। वनवासी ने अर्जुन को बाण चलाने से रोक दिया और कहा कि ये मेरा शिकार है। ये बात सुनने के बाद भी अर्जुन ने तीर सूअर की ओर छोड़ दिया। वनवासी ने भी उसी समय बाण छोड़ दिया। अर्जुन और वनवासी के बाण एक साथ उस सूअर को लगे। सूअर तो मर गया, लेकिन इन दोनों के बीच विवाद होने लगा। ये विवाद युद्ध तक पहुंच गया। युद्ध के बीच में वनवासी का एक बाण अर्जुन को लग गया। इसके बाद अर्जुन ने कुछ देर के लिए युद्ध रोका और मिट्टी के एक शिवलिंग की पूजा की। पूजा में जो माला अर्जुन ने शिवलिंग पर चढ़ाई थी, वह उस वनवासी के गले में दिखाई देने लगी। ये देखकर अर्जुन समझ गए कि ये स्वयं शिव जी ही हैं।

अंतर्मन

आज की पाती

स्टार्टअप और कौशल विकास बेरोजगारी का हल

आज से लगभग आठ वर्ष पहले केंद्र सरकार ने स्टार्टअप योजना को अमल में लाया था। इस योजना का मुख्य उद्देश्य देश की आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ यानी उद्योगों को और मजबूत बनाना है। इससे रोजगार के अवसर भी बढ़ते हैं। इस योजना के तहत अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों के साथ-साथ महिला उद्यमियों को सब्सिडी भी मिलती है। सरकार इस योजना के अधीन उद्योगों को टैक्स में भी छूट देती है। हमारे देश में बेरोजगारी बहुत बड़ी समस्या है। देश के उद्योग जितने मजबूत होंगे उतने ही रोजगार उपलब्ध होंगे और देश की आर्थिक व्यवस्था मजबूत होगी।

- संदीप पटेल, धमतरी

ट्रेंड

'इमर्जेन्सी' के लिए बधाई

'इमर्जेन्सी' जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर फिल्म बनाने के लिए सांसद कंगना रनौत एवं इस फिल्म की पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई देता हूं। 'इमर्जेन्सी' के दौर की यादों को इस फिल्म के द्वारा पुनः जीवित करने का प्रयास सराहनीय है।
-देवेन्द्र फड़नवीस, सीएम, महाराष्ट्र

विरोधी भी तारीफ करते हैं

बीजेपी ने सरेआम ये स्वीकार किया कि दिल्ली में केजरीवाल की ढेरों कल्याणकारी योजनाएं चल रही हैं जिसका लाभ बीजेपी वालों के परिवारों को भी मिल रहा है। हमें राजनीति करनी नहीं आती, काम करना आता है। और काम ऐसा करते हैं कि हमारे विरोधी भी उसकी तारीफ करते हैं।
-अरविंद केजरीवाल, पूर्व सीएम, नई दिल्ली

सम्मानित महसूस किया

राष्ट्रपति से प्रतिष्ठित मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार पाकर मैं बहुत सम्मानित महसूस कर रही हूं। यह सम्मान मुझे और भी अधिक मेहनत करने और अपने देश को गौरवान्वित करने के लिए प्रेरित करता है। -मनु भाकर, ओलंपिक शूटर

इस पल को जाने मत दो

यदि आप यह व्यक्त नहीं करने जा रहे हैं कि आप आज वास्तव में कैसा महसूस कर रहे हैं, तो कभी कोई कल नहीं, कोई बीता हुआ कल नहीं. केवल कुछ ऐसा है जिसे हम 'अभी' कहते हैं इस पल। इसे जाने मत दो.।
-शेखर कपूर, फिल्मकार

करंट अफेयर

दिवंगत नवलनी के तीनों वकील जेल में डाले गए

रूस के दिवंगत विपक्षी नेता एलेक्सी नवलनी का प्रतिनिधित्व कर चुके तीन वकीलों को रूसी राष्ट्रपति कार्यालय क्रेमलिन की दमनात्मक कार्रवाई के तहत जेल में डाल दिया गया है। मॉस्को से करीब 100 किलोमीटर की दूरी पर स्थित पेतुस्की शहर की एक अदालत ने नवलनी के वकील रहे वादिम कोबजेव, इगोर सेरगुनिन और एलेक्सी लिपस्टर को साढ़े तीन से पांच साल तक की कैद की सजा सुनायी। उन्हें चरमपंथी संगठनों के साथ संबंध रखने के आरोपों में अक्टूबर 2023 को गिरफ्तार किया गया था। नवलनी के नेटवर्क को प्रशासन चरमपंथी गतिविधियां मानता था। इस मामले को व्यापक रूप से विपक्ष पर दबाव बढ़ाने के एक तरीके के रूप में देखा जा रहा है ताकि बचाव पक्ष के वकीलों को राजनीतिक मामले लेने से हतोत्साहित किया जा सके। नवलनी चरमपंथ सहित कई आपराधिक मामलों में 19 साल की जेल की सजा काट रहे थे। फरवरी 2023 में एक रूसी जेल में उनकी मृत्यु हो गई। स्वतंत्र रूसी अखबार 'नोवाया गजेटा' ने खबर दी है कि कोबजेव ने 10 जून को अदालत में अपने बयान में कहा, ''नवलनी के विचारों को अन्य लोगों तक पहुंचाने को लेकर हमपर मुकदमा चलाया जा रहा है।''

ऑफ बीट

ब्यूटी पार्लर में बाल धुलवाने से बीपीएसएस का खतरा

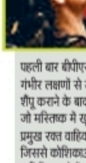

थकान मिटाने, 'फील गुड' करने और बालों की चमक बढ़ाने के लिए लोग अक्सर हेयर स्पा का सहारा लेते हैं। हालांकि, ब्यूटी पार्लर या सैलून में हेयर स्पा की प्रक्रिया के बाद बालों की धुलाई 'ब्यूटी पार्लर स्ट्रोक सिंड्रोम' (बीपीएसएस) नाम की एक गंभीर दुर्लभ स्वास्थ्य जटिलता का कारण बन सकती है। विभिन्न अध्ययनों से पता चला है कि ब्यूटी पार्लर या सैलून में बालों की धुलाई के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले 'बैकवॉश बेसिन' पर एक विशेष कोण पर सिर टिकाकर बैठने या लेटने से न सिर्फ गर्दन में दर्द और चोट की समस्या उभर सकती है, बल्कि कुछ मामलों में व्यक्ति के स्ट्रोक का भी शिकार होने का खतरा रहता है। अमेरिकी न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. माइकल वेन्ट्रॉब ने 1993 में पहली बार बीपीएसएस की पहचान की थी। उन्होंने पाया था कि स्ट्रोक से जुड़े गंभीर लक्षणों से जूझ रहे उनके कुछ मरीजों में ब्यूटी पार्लर या सैलून में बालों में शैंपू कराने के बाद ये समस्याएं उभरी थीं। स्ट्रोक एक तरह का मस्तिष्काघात है, जो मस्तिष्क में खून का प्रवाह घटने पर होता है। यह आमतौर पर मस्तिष्क में प्रमुख रक्त वाहिका में खून का थक्का जमने या उसके फटने के कारण होता है, जिससे कोशिकाओं को पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन, ग्लूकोज व अन्य पोषक तत्व नहीं मिल पाते हैं और वे दम तोड़ देती हैं।

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-42422221 पर या सीधे मेल से aapkepatra.haribhoomi@gmail.com पर भेज सकते हैं।

इमरान को सजा

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को 14 साल जेल की सजा सनसनीखेज और अफसोसजनक है। वैसे इमरान को मिली सजा कतई चौंकाती नहीं है, क्योंकि अपने पूर्व प्रधानमंत्रियों के प्रति द्वेष का भाव पाकिस्तान में नई बात नहीं है। वहां पहले एक प्रधानमंत्री को फांसी तक की सजा हो चुकी है, अतः इमरान खान के इस हश्र पर सिर्फ अफसोस जाहिर किया जा सकता है। वास्तव में, पाकिस्तानी नेताओं ने जो बोया है, वही उन्हें काटना पड़ रहा है। जो लोग आज पाकिस्तान की सत्ता में हैं, उन्हें भी अपने भविष्य को लेकर बहुत आश्वस्त नहीं रहना चाहिए। यह किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए एक दुखद परिपाटी है कि पूर्व में देश की कमान संभालने वाले आला नेताओं के साथ भी अन्याय होते लगता है। इसके पहले पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ को भी देश से भागना पड़ा था और नवाज शरीफ को लंबे समय तक विदेश में रहना पड़ा था। क्या यह इमरान खान की कमी या गलती थी कि उन्होंने देश में ही रहकर न्याय के लिए लड़ने का फैसला किया? अब इमरान खान के पास क्या विकल्प है? क्या ऊंची अदालतों से वह न्याय की उम्मीद कर सकते हैं?

खबरों के अनुसार, पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री को अल-कादिर ट्रस्ट से संबंधित भूमि भ्रष्टाचार के मामले में एक स्थानीय अदालत ने 14 साल जेल की सजा सुनाई है। उनकी पत्नी बुशरा बीबी को भी सात साल जेल की सजा हुई है। इमरान करीब डेढ़ वर्ष से रावलपिंडी के गैरीसन शहर की एक जेल में बंद हैं और जेल में ही उनके मामले की सुनवाई चल रही थी। जेल में सुनवाई से भी शंकाएं बढ़ती हैं। जेल में सुनवाई का एक बड़ा कारण यह था कि जेल के बाहर इमरान खान के समर्थकों की तादाद कम नहीं थी। ऊंची अदालत में इमरान खान के वकीलों को अपील करनी चाहिए। इमरान अगर निर्दोष हैं, तो उनके वकीलों को पुख्ता प्रमाणों के साथ अपील करनी चाहिए। वैसे, इमरान अगर दोषी हैं, तो यह पाकिस्तान के लिए बहुत शर्मनाक है। प्रधानमंत्री के रूप में भ्रष्टाचार या उसके आरोप पाकिस्तान में नए नहीं हैं। अगर इमरान सही सुनवाई के बाद दोषी करार दिए गए हैं, तो फिर पाकिस्तान ने इमरान खान के रूप में अपनी एक उम्मीद को गंवा दिया है। अब यदि उनके समर्थकों का बहुमत होगा, तो फिर उनके पास चुनाव में जीत ही एकमात्र विकल्प है। अगर इमरान की पार्टी चुनाव में जीत जाए, तो ही वह जेल से बाहर आने के बारे में सोच पाएंगे।

इमरान खान को एक और मामले में मिली 14 साल की सजा चौंकाती नहीं है, अपने पूर्व प्रधानमंत्रियों के प्रति द्वेष का भाव पाकिस्तानी तंत्र में नई बात नहीं है।

वैसे, इमरान खान को कोई पहली बार सजा नहीं सुनाई गई है। पहले भी उन्हें एकाधिक मामलों में सात साल से 14 साल की सजा सुनाई जा चुकी है। उनके खिलाफ भ्रष्टाचार, आधिकारिक रहस्य उजागर करने और विवाह कानूनों के उल्लंघन का भी मामला है। एक समय इमरान अपने देश के सफलतम आदर्श युवा थे। उनके नेतृत्व में ही पाकिस्तान ने एकदिवसीय विश्व कप क्रिकेट के फाइनल में एकमात्र जीत हासिल की थी। एक समय पाकिस्तान इमरान खान का दीवाना था। कहां गई वह दीवानगी? सवाल अभी बरकरार है, इमरान खान ने भ्रष्टाचार करके सब कुछ गंवा दिया है या फिर वह साजिशों के शिकार हुए हैं? वहां की सामंती संस्कृति में जो चरित्रगत कमजोरियां और दुश्मनी निभाने की जो कट्टर परिपाटी पल रही है, उसने पाकिस्तान की राजनीति ही नहीं, पाकिस्तान की समग्र व्यवस्था पर लगे सवालों का भी विस्तार किया है।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 18 जनवरी, 1950

आर्थिक मुक्ति की ओर

"यह कहना तो अब आम बात हो गई है कि आज की महत्वपूर्ण घटना एशिया का पुनरुद्धार है।" मूधारएलिया (लंका) में हो रहे अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के एशियाई सम्मेलन को संदेश देते हुए प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा है और बताया है कि "राजनीतिक स्वतन्त्रता की समस्या बहुत कुछ हल हो जाने के बाद अब हमें आर्थिक प्रगति की अधिक बुनियादी और पेचीदा समस्या का सामना करना है।" साथ ही उन्होंने फिलेडेलफिया-घोषणा की भी याद दिलाई है, जिसमें कहा गया था कि "गरीबी, फिर वह कहीं भी क्यों न हो, हर जगह की समृद्धि के लिए खतरनाक है।" और अपनी तरफ से यह भी जोड़ा है कि "वह (गरीबी) समृद्धि के लिए ही खतरा नहीं है, बल्कि आज की दुनिया की शांति के लिए भी खतरा है।" हमें हर्ष है कि इसी विचारधारा की छाया में लंका में एशियाई सम्मेलन की कार्रवाई हो रही है।

श्रम संगठन के एशियाई सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए लंका के गवर्नर-जनरल लार्ड सोलबरी ने विश्व के श्रमिक नेताओं, मालिकों तथा सरकारों से अनुरोध किया है कि वे एशिया में रहने वाले लाखों-करोड़ों प्राणियों की आर्थिक दासता को दूर करने के लिए प्रयत्नशील हों। "हमें आशा करनी चाहिए," उन्होंने कहा, "कि भावी इतिहासकार यह कह सकेंगे कि इस क्षेत्र में पिछली (उन्नीसवीं) सदी में राजनीतिक दासता का अन्त होने के बाद इस (बीसवीं) सदी में आर्थिक दासता का भी अन्त कर दिया गया।" अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की कार्यकारिणी के अध्यक्ष श्री ट्रेकलेट ने एशियाई क्षेत्र की आर्थिक कठिनाइयों का सिंहावलोकन करते हुए एशियाई लोगों के उद्धार- कार्य में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की सहायता का दृढ़निश्चय घोषित किया है। "जो मदद हम कर सकते हैं, वह करने के लिए हम दृढ़निश्चयी हैं," यह बताते हुए उन्होंने कहा है कि "मदद उस भावना से नहीं की जायेगी, जैसे अच्छी हालत वाले बुरी हालत वालों की दयाभाव से करते हैं, बल्कि दृढ़ता की भावना से की जायेगी, जैसे बराबरी वालों की या भाई-भाई की की जाती है।" सम्मेलन में भाग लेने वाले और आर्थिक दृष्टि से पिछड़े एशियाई देशों से उत्कृष्ट न्यूजीलैण्ड, कनाडा और ब्रिटेन ने भी अपने भरसक मदद करने का ऐलान किया है।

साल 1954 में प्रयागराज में कुम्भ मेला लगा था, भगदड़ मची थी। उस पर लोकसभा में 22 फरवरी, 1954 को आरोपों से बचते हुए संवेदना के साथ जो बहस हुई थी, वह आज भी दिशा दिखाती है। आज भी जब मेला लगता है, तो वह बहस बताती है कि तब हमारे नेता कैसे सोचते थे।

आमने-सामने

गंगा से गहरा प्रेम रहे, अंधविश्वास नहीं

यहां स्कैन करें

पुरुषोत्तम दास टंडन | तत्कालीन सांसद

- इस दुर्घटना का गंभीर चित्र मेरे सामने दूसरे दिन सवेरे आया।
- अंधविश्वास से हमें देश को बचाना है। संस्कृति की रक्षा हमें करनी है।
- भीड़ आवे, इसके लिए न्योता न दीजिए, भीड़ का आवाहन न कीजिए।

मैं प्रयाग का रहने वाला हूं और जब कुम्भ मेले में यह दुर्घटना हुई, उस समय मैं मेले में पहुंचा था, यद्यपि उस दुर्घटना के स्थान से लगभग दो मील दूरी पर, मैं वहां भारतीय संस्कृति सम्मेलन के अधिवेशन में व्यस्त था, जिसका उद्घाटन एक दिन पहले, अर्थात 2 फरवरी को राष्ट्रपति जी ने किया था। ... मुझे मेले में इस दुर्घटना की बहुत हल्की सी सूचना मिली थी। सच बात यह है कि इस दुर्घटना का गंभीर चित्र मेरे सामने दूसरे दिन सवेरे आया। इस समय मैं उस दुर्घटना के ब्योरों पर कुछ कहने वाला नहीं हूं। आजकल वहां जांच करने वाली समिति बैठी है।... मुझे कुछ दूसरी बातों पर कुछ कहना है।

यह मेला एक प्रतीक है, हमारे देश की मनोभावना का। किस प्रकार से लोग वहां दौड़ते हैं। उनके अंदर भावना होती है कि हम गंगा जी में दो डुबकी लगाकर स्वर्ग में चित्रगुप्त जी के खाते में जमा की एक और कलम लिखवा लेंगे...। आज दो रास्ते हैं, जो हमारे लिए भयावह हैं, डर के रास्ते हैं। मैं भारतीय संस्कृति का उपासक हूं, परंतु भारतीय संस्कृति को दो रास्तों से बचाना है। एक रास्ता तो वह है, जिस पर हमारे पश्चिम की नकल करने वाले भाई चलते हैं। ...मूढ़ग्राह या अंधविश्वास केवल अनपढ़ लोगों में ही नहीं होते, अंग्रेजीदां लोगों में मुझे बड़ा गहरा अंधविश्वास दिखाई देता है...। अंधविश्वास से हमें देश को बचाना है। भारतीय संस्कृति की रक्षा हमें करनी है। इसका यह मतलब नहीं कि हम अच्छी बातों को भी विचारपूर्वक न लें। मेरी मान्यता है कि हमारा देश बौद्धिक रहा है...।

जब यास्क मुनि के शरीर छोड़ने का समय आया, तो उनके चेलों ने उनसे पूछा, 'महाराज, आप जाते हैं, अब वेदों का अर्थ कौन करेगा? ...हम लोग किस ऋषि के पास जाएंगे?' यास्क ने जवाब दिया, 'किसी ऋषि की जरूरत नहीं है, *तर्कों वै ऋषिरुक्तः।* इसका क्या अर्थ है? तर्क, लॉजिक, सिलोगिज्म, यही ऋषि है, वेदों का अर्थ करने के लिए।' यह वाक्य था कि तर्क ही ऋषि है। तर्क का मतलब बुद्धि, क्योंकि तर्क का सहारा तो बुद्धि है, तर्क बुद्धि के बिना बढ़ता नहीं है।...

मेरा निवेदन यह है कि आज जहां एक ओर हमें पश्चिमी नकल से बचना है, वहां अपने देश की परिपाटियों का भी, जो धर्म के नाम पर चलती हैं, विश्लेषण करना है। ...गंगा से मेरा गहरा प्रेम है, लेकिन मेरा गंगा में मूढ़ग्राह नहीं है। ...मेरे मन में गंगा की उपासना इसलिए है कि गंगा के किनारे तपस्वियों ने तप किया था, गंगा का जल पवित्र है, परन्तु इस भेड़ियाधसान को कि एक छोटी-सी जगह में जहां संगम है, वहां हजारों आदमी एक साथ स्नान करें, इसे प्रोत्साहन देना उचित नहीं है। ...हमें इन दोनों भयावह रास्तों से बचना चाहिए, एक ओर, पश्चिमी नकल और दूसरी ओर, अपने यहां की सब रीतियों को बिना समझे-बूझे प्रोत्साहन देना। हमारी संस्कृति प्राचीन है, लेकिन बौद्धिक है। जिस तरह का हमारा यह मेला है, उस तरह के मेले मुसलमानों में भी चलते हैं। ...ठीक है, प्रबन्ध करना पड़ता है, लेकिन भीड़ आवे इसके लिए न्योता न दीजिए, निमंत्रण न दीजिए। भीड़ का आवाहन न कीजिए।... भारतीय संस्कृति को बिना समझे-बूझे कीचड़ में मत घसीटिए। भारतीय संस्कृति मूढ़ग्राहों या 'सुपरस्टीशंस' का बंडल नहीं है। जो लोग भारतीय संस्कृति को नहीं समझते हैं, वह समय पर उसकी बुराई कर देते हैं। ...*युक्तिहीन विचारेतु, धर्म हानिः प्रजायते।।* जहां बुद्धि नहीं है, युक्ति नहीं है, उस विचार से धर्म की हानि होती है।...

यह मैं सब सदस्यों से कहना चाहता हूं, चाहे वे हिंदू हों, चाहे मुसलमान हों, चाहे ईसाई हों। जो धर्म युक्ति पर आधारित नहीं है, वह धर्म कहलाने के योग्य नहीं है। भारतीय संस्कृति, भारतीय धर्म बौद्धिक है और युक्ति पर निर्भर है। इस कारण से मैं शासन को सलाह देता हूं कि इस प्रकार के मूढ़ग्राहों को बिना समझे बूझे प्रोत्साहन न दिया करें। बस मेरा यही निवेदन है।

(लोकसभा में दिए गए उद्बोधन से)

किसी के विश्वास की आलोचना ठीक नहीं

यहां स्कैन करें

जवाहरलाल नेहरू | तत्कालीन प्रधानमंत्री

- एक दुखद दुर्घटना थी...। जांच के परिणामों की प्रतीक्षा करनी चाहिए।
- लोग जाकर गंगा में डुबकी लगा लें, तो इससे मेरी कोई हानि नहीं होती।
- जहां बहुत भीड़ की आशा हो, वहां के लिए सरकार व्यवस्था करती है।

उत्तर प्रदेश सरकार ने जन समूह के लिए संतोषजनक प्रबंध करने में काफी मेहनत की थी, फिर भी गड़बड़ी हो गई। ...मैं मानता हूं कि यह एक दुखद दुर्घटना थी...। जैसा माननीय मित्र श्री टंडन ने कहा, हमें जांच के परिणामों की प्रतीक्षा करनी चाहिए। ...

आचार्य जी ने यह कहा है कि सरकार लोगों को मेले में आने के लिए निमंत्रित कर रही थी और प्रोत्साहित कर रही थी तथा उन्हें मेले में जाने के लिए धकेल रही थी, क्योंकि हमने इसके लिए विशेष गाड़ियां चलाई थीं और इसी प्रकार की अन्य व्यवस्था की थी। ...वस्तुस्थिति यह नहीं है। जहां कहीं भी बहुत अधिक भीड़ होने की आशा होती है, रेलवे उसके लिए व्यवस्था करती है, हमें ऐसा करना पड़ता है, और सत्य तो यह है कि लाखों लोग इस अवसर पर इसलिए नहीं आ सके, क्योंकि रेलों में स्थान ही नहीं था।...

एक यह आरोप लगाया गया कि सरकार एक दल विशेष के लाभ के लिए इस मेले से अनुचित लाभ उठाना चाहती थी। मुझे यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। मेरा यह दृष्टिकोण नहीं है और न ही उत्तर प्रदेश सरकार का यह दृष्टिकोण है। मैं यह कहना चाहता हूं कि जहां तक मेरा संबंध है, मैं अपने मित्र श्री पुरुषोत्तम दास टंडन की उन बातों से सहमत हूं, जो उन्होंने अभी-अभी कही हैं...। मैं किसी के विश्वास की आलोचना करना नहीं चाहता या उसे दुख पहुंचाना नहीं चाहता, किंतु इस सदन के बहुत से सदस्य जानते हैं कि मैं कभी ऐसा कोई अवसर अपने हाथ से नहीं जाने देता, जब मैं ज्योतिषियों और इसी प्रकार के लोगों के विरुद्ध कुछ न कहूं। ...एक माननीय सदस्य ने अंधविश्वासों का उल्लेख किया। मैं उनकी बात से सहमत हूं, किंतु मैं इतना और कहूंगा कि ऐसे कितने लोग हैं, जो किसी न किसी अंधविश्वास में विश्वास नहीं करते? ...निस्संदेह कुछ धार्मिक अंधविश्वास होते हैं, किंतु राजनीतिक अंधविश्वास और आर्थिक अंधविश्वास तथा अन्य भी कई प्रकार के अंधविश्वास होते हैं। हमें इन सब अंधविश्वासों को दूर करना चाहिए और इन्हें दूर करने का केवल एक ही तरीका है कि हम विज्ञान में लोगों की रुचि बढ़ाएं...।

मैं कुम्भ मेले में गया था, जैसे मैं पहले भी जाता रहा हूं। जैसा कि सदन को संभवतः विदित है, इलाहाबाद में ही मैं पैदा हुआ था और वहीं पला था; या यूं कह सकते हैं कि गंगा और यमुना के किनारे पर ही पैदा हुआ था और पला था। गंगा तथा यमुना मेरे बचपन के साथी के रूप में मुझे बहुत प्यारी हैं। जब कभी मुझे अवसर मिलता है, मुझे गंगा में नहाना बड़ा अच्छा लगता है, परंतु मैंने पवित्र अवसरों पर वहां न नहाने का निश्चय किया हुआ है, जिससे लोगों को भ्रांति न हो। ...दुर्भाग्य से मुझे ऐसे बहुत कम अवसर मिलते हैं और मुझे इसका दुख नहीं है, तो ऐसे अवसरों पर मैं जान-बूझकर वहां नहीं नहाता, क्योंकि लोग यह न समझें कि मैं इस चीज को प्रोत्साहन देना चाहता हूं।...

गंगा में नहाने का मेरे पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, परंतु जहां कहीं भी भारतीय लोग बहुत बड़ी संख्या में इकट्ठे होते हैं, उनका मुझ पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। मुझ पर उनका प्रभाव पड़ता है और मैं उनके जैसा बनना चाहता हूं, उन्हें समझना चाहता हूं और उन्हें अच्छे ढंग से सिखलाना चाहता हूं। इसी कारण जब मुझे अवसर मिलता है, तो मैं ऐसे स्थान पर जाने का प्रयत्न करता हूं...। यदि लोग जाकर गंगा में डुबकी लगा लें, तो इससे मेरी कोई हानि नहीं होती और मुझे यह समझ नहीं आता कि मैं इस विषय में अपनी शक्ति व्यर्थ नष्ट क्यों करूं, जब मेरे दूर करने को और बहुत सी बुराइयां हैं। ...मैं सोचने लगता हूं कि लोग सैकड़ों वर्षों से ऐसा क्यों करते चले आ रहे हैं, इसके पीछे ...कौन-सी शक्ति है? इसके पीछे जरूर कोई और बात होगी और मैं तो अपने आपको उनके अनुकूल बनाना चाहता हूं, क्योंकि मैं भी उनमें से ही एक हूं और उन्हें समझना चाहता हूं।

(लोकसभा में दिए गए उद्बोधन से)

सैटेलाइट जोड़ने से अंतरिक्ष बाजार में बढ़ी भारत की साख

यहां स्कैन करें

निरंकार सिंह | पूर्व सहायक संपादक, हिंदी विश्वकोश

भारत ने अंतरिक्ष में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के स्पैडेक्स मिशन ने ऐतिहासिक 'डॉकिंग' में सफलता हासिल की है। भारत यह उपलब्धि हासिल करने वाला अमेरिका, रूस और चीन के बाद चौथा देश बन गया है। इसरो ने पहले पृथ्वी की कक्षा में दो उपग्रहों को सफलतापूर्वक स्थापित किया, फिर दोनों को आपस में जोड़ दिया। यह एक बड़ी कामयाबी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वाभाविक ही इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए इसरो को बधाई देते हुए कहा कि आने वाले वर्षों में भारत के महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष मिशनों के लिए यह एक महत्वपूर्ण कदम है।

इससे पहले 7 और 9 जनवरी को तकनीकी कारणों से इसे टाल दिया गया था। 12 जनवरी को इसरो ने एक परीक्षण किया, जिसमें उपग्रहों को तीन मीटर की दूरी तक लाया गया और फिर आगे के विश्लेषण के लिए उनको सुरक्षित दूरी पर ले जाया गया। इसरो ने स्पैडेक्स मिशन के तहत अंतरिक्ष में दो उपग्रहों को जोड़ने का चौथा प्रयास किया था, जो सफल रहा। इसरो ने अपने बयान में कहा कि दो उपग्रहों को जोड़ने के बाद, दोनों को एक ही वस्तु के रूप में नियंत्रित करने में उसे सफलता मिली है। आने वाले दिनों में उपग्रहों को अलग करने व विद्युत हस्तांतरण की जांच की जाएगी।

भारत ने यह मिशन पूरा करके शून्य गुरुत्वाकर्षण में जटिल तकनीकी उपलब्धि हासिल की है। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के बाद इसरो ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर अपने हैंडल से पोस्ट किया- 'भारत ने अंतरिक्ष अभियान के इतिहास में अपना नाम दर्ज कर लिया है। इस क्षण का गवाह बनकर गर्व हो रहा है'। यह इसलिए भी बड़ी बात है, क्योंकि इससे पहले केवल अमेरिका, चीन और रूस ही अंतरिक्ष में सैटेलाइट डॉकिंग कर पाए हैं। अब भारत ने भी इस छोटी, लेकिन महत्वपूर्ण सूची में अपना नाम दर्ज करा लिया है। वास्तव में, डॉकिंग बहुत ही जटिल प्रक्रिया होती है, जिसमें उपग्रहों को आगे-पीछे ले जाया जाता है, जिसे इसरो ने अंतरिक्ष में दो उपग्रहों के 'रोमांचक हैंडशेक' के रूप में वर्णित किया। यह तकनीक तब आवश्यक होती है, जब सामान्य मिशन के लिए कई रॉकेट लॉन्च करने की जरूरत पड़ती है। चूंकि यह एक कठिन प्रक्रिया है, इसलिए इसके लिए इसरो ने ट्रायल भी किए।

भारत की सफलता अंतरिक्ष में छिपे कई अन्य रहस्यों और जानकारियों के लेन-देन में काम आएगी। अब चंद्रयान-4, गगनयान और भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन जैसे मिशनों की राह आसान हुई है।

इस मिशन की कामयाबी से चंद्रयान-4, गगनयान और भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन जैसे मिशनों की राह आसान हुई है। चंद्रयान-4 मिशन में चंद्रमा की मिट्टी के सैंपल पृथ्वी पर लाए जाएंगे, वहीं गगनयान मिशन में इंसान को अंतरिक्ष में भेजा जाएगा। इसरो के लिए इस मिशन का सफल होना बहुत जरूरी था, क्योंकि इसका उपयोग उपग्रहों की सर्विसिंग, अंतरिक्ष स्टेशन संचालन और ग्रहों के बीच आपस में चल रहे मिशनों में खूब होता है। भारत की यह सफलता अंतरिक्ष में छिपे कई रहस्यों और जानकारियों के उद्घाटन में बहुत काम आएगी। उल्लेखनीय है कि इसरो ने पीएसएलसी-सी 60 की मदद से इन दोनों उपग्रहों को श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से लॉन्च किया था। रॉकेट ने उड़ान भरने के करीब 15 मिनट बाद 220 किलोग्राम वजन वाले इन दोनों उपग्रहों को 475 किलोमीटर ऊपर की कक्षा में स्थापित किया था।

तकनीकी दक्षता के साथ-साथ इस मिशन के जरिये भारत वैश्विक व्यावसायिक अंतरिक्ष बाजार में अपनी जगह सुनिश्चित कर रहा है। 2030 तक यह बाजार एक ट्रिलियन डॉलर का हो सकता है। फिलहाल इसमें भारत की हिस्सेदारी सिर्फ आठ अरब डॉलर की है। सरकार का लक्ष्य 2040 तक इसे बढ़ाकर 44 अरब डॉलर करना है। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए ही सरकार ने श्रीहरिकोटा में तीसरे लॉन्च पैड के निर्माण को मंजूरी दी है। इस प्रोजेक्ट की लागत 3,985 करोड़ रुपये है और इसके 48 महीने में पूरा होने का अनुमान है। फिलहाल यहां दो लॉन्च पैड मौजूद हैं। नया लॉन्च पैड इन दोनों लॉन्च पैड से अधिक क्षमता वाला होगा। नए लॉन्च पैड को अंतरिक्ष क्षेत्र की भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए बनाया जाएगा। इस पैड के बनने पर अंतरिक्ष में भेजे जाने वाले सैटेलाइट और स्पेसक्रॉफ्ट के प्रक्षेपण में तेजी लाई जा सकेगी। इससे भारत अपनी जरूरत के मिशन को अंजाम देने के साथ-साथ विश्व की मांग भी पूरी कर सकेगा। सरकार के ताजा फैसले से नई पीढ़ी के लॉन्च व्हीकल प्रोग्राम को आगे बढ़ाने में भी मदद मिली है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

छाया को पकड़ना

एक बात हमेशा ध्यान में रखना, इस जगत में स्वयं के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं पाया जा सकता। जो उसे खोजते हैं, वे उसको पा लेते हैं और जो उससे अन्यथा कुछ भी खोजते हैं, वे अंततः असफलता और विषाद को ही उपलब्ध होते हैं। वासनाओं के पीछे दौड़ने वाले लोग नष्ट हुए हैं, नष्ट होते हैं और नष्ट होंगे। वह मार्ग आत्म-विनाश का है।

घुटने के बल चलने वाले एक बालक ने एक दिन सूर्य के प्रकाश में खेलते हुए अपनी परछाईं देखी। उसे वह अद्भुत वस्तु जान पड़ी, क्योंकि वह हिलता, तो उसकी वह छाया भी हिलने लगती थी। वह उस छाया का सिर पकड़ने का उद्योग करने लगा, किंतु जैसे ही वह छाया के सिर को पकड़ने बढ़ता कि वह दूर हो जाता। वह बढ़ता जाता, लेकिन पाता कि सिर तो सदा उतना ही दूर है। उसके और साये के बीच का फासला कम ही नहीं हो रहा था। थककर और असफलता से वह रोने लगा। द्वार पर भिक्षा के लिए खड़े एक भिक्षु ने यह देखा। उसने पास आकर बालक का हाथ उसके सिर पर रख दिया। रोता हुआ बालक हंसने लगा; इस भांति छाया का मस्तक भी उसने पकड़ लिया था। कल मैंने यह कथा कही और कहा अपनी आत्मा पर हाथ रखना जरूरी है।

जो छाया को पकड़ने में लगते हैं, वे उसे कभी नहीं पकड़ पाते। काया छाया है। उसके पीछे जो चलता है, वह एक दिन असफलता से रोता है। वासना दुष्पूर है, यानी उसका पूरा होना कठिन है। उसका कितना ही अनुगमन करो, वह उतनी ही दुष्पूर बनी रहती है। उससे मुक्ति तब ही मिलती है, जब कोई पीछे देखता है और स्वयं में प्रतिष्ठित हो जाता है।

ओशो

ओम बिरला | लोकसभा अध्यक्ष

गांवों में बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं, हर खेत को पानी और घरों तक पेयजल उपलब्ध कराना हमारी प्राथमिकता है। हम मिलकर किसानों की समृद्धि और आम जनमानस के जीवन में सामाजिक-आर्थिक बदलाव लाने के लिए कार्य करेंगे।

अनुलोम-विलोम

ज्योतिष शास्त्र

ज्योतिष हमेशा शास्त्र ही रहेगा

पिछले दिनों 'हिन्दुस्तान' में प्रकाशित एक आलेख में इस सवाल का जवाब ढूंढ़ा गया था कि ज्योतिष सेवा है या कारोबार? मेरा मानना है कि ज्योतिष हजारों साल पुराना शास्त्र है। हमारे ऋषि-मुनियों ने बहुत तपस्या के बाद ग्रहों और नक्षत्रों के बारे में उस समय ज्ञान प्राप्त किया था, जब उनके पास आकाश के अध्ययन के लिए पर्याप्त साधन एवं यंत्र नहीं थे। इन ग्रहों और नक्षत्रों का मनुष्यों पर होने वाले प्रभाव को ही ज्योतिष के सूत्रों के रूप में स्थापित किया गया। ज्योतिष को वेदों की आंख माना जाता है। आचार्य भास्कराचार्य ने स्वग्रंथ *सिद्धांत शिरोमणि* में लिखा है- *वेदस्य निर्मलं चक्षुः ज्योतिषशास्त्रमकल्मषम्*, यानी ज्योतिष वेद का निर्मल चक्षु है, जो दोष रहित है। हजारों साल पहले रचित ज्योतिष शास्त्र और ज्योतिष के सूत्रों पर बहुत शोध हुए हैं और ज्योतिष आचार्यों ने उनमें आवश्यक संशोधन व उनका विस्तार भी किया है। ज्योतिष को एक दैविक विद्या भी कहा जा सकता है। महर्षि पाराशर ने अपने ग्रंथ *बृहत् पाराशर होरा शास्त्र* में ज्योतिषीय सूत्रों का विस्तार से उल्लेख किया है।

देखा जाए, तो ज्योतिष शास्त्र मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सहयोगी और कल्याणकारी है। यह मानव के जीवन से लेकर मृत्युपर्यंत उसके साथ प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। विश्व के सभी कार्य कालाधीन हैं। ज्योतिष शास्त्र काल नियामक होने के कारण मानव जीवन के लिए सहायक एवं उपयोगी माना जाता है। कहा तो यह भी जाता है कि जिस ज्योतिषी पर भगवान का आशीर्वाद नहीं होता, उसकी बातें सटीक एवं सत्य सिद्ध नहीं होतीं। एक कुंडली को पढ़ने के लिए कुंडली में ग्रहों और नक्षत्रों की जन्मकालीन स्थिति, गोचर स्थिति, दशा, अंतर-दशा, वर्ग कुंडली, वर्ष कुंडली और बहुत से सूत्रों का ध्यान रखना होता है, जिसमें काफी समय जाया होता है। आचार्य वराहमिहिर ने अपने ग्रंथ *बृहत् संहिता* के *सांवत्सरसूत्राध्यायः* में ज्योतिषी के गुणों के बारे में विस्तार से बताया है। एक ज्योतिषी को ज्योतिष के ग्रंथों का भली-भांति अध्ययन करना चाहिए, जिनमें *बृहत् पाराशर होरा शास्त्रम्, लघु पाराशरी, फल दीपिका, बृहत् जातक, बृहत् संहिता* और *मानसागरी* प्रमुख हैं। इसके अलावा भविष्यवाणी करने से पहले देश, काल एवं पात्र का विशेष ध्यान रखना जरूरी है।

ऐसे में, मेरी समझ से परे है कि इंटरनेट पर उपलब्ध कथित ज्योतिषी दो मिनट या कुछ ही पल में कैसे कुंडली का अध्ययन कर लेते हैं? दरअसल, इन्होंने ही ज्योतिष शास्त्र को व्यापार बना दिया है। मगर ऐसे चंद लोगों की वजह से पूरे ज्योतिष शास्त्र पर सवाल उठाना गलत है। इससे हमें बचना चाहिए।

विनोद शर्मा, ज्योतिष आचार्य

अब यह कारोबार ज्यादा बन गया

कहते हैं, नियति आप नहीं बदल सकते। यानी, जिसके भाग्य में जो बदा है, उसके साथ वह होकर रहता है। जब आप इस मत में विश्वास करते हैं, तो फिर ज्योतिष का कोई अर्थ नहीं रह जाता। वैसे भी, ज्योतिष कारोबार ही ज्यादा है। चूंकि इंसानों का यह मनोविज्ञान होता है कि वह अपना भविष्य जानने को इच्छुक रहता है और यह पता करना चाहता है कि उसके जीवन में कुछ बुरा तो नहीं होने वाला? इसी आशंका का फायदा ज्योतिषी लोग उठाते हैं और अच्छे-खासे पैसे लेकर कथित भविष्य बांचने का दावा करते हैं।

वास्तव में, ऐसे लोग अब शायद ही होंगे, जिन्होंने ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किया होगा। इसमें एक से बढ़कर एक ग्रंथ हैं, लेकिन आजकल के कथित ज्योतिषाचार्य एक-दो किताबें पढ़कर खुद को सबसे बड़े ज्योतिषी के रूप में पेश करने लगते हैं। पहले के दिनों में ज्योतिष विद्या का इस्तेमाल सद्कर्मों में होता था, यानी देश और समाज के हित में इसका इस्तेमाल होता था, लेकिन अब तो सब कुछ पर बाजार हावी है। ज्योतिष विद्या भी बाजार के हवाले है और ऐसे-ऐसे गुरु बाजार में मौजूद हैं, जिनको खुद भले ही यह विद्या न आती हो, लेकिन वे दूसरों को ज्योतिषाचार्य बनाने का सर्टिफिकेट जरूर बांटते हैं। आप बाजार में निकल जाइए, आपको पता चलेगा कि कैसे यू-ट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम या पॉडकास्ट पर पैसे देकर इंटरव्यू करवाकर भ्रामक प्रचार किया जाता है और एप डाउनलोड करने या फॉलोअर बनने पर विशेष सुविधा देने की बात कही जाती है। जबकि, ऐसे कथित ज्योतिषियों को अगर हाथ की लिखी कुंडली पकड़ा दी जाए, तो न वे उसकी भाषा पढ़ पाएंगे और न उचित गणना कर सकेंगे। अब तो अपनी कुंडली जानने के लिए आपको किसी ज्योतिषी की भी जरूरत नहीं होती। बस सॉफ्टवेयर डाउनलोड कीजिए और बन जाइए ज्योतिषाचार्य। दुर्भाग्य से, ऐसे लोग ही अब ज्योतिषी माने जाते हैं। ग्रह-नक्षत्रों की असल गणना करने वाली बिरादरी या तो लुप्त हो चुकी है या शांत हो चुकी है।

बहरहाल, यहां मेरा मतलब ज्योतिष शास्त्र पर सवाल उठाना नहीं है, लेकिन आज के जो हालात हैं, उनमें इस पर विश्वास करने का कोई मतलब नहीं है। यह अब विशुद्ध रूप से कारोबार बन चुका है, जिसमें आप जितना पैसा झोंकते हैं, उतना तमाशा देखते हैं। आलम यह है कि कोई भी कथित ज्योतिषाचार्य बिना पैसे लिए आपकी कुंडली नहीं देखता और कुंडली देखने के बाद आपके भविष्य को लेकर कुछ न कुछ ऐसा जरूर बोल देगा कि आप समस्या के समाधान के लिए तत्पर हो उठेंगे। आपमें पैदा होने वाला यही डर इस धंधे को सजाता-संवारता है।

दीपक, टिप्पणीकार

गाज़ा में युद्धविराम

पीड़ितों को राहत

गाज़ा में हमास और इस्राइल के बीच युद्धविराम भले ही अनिश्चित हो, पर इसके बावजूद यह स्वागत योग्य है क्योंकि इससे पीड़ित लोगों को राहत मिलेगी। हाल ही में इस्राइल और हमास के बीच युद्धविराम की घोषणा से उम्मीदों के बावजूद अभी दोनों पक्षों के बीच टकराव की आशंका बनी हुई है। अक्टूबर, 2023 में इस्राइल पर हमास के घातक आतंकी हमले और इसके बाद जवाबी इस्राइली कार्रवाई के कारण महीनों से हिंसा और पीड़ा का दौर जारी था। ऐसे में युद्धविराम के पैरोकारों ने राहत की सांस ली है। लेकिन भविष्य का रास्ता अनिश्चितता से भरा है। इस युद्ध ने इस्राइली और फिलिस्तीनी समुदायों पर गहरी चोट पहुंचाई है। इस्राइल के सैकड़ों लोगों को बंधक बनाया गया था जिसमें महिलायें, बच्चे और वृद्ध सिविलियन शामिल हैं जो पूरे देश के लिए गंभीर पीड़ा का विषय है। युद्धविराम के शुरुआती चरण में 33 बंधकों की रिहाई से कुछ राहत मिलेगी, पर बहुत से लोगों को भय है कि यह अस्थिर समझौता टूट सकता है जिससे उनके प्रियजनों का जीवन अधर में लटका रहेगा। गाज़ा में मानवीय संकट बहुत गंभीर है। यहां 46,000 से अधिक लोग मारे गए हैं और इनमें आधी महिलायें और बच्चे हैं। जनसंख्या का 90 प्रतिशत व्यापक विस्थापन का शिकार हुआ है और लगभग 2.3 मिलियन लोग बेघर हो गए हैं। पूरे-पूरे इलाके खंडहर बन गए हैं तथा मूलभूत आवश्यक चीजों की कमी ने नागरिकों को भुखमरी के कगार पर पहुंचा दिया है।

अमेरिका, मिस्र और कतर के प्रयासों से हुए प्रस्तावित युद्धविराम में तीन चरणों वाला समझौता समाहित है। पहले चरण में बंधकों तथा बंदी फिलिस्तीनियों की अदला-बदली शामिल हैं जिसमें महिलाओं, बच्चों तथा वृद्धों की रिहाई को प्राथमिकता दी जाएगी। इसके बाद वाले चरणों में सैनिकों तथा अन्य पुरुष बंधकों की रिहाई के साथ संघर्ष रोकने पर व्यापक चर्चा की जाएगी। युद्धविराम का एक महत्वपूर्ण तत्व गाज़ा में मानवीय सहायता बढ़ाना है। इससे विस्थापित फिलिस्तीनियों को अपने घरों को वापस लौटने तथा महत्वपूर्ण ढांचागत संरचनायें पुनः बनाने का अवसर मिलेगा। इसके बावजूद इस समझौते की दीर्घकालीन सफलता दोनों पक्षों की इच्छाशक्ति पर निर्भर करेगी जिसका आधार दूसरे चरण में सार्थक वार्तालाप होगा। अतीत में युद्धविराम समझौतों की प्रकृति अस्थिर रही जिससे स्थाई शांति प्राप्त करने में कठिनाई स्पष्ट होती है। केवल एक सप्ताह चला नवंबर, 2023 का समझौता इसका उदाहरण है। प्रमुख बाधाओं में हमास द्वारा अपनी सैनिक क्षमतायें बनाए रखने पर जोर देना तथा इस्राइल का हमास के प्रशासनिक ढांचे को नष्ट करने का उद्देश्य शामिल हैं। दोनों पक्षों पर भारी घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दबाव है, पर उनके बीच गहराई तक व्याप्त अविश्वास समझौते को संकट में डाल सकता है। बंधक के परिवार अनिश्चितता में झूल रहे हैं। अनेक लोगों को यह संभावना सता रही है कि यदि युद्धविराम विफल होता है तो उनके बंधक बने प्रियजन शायद जीवित न रहें। इसके साथ ही फिलिस्तीनियों को भय है कि यदि वार्तायें विफल होती हैं तो इससे हिंसा बढ़ सकती है जिससे पहले से पैदा विनाशकारी स्थिति और गंभीर हो जाएगी। यदि युद्धविराम बना रहता है तो इसका अर्थ गाज़ा की पीड़ित जनसंख्या के लिए बहु-प्रतीक्षित राहत होगा। ऐसे में खाद्य असुरक्षा, चिकित्सा सहायता में कमी तथा घरों और ढांचागत संरचनाओं के पुनः निर्माण को प्राथमिकता देनी होगी। मानवीय संकट दूर करने में अंतरराष्ट्रीय सहायता महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी, पर दीर्घकालीन बहाली के लिए क्षेत्र में समुचित निवेश, राजनीतिक स्थायित्व तथा दीर्घकालीन शांति स्थापित करना जरूरी होगा।

वैश्विक महत्वाकांक्षाओं हेतु राजनय

विश्व शक्ति बनने के लिए भारत को आगे बढ़कर अपने राजनयिक ढांचे का विस्तार कर विदेश मंत्रालय का आधुनिकीकरण करना चाहिए।

संतोष मैथ्यू
(लेखक, एसोसिएट प्रोफेसर हैं)

दुनिया की सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश भारत सबसे बड़ा लोकतंत्र है और वह वैश्विक मामलों में महत्वपूर्ण शक्ति बन रहा है। 'ग्लोबल साउथ' के नेता के रूप में उसकी बढ़ती अर्थव्यवस्था, रणनीतिक स्वायत्तता तथा शांति के प्रति प्रतिबद्धता ने उसे अंतरराष्ट्रीय राजनय का केन्द्र बना दिया है। लेकिन इन उपलब्धियों के बावजूद भारत का विदेश मंत्रालय संसाधनों की कमी का सामना कर रहा है, जबकि यह विदेश नीति को स्वरूप देने तथा उसे क्रियान्वित करने का महत्वपूर्ण संस्थान है।

केवल लगभग 850 राजनयिकों वाला विदेश मंत्रालय तेजी से जटिल होते वैश्विक परिदृश्य का सामना करने के लिए ठीक से तैयार नहीं है। भारत को विश्व शक्ति के रूप में अपनी क्षमता प्राप्त करने के लिए राजनयिक ढांचे का काफी विस्तार जरूरी है। उसे अपने राजनयिक ढांचे का विस्तार कर कम से कम विदेश मंत्रालय में 5,000 कर्मी रखने चाहिए। इस प्रकार का विस्तार भारत की महत्वाकांक्षाओं तथा प्रमुख अंतरराष्ट्रीय शक्ति के रूप में उसके दर्जे के अनुरूप होगा। भारत की राजनयिक आवश्यकतायें उसकी वैश्विक महत्वाकांक्षाओं के अनुरूप काफी बढ़ी हैं।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र तथा उसकी एक सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था के रूप में भारत की विदेश नीति को अनेकानेक वैश्विक मुद्दों से निपटना होता है। व्यापार वार्ताओं और जलवायु परिवर्तन से लेकर डिजिटल राजनय तथा वैश्विक सुरक्षा तक विदेश मंत्रालय भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों के मुख्य केन्द्र के रूप में काम करता है। भारत की विदेश नीति परंपरागत रूप से रणनीतिक स्वायत्तता तथा शांति के प्रति प्रतिबद्धता से निर्देशित होती है जिसकी जड़ें गुटनिरपेक्षता की नेहरूवादी परंपरा में निहित हैं।

जवाहरलाल नेहरू तथा वीके कृष्ण मेनन जैसे नेताओं ने ऐसी स्वतंत्र विदेश नीति की स्थापना की थी जिसमें भारत की संप्रभुता पर जोर देते हुए अहिंसा को प्राथमिकता मिली थी। गुटनिरपेक्षता की इस विरासत ने भारत को प्रतिद्वंद्वी महाशक्तियों के बीच एक सेतु के रूप में स्थापित किया था और वह राजनयिक दृष्टिकोण का प्रमुख आधार बनी हुई है। लेकिन विश्व व्यवस्था में बदलाव के चलते भारत को आधुनिक चुनौतियों से निपटने के लिए अपने विदेश नीति उपकरण में परिवर्तन करने चाहिए। विदेश मंत्रालय को मजबूत करना न केवल भारत के हितों को मजबूत करने, बल्कि एकसा दृष्टिकोण स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण है जो विश्व राजनीति को प्रभावित कर सके। 1.4 बिलियन से अधिक जनसंख्या तथा प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी नेतृत्वकारी भूमिका को देखते हुए भारत का वर्तमान राजनयिक ढांचा उसकी मांग के अनुरूप नहीं है।

उसे अमेरिका, चीन और रूस जैसे देशों का सामना करना होता है जहां हजारों राजनयिक और विदेश नीति विशेषज्ञ हैं जो उनका वैश्विक प्रभाव बनाए रखते हैं। इसके उलट कुशल होने के बावजूद भारतीय राजनयिकों की संख्या आवश्यकता से बहुत कम है। इस कमी से तत्काल ज्यादा विशिष्ट विदेश मंत्रालय बनाने की आवश्यकता उजागर होती है जो अनेकानेक क्षेत्रों में वैश्विक चर्चाओं को आगे बढ़ाते हुए रणनीतिक प्रभाव छोड़ने मे सक्षम हो। विदेश मंत्रालय का विस्तार कर इसमें 5,000 कर्मी शामिल करने से सुनिश्चित होगा कि भारत की विदेश नीति सक्रिय तथा समग्र बने। इस विस्तार का अर्थ केवल संख्या बढ़ाने से आगे जा कर विविध क्षेत्रों में रणनीतिक विशेषज्ञता पैदा करने से भी है। भारतीय राजनयिकों को व्यापार, रक्षा, पर्यावरण टिकाऊपन, साइबर सुरक्षा, मानवीय सहायता व अन्य मुद्दों को संबोधित करना चाहिए। इसे प्राप्त करने के लिए विदेश मंत्रालय को ऐसे विशेषज्ञों को नियुक्त करना चाहिए जो जटिल मुद्दों से निपट सकें। शीतयुद्ध के समय अमेरिकन विदेश सचिव हेनरी कीसिंजर जैसे लोगों ने राजनय में रणनीतिक उत्कृष्टता की परिवर्तनकारी शक्ति प्रदर्शित की थी। इसी प्रकार भारत को ऐसे राजनयिकों की आवश्यकता है जो दूरगामी विचार शक्ति के साथ ऐसी नीतियां बना सकें जो उसकी वैश्विक भूमिका को विकसित कर सकें। भारत की विदेश नीति को केवल घटनाओं पर प्रतिक्रिया करने के बजाय वैश्विक प्रवृत्तियों का पूर्वानुमान लगाने में सक्षम होना चाहिए।

अमेरिका, रूस और चीन जैसी विश्व शक्तियों से प्रतियोगिता के लिए भारत को ऐसी राजनयिक टीम प्रशिक्षित करनी चाहिए जो गठबंधन बना सके, उभरते अवसरों का लाभ उठा सके तथा वैश्विक चुनौतियों को संबोधित कर सके। रणनीतिक सोच तथा विशिष्ट ज्ञान में निवेश इस दृष्टिकोण से जरूरी हो जाता है। भारतीय विदेश मंत्रालय को अंतरिक्ष राजनय, जलवायु परिवर्तन वार्ताओं, विश्व व्यापार तथा रक्षा रणनीति जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञता विकसित करनी चाहिए। इसके साथ ही राजनयिकों को सरकारों, बिजनेसों, थिंक टैंकों तथा सिविल सोसाइटी से संवाद करते रहना चाहिए ताकि भारत के पक्ष में निर्णयों को स्वरूप दिया जा सके। कर्मचारियों की समुचित संख्या वाला विदेश मंत्रालय भारत को वैश्विक मुद्दों पर बेहतर प्रतिक्रिया के साथ ही प्रमुख शक्तियों से संबंध और मजबूत करने में सहायक सिद्ध होगा। जैसे अमेरिका राबर्ट मैक्नमारा और जान फास्टर डलेस जैसे व्यक्तियों पर अपने राजनय को स्वरूप देने में विश्वास करता है, उसी प्रकार भारत को भी दूरदर्शी राजनयिकों की एक पीढ़ी तैयार करनी चाहिए।

ऐसे व्यक्तियों में वैश्विक सुरक्षा, अंतरराष्ट्रीय कानून, बहुपक्षीय संगठनों तथा विश्व व्यापार की गहरी समझ होनी चाहिए। वीके कृष्ण मेनन में ये गुण पाए जाते थे जिन्होंने 1950 के दशक में अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारतीय हितों को आगे बढ़ाया था। विदेश मंत्रालय का विस्तान न केवल तात्कालिक चुनौतियों से निपटने, बल्कि उभरती प्राथमिकताओं के अनुरूप भारत की राजनयिक क्षमताओं के विकास से भी है। जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार संबंधों तथा तकनीकी राजनय दूरदर्शी विदेशी नीति सुनिश्चित करने के लिए जरूरी है।

भारतीय विदेश मंत्रालय का विस्तार करने के लिए थिंक टैंकों, अकादमिक संस्थानों तथा मीडिया पेशेवरों से सहयोग को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। इनके साथ साझेदारी से रणनीतिक निर्णयों के लिए बौद्धिक नीव तैयार होगी जिससे भारत को उभरती वैश्विक प्रवृत्तियों का पूर्वानुमान करने में आसानी होगी। घरेलू और अंतरराष्ट्रीय थिंक टैंक और विश्वविद्यालय बदलती भू-राजनीतिक स्थितियों, नई आर्थिक नीतियों तथा अन्य विश्व घटनाक्रमों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां दे सकते हैं।

इन संस्थानों से संबंध स्थापित करने से सुनिश्चित होगा कि भारत की विदेश नीति सही सूचनाओं पर आधारित व परिवर्तनशील बनी रहेगी। आधुनिक विदेश नीति में सार्वजनिक राजनय का महत्वपूर्ण स्थान है।

सरकारों के बीच वार्ताओं के साथ भारत को वैश्विक दृष्टिकोण बदलने तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जनता से संबंध बनाने के प्रयास करने चाहिए। भारतीय विदेश मंत्रालय को मीडिया पेशेवरों से निकट सहयोग स्थापित कर दुनिया भर में भारत के दृष्टिकोण और नीतियों के बारे में संवाद स्थापित करना चाहिए। भारत की भावनात्मक शक्ति में समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, लोकतांत्रिक आदर्श तथा मानवतावादी मूल्य शामिल हैं। भारत इनका प्रयोग कर अपना वैश्विक प्रभाव बढ़ा कर यह सुनिश्चित कर सकता है कि दुनिया भर में उसकी आवाज सुनी जाए।

निर्यात पर अमेरिकी प्रतिबंधों का प्रभाव

> भारत, जो एआई अनुसंधान और बुनियादी ढांचे में भारी निवेश कर रहा है, के लिए ये प्रतिबंध अत्याधुनिक अमेरिकी तकनीकों तक पहुंच में बाधा डाल सकते हैं।

कुमारदीप बनर्जी
(लेखक, नीति विश्लेषक हैं)

बाइडेन प्रशासन का अंतरिम अंतिम नियम-आईएफआर, जो जनवरी 2025 से प्रभावी है, उन्नत कंप्यूटिंग एकीकृत सर्किट (आईसी) और कृत्रिम बुद्धिमत्ता-एआई मॉडल भार के निर्यात, पुनः निर्यात और देश में स्थानांतरण पर सख्त नियम लागू करता है। इन उपायों का उद्देश्य संभावित सैन्य और खुफिया अनुप्रयोगों वाली उन्नत तकनीकों के प्रसार को सीमित करना है, विशेष रूप से एआई-संचालित प्रणालियों में। हालांकि यह कदम निवर्तमान प्रशासन की ओर से एक महत्वपूर्ण नीतिगत कदम है, लेकिन अगले राष्ट्रपति पद के तहत इसका भविष्य अनिश्चित बना हुआ है, क्योंकि नया प्रशासन समीक्षा के लिए कार्यान्वयन को रोक सकता है। भारत, जो अपने एआई बुनियादी ढांचे को तेजी से आगे बढ़ा रहा है, आईएफआर के तहत महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना कर रहा है। यहां मुख्य निहितार्थ हैं: आईएफआर उन्नत कंप्यूटिंग आईसी और एआई मॉडल भार के निर्यात के लिए लाइसेंसिंग आवश्यकताओं को लागू करता है, विशेष रूप से उच्च-प्रदर्शन एआई मॉडल के लिए अभिन्न अंग। भारत, जो एआई अनुसंधान और बुनियादी ढांचे में भारी निवेश कर रहा है, के लिए ये प्रतिबंध अत्याधुनिक अमेरिकी तकनीकों तक पहुंच में बाधा डाल सकते हैं। एआई मॉडल के प्रशिक्षण में उपयोग किए जाने वाले उन्नत आईसी के लिए लाइसेंस पर अस्वीकृति की धारणा लागू होती है, जो भारत की एआई विकास के लिए आवश्यक अत्याधुनिक हार्डवेयर प्राप्त करने की क्षमता को सीमित करती है।

विनियम उन्नत बंद-भार एआई मॉडल पर कड़े नियंत्रण लगाते हैं, जबकि खुले-भार मॉडल इससे मुक्त हैं। चूंकि बंद-भार मॉडल अक्सर ग्राउंडब्रेकिंग एआई अनुसंधान को आगे बढ़ाते हैं, इसलिए यह सीमा उन्नत अमेरिकी एआई मॉडल का लाभ उठाने में भारत की प्रगति को धीमा कर सकती है। इन महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों तक सीमित पहुंच एआई-संचालित अनुप्रयोगों में सफलताओं में देरी कर सकती है हालांकि आईएफआर कम जोखिम वाले गंतव्यों के लिए अपवाद प्रदान करता है, लेकिन भारत को पसंदीदा देशों की सूची में शामिल नहीं किया गया है। नतीजतन, भारतीय संस्थाओं को कुल प्रसंस्करण प्रदर्शन के आधार पर उन्नत कंप्यूटिंग क्षमता पर सीमित आवंटन का सामना करना पड़ता है। अगले तीन वर्षों में, ये सीमाएं भारतीय शोधकर्ताओं और डेवलपर्स के लिए उपलब्ध कम्प्यूटेशनल संसाधनों को प्रतिबंधित कर सकती हैं, जिससे संभावित रूप से एआई पहल में बाधा आ सकती है। अमेरिकी तकनीक चाहने वाली

भारतीय कंपनियों को आईएफआर के तहत कड़ी जांच का सामना करना पड़ेगा, जिसमें आपूर्ति श्रृंखला सुरक्षा, कार्मिक जांच और साइबर सुरक्षा अनुपालन पर कड़ी जांच शामिल है। ये आवश्यकताएं अमेरिकी फर्मों के साथ साझेदारी की जटिलता को बढ़ाएंगी और भारत के अपने एआई पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ाने के प्रयासों में देरी कर सकती हैं।

भारत की उन्नत डेटा सेंटर और उच्च-प्रदर्शन कंप्यूटिंग क्लस्टर स्थापित करने की योजना नए नियमों से सीधे प्रभावित होगी। आईएफआर दिशा-निर्देशों जैसे अमेरिकी सुरक्षा मानकों के अनुपालन को अनिवार्य बनाता है, जिससे परिचालन लागत और संभावित देरी बढ़ जाती है।

वैश्विक.,ब्रु सहयोग का नेतृत्व करने की भारत की महत्वाकांक्षा, जैसा कि एआई पर वैश्विक भागीदारी जैसी पहलों में इसकी भागीदारी से प्रदर्शित होता है, इन नियंत्रणों के तहत घर्षण का सामना करती है। भारत के तकनीकी विकास में अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, उच्च-प्रदर्शन कंप्यूटिंग घटकों और एआई मॉडल पर प्रतिबंध प्रगति को बाधित कर सकते हैं।

इन चुनौतियों को कम करने के लिए, भारत को वैकल्पिक रणनीतियों पर विचार करना चाहिए, जिसमें घरेलू अनुसंधान और विकास को मजबूत करना, गैर-अमेरिकी प्रौद्योगिकी प्रदाताओं के साथ साझेदारी करना और अमेरिका के साथ अनुकूल शर्तों पर बातचीत करने के लिए राजनयिक चैनलों का लाभ उठाना शामिल है। आगे के रास्ते के लिए भारतीय कंपनियों को तेजी से अनुकूलन करने, आत्मनिर्भरता पर ध्यान केंद्रित करने और पारंपरिक साझेदारी से परे सहयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता होगी।

जबकि आईएफआर लाइसेंस अपवादों और संभावित समायोजनों के माध्यम से सीमित लचीलापन प्रदान करता है, भारत की उन्नत कंप्यूटिंग और एआई महत्वाकांक्षाओं को इन नए निर्यात नियंत्रणों द्वारा लगाए गए नियामक बाधाओं को दूर करने के लिए लचीलेपन और नवाचार की आवश्यकता होगी।

आप की बात

मेडल पर विवाद

पेरिस ओलंपिक 2024, जो खेल और गौरव का प्रतीक माना जाता है, हाल ही में एक अभूतपूर्व विवाद का केंद्र बन गया। इस बार चर्चा का विषय बना खेलों में वितरित किए गए डिफेक्टिव मेडल, जिनकी गुणवत्ता और चमक कुछ ही दिनों में क्षीण होने लगी। भारतीय निशानेबाज मनु भाकर समेत कई प्रतिष्ठित एथलीटों ने शिकायत की कि मेडल का रंग उतर रहा है, जिससे इनकी प्रतिष्ठा पर आंच आई। अमेरिकी एथलीट नायजा ह्यूस्टन ने ओलंपिक के दौरान ही अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा, मेडल पहले तो शानदार दिखते हैं, लेकिन थोड़ी देर के इस्तेमाल से इनकी असली गुणवत्ता सामने आ जाती है। इस मामले ने ओलंपिक की साख को ठेस पहुंचाई और वैश्विक मंच पर जगहंसाई हुई। हालांकि, इंटरनेशनल ओलंपिक काउंसिल (आईओसी) ने त्वरित और प्रभावी कदम उठाते हुए ऐलान किया कि खराब पदकों को नए और उच्च गुणवत्ता वाले पदकों से बदला जाएगा। पेरिस आयोजन समिति और फ्रांसीसी राज्य टकसाल 'मोनने डी पेरिस' इस कार्य में जुटे हुए हैं। अब तक 100 से अधिक मेडल प्रतिस्थापित किए जा चुके हैं। यह घटना आयोजनकर्ताओं के लिए एक सबक है कि खिलाड़ियों की मेहनत और सम्मान से कभी समझौता नहीं किया जा सकता। आईओसी का यह कदम खिलाड़ियों के विश्वास को पुनः स्थापित करने की दिशा में एक सशक्त संदेश है।

- आरके जैन, बड़वानी, मप्र

न्यायालय की शरण

पूजा अधिनियम 1991 को लेकर कांग्रेस नें न्यायालय का रुख अपना लिया है,इस अधिनियम के अन्तर्गत एक निश्चित अवधि के उपरांत किसी भी पूजा स्थल का स्वरूप यथावत रखने का प्रावधान है,इतिहास साक्षी है कि विदेशी आक्रांताओं द्वारा भारत के अनेकों धार्मिक महत्व के स्थलों को लूटा, तोड़ा,अतिक्रमण किया गया है , जबकि देश में अन्य राजाओं या सम्राटो के कालखंड में ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता ,उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी एक साक्षात्कार के दौरान आईने अकबरी और बाबरनामा का उदाहरण देते हुए कई मुख्य स्थलों के विध्वंस की बात का प्रमाण दिया ,फिर कांग्रेस को इस अधिनियम में बदलाव से क्या प्रयोजन है ये समझ से परे है, गोरतलब है कि कश्मीर को इससे बाहर रखा गया है जबकि कश्मीर के हजारों पूजा स्थलों का विध्वंस और अतिक्रमण 1990 के दशक के बाद हुआ है , भारत की बड़ी आबादी को प्रभावित करने वाले फ़ैसले के ख़िलाफ़ जाकर कांग्रेस क्या साबित करना चाहती है ,यदि इसे तुष्टीकरण भी माना जाए तो भी राम मंदिर , रामसेतु एवं अन्य अनगिनत बार कांग्रेस नागरिकों को चिढ़ाने का काम पहले से करती आयी है जिसका उसने ख़ामियाजा भी भुगता ,बार बार एक ही गलती करना और अपना राजनैतिक अस्तित्व ख़तरे में डालना कौन सी बुद्धिमानी है । पर शायद कांग्रेस का लक्ष्य कुछ और है जिस पर वो अडिग है।

- मनोज पुरुषार्थी, मेरठ

गडकरी के सुधार

केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी देश में आवागमन सुलभ हो और अधिक से अधिक गांव व शहर सड़क मार्गों से जुड़ सकें इस हेतु प्रयासरत हैं। इसके साथ ही उन्होंने हाल ही में दो बड़े निर्णय लेकर यह भी बता दिया कि सुलभ/सरल यातायात के साथ मानवीय मूल्य भी सुरक्षित कैसे रह सकें उसके लिए भी वे भरसक कोशिश कर रहे हैं. पहला कदम तो उन्होंने यह उठाया कि सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को शीघ्रातिशीघ्र इलाज के अस्पताल पहुँचाने वाले को 25 हजार का इनाम देने की घोषणा की है साथ 18 से 34 वर्ष की आयु वाले ही अधिक जान गंवाते है इस बात की भी चिंता की है. दूसरे ड्रायवर और बेहतर कैसे बन सकें उनके लिए ट्रैनिग सेंटर खोलने की भी बात कही है. उनका कहना है कि अकुशल ड्रायवरों के कारण देश में 82 प्रतिशत सड़क दुर्घटनाएं होती हैं. अतः उन्हें प्रशिक्षण देकर कुशल बनाने हेतु ट्रेनिंग सेंटर भी खोलने की बात भी कही है. उनकी बात सौ फीसदी सही है. दुर्घटना के शिकार को शीघ्र इलाज मिल जाए तो उनकी जान बचाई जा सकती है दूसरे कुशल ड्राइवरों के हाथों में वाहन होंगे तो दुर्घटनाओं के अंदेशा भी बहुत कम रहेंगे. दोनों ही पहलू बहुत महत्वपूर्ण है मानव जीवन को सुरक्षित रखने में. उनकी सोच व कार्यविधी सराहनीय है।

- शकुंतला महेश नेनावा, इंदौर

आस्था पर प्रश्न

समाज में बिना किसी तर्कसंगत आधार पर धार्मिक आस्थाओं पर प्रश्नचिन्ह खड़े करना एक फैशन बन चुका है, जिसमें केवल कुछ बुद्धिजीवी ही नहीं, अपितु राजनीतिक दलों के वे लोग भी सम्मिलित हैं, जो वोट बैंक की राजनीति के चलते किसी भी धर्म के प्रतीक चिन्हों को धारण करने से परहेज नहीं करते तथा जिनके आचरण से गंगा गए तो गंगा दास और यमुना गए तो यमुना दास जैसी प्रवृत्ति लक्षित होती है। प्रयागराज महाकुंभ के आयोजन का भी मुट्ठी भर लोग विरोध करने से बाज नहीं आ रहे हैं। आस्था के महाकुंभ को पाखंड बताते हुए कुछ लोगों ने विचार व्यक्त किए, जिसके उत्तर में आस्थावान साधु संतों ने भी अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रयोग किया तथा नास्तिकों को कुंभ क्षेत्र से बाहर का मार्ग दिखा दिया। किसी की आस्था को चुनौती देना या कहां तक उचित है? यदि विरोध करना है तो मानवता को शर्मसार करने वाली प्रथाओं, धार्मिक कुरीतियों व धार्मिक अंधविश्वास का विरोध कीजिए। बारह वर्ष में एक बार आयोजित होने वाले सनातन धर्म से जुड़े महाकुंभ की धार्मिक मान्यताओं पर प्रहार करने का दुस्साहस क्यों करते हो?

- सुधाकर आशावादी, मेरठ

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

3.8 लाख छात्रों ने दी थी बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) की 70वीं संयुक्त प्रारंभिक परीक्षा, जिसे राज्य के 912 केंद्रों पर आयोजित किया गया था। इसी परीक्षा के आयोजन में बड़े पैमाने पर अनियमितताएं बरते जाने का आरोप है।

बीपीएससी परीक्षा

भर्ती प्रक्रिया की साख बचाने की चुनौती

बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) की 70वीं संयुक्त प्रारंभिक परीक्षा को लेकर उठे हालिया विवाद ने प्रतियोगी परीक्षा प्रणाली की गंभीर खामियों को उजागर कर दिया है। जिस भर्ती परीक्षा के माध्यम से प्रतिभाओं को छांटकर प्रशासनिक पदों के लिए चुना जाता है, वही आज गड़बड़ियों के कारण कठघरे में खड़ी है। छात्र इसे रद करके दोबारा से आयोजित करने की मांग कर रहे हैं और मामला अब उच्च न्यायालय में विचाराधीन है। यह प्रकरण व्यवस्था की विश्वसनीयता और सुधार की आवश्यकता पर गंभीरता से विचार करने का आह्वान करता है

कैलाश विश्नोई
उच्च शिक्षा मामलों के जानकार

बिना पेपर लीक या किसी अन्य अनियमितता के भर्ती परीक्षाओं का संपन्न होना बहुत मुश्किल होता जा रहा है। फाइल

भारत में प्रतियोगी परीक्षाएं केवल रोजगार का माध्यम नहीं हैं, ये करोड़ों युवाओं की उम्मीदों, मेहनत और तपस्या का प्रतीक हैं। एक साधारण किसान से लेकर शहरी मध्यवर्गीय परिवार तक, हर किसी के सपनों का केंद्र है यह प्रणाली। परंतु जब इसी व्यवस्था में भ्रष्टाचार, पेपर लीक और प्रशासनिक अनियमितताएं गहराई तक प्रवेश कर जाती हैं, तो यह केवल लाखों छात्रों के सपनों को नहीं, बल्कि शिक्षा की नैतिकता को भी खंडित कर देती हैं।

हाल ही में बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षा को लेकर उठे विवाद ने इन गहराते संकटों की ओर हमारा ध्यान खींचा है। पेपर लीक और परीक्षा केंद्रों पर अव्यवस्था के आरोपों ने यह साबित कर दिया है कि हमारी शिक्षा और परीक्षा प्रणाली कितनी कमजोर नींव पर खड़ी है। छात्रों का आक्रोश और उनकी मांगें केवल इस परीक्षा के दोबारा आयोजन तक सीमित नहीं हैं। वे यह सवाल भी कर रहे हैं कि कब तक ये अनियमितताएं उनके भविष्य के साथ खिलवाड़ करती रहेंगी?

यह स्थिति केवल बीपीएससी तक सीमित नहीं है। भारत में लगभग हर प्रतियोगी परीक्षा इन समस्याओं का सामना कर रही है। प्रश्न पत्र लीक, परीक्षा केंद्रों पर अव्यवस्था, फर्जी परीक्षार्थियों की मौजूदगी और परिणामों में पारदर्शिता का अभाव, ये सभी समस्याएं एक ऐसी परीक्षा प्रणाली की ओर इशारा करती हैं जो केवल नाममात्र की ही निष्पक्षता और योग्यता का आभास कराती है। जब परीक्षा में घोटाले होते हैं या पेपर लीक जैसी घटनाएं सामने आती हैं, तो यह दर्शाता है कि परीक्षा आयोजित करने वाले अधिकारियों और तंत्र में जिम्मेदारी का अभाव है। छात्रों की मेहनत और समय को तो आघात पहुंचता ही है, साथ ही समाज में भी यह संदेश जाता है कि प्रशासन में पारदर्शिता और ईमानदारी की कोई जगह नहीं है।

नकारात्मक प्रभाव : सबसे बड़ी कीमत इन अनियमितताओं की वह युवा चुकाते हैं, जिनके जीवन का हर पहलू इन परीक्षाओं पर निर्भर करता है। सोचिए, एक छात्र जिसने दिन-रात मेहनत करके अपनी तैयारी को अंतिम रूप दिया हो, वह यह जानकर कैसा महसूस करेगा कि उसकी मेहनत किसी पेपर लीक के कारण व्यर्थ हो गई है? यह केवल मानसिक आघात नहीं, बल्कि उनके आत्मविश्वास और उनके भविष्य की योजनाओं पर गहरा प्रहार है। यह समस्या केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहती। यह समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों पर भी गंभीर प्रभाव डालती है। ये प्रतियोगी परीक्षाएं उन छात्रों के लिए सामाजिक असमानता से बाहर निकलने का एकमात्र जरिया हैं। लेकिन जब आर्थिक रूप से समृद्ध और प्रभावशाली वर्ग इस प्रणाली को अपने लाभ के लिए तोड़-मरोड़ लेते हैं, तो यह उन गरीब छात्रों के सपनों को चूर-चूर कर देता है।

कानूनी उपाय : हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा लागू "पब्लिक एग्जामिनेशन (प्रिवेंशन आफ अनफेयर मीन्स) एक्ट, 2024" इस दिशा में एक साहसिक कदम है। यह कानून न केवल परीक्षा घोटालों में शामिल दोषियों को कठोर दंड का प्रविधान करता है, बल्कि यह एक ऐसा तंत्र स्थापित करने का प्रयास करता है जो परीक्षाओं की अखंडता और पारदर्शिता को सुनिश्चित करे। 10 लाख रुपये तक के जुर्माने और पांच साल की सजा के प्रविधान ने यह स्पष्ट कर दिया है कि सरकार इस मुद्दे को गंभीरता से ले रही है। लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल कानून बनाकर समस्या का समाधान किया जा सकता है? नहीं। कानून तभी प्रभावी हो सकता है जब प्रशासनिक तंत्र इसे लागू करने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध हो। इसके लिए शिक्षा आयोगों, परीक्षा केंद्रों और प्रशासनिक अधिकारियों को जवाबदेह बनाना होगा।

सुधार की आवश्यकता : इस संकट का समाधान केवल परीक्षा के दोबारा आयोजन तक सीमित नहीं है। हमें एक दीर्घकालिक और समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। सबसे पहले, परीक्षा प्रणाली में तकनीकी सुधारों को लागू करना अनिवार्य है। ब्लाकचेन तकनीक के माध्यम से प्रश्न पत्रों को सुरक्षित करना, एआइ आधारित निगरानी प्रणाली का उपयोग और डिजिटल प्रश्न पत्र जैसे उपाय इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं। लेकिन केवल तकनीकी समाधान पर्याप्त नहीं हैं। परीक्षा प्रणाली को नैतिक दृष्टिकोण से मजबूत करना भी उतना ही आवश्यक है।

इस समस्या का एक और पहलू है सामाजिक जागरूकता। हमें एक ऐसी संस्कृति विकसित करनी होगी जहां ईमानदारी और योग्यता को सामाजिक मान्यता प्राप्त हो। छात्रों को भी अपनी भूमिका समझनी होगी। परीक्षा में नकल करने या किसी अन्य अनैतिक माध्यम का सहारा लेने की प्रवृत्ति समाज में इस समस्या को और गहरा करती है। हमें छात्रों को सिखाना होगा कि शिक्षा केवल नौकरी पाने का साधन नहीं, बल्कि एक नैतिक समाज के निर्माण का माध्यम है।

हालिया परीक्षा विवाद केवल एक घटना नहीं है। यह हमारी शिक्षा प्रणाली और समाज की नैतिकता के संकट का प्रतीक है। अगर हम इस अवसर को केवल परीक्षा के दोबारा आयोजन तक सीमित रखेंगे, तो यह समस्या बार-बार हमारे सामने आएगी। हमें इस संकट से सबक लेते हुए अपनी परीक्षा प्रणाली को तकनीकी और नैतिक दोनों दृष्टियों से मजबूत करना होगा। यह समय है कि हम परीक्षा प्रणाली को केवल एक शैक्षणिक प्रक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि समाज की नैतिक संरचना के प्रतीक के रूप में देखें। इसे पारदर्शी और निष्पक्ष बनाने के लिए तत्काल कदम उठाने होंगे। केवल तभी हम एक ऐसा भारत बना पाएंगे जहां हर छात्र के सपने को उसकी मेहनत और योग्यता के आधार पर पंख मिलें।

ताकि परीक्षा प्रणाली में बना रहे भरोसा

रोहित प्रियदर्शी
लोक नीति विश्लेषक

बिहार लोक सेवा आयोग की हालिया आयोजित एक परीक्षा में हुए विवाद और उसके परिणामस्वरूप छात्रों का बढ़ा आक्रोश यह दर्शाता है कि हमारी परीक्षा प्रणाली में बुनियादी और संरचनात्मक बदलाव की आवश्यकता है। छात्रों के लिए परीक्षा एक अवसर है, जो उनके भविष्य की दिशा तय करता है, लेकिन जब यह अवसर अनियमितताओं और कदाचार की भेंट चढ़ जाता है, तो यह उनके विश्वास को तोड़ने का कार्य करता है। जब परीक्षा प्रक्रिया में पारदर्शिता, न्याय और उत्तरदायित्व की कमी हो तो यह न केवल एक प्रशासनिक विफलता होती है, बल्कि समाज के उन मूल्यों पर भी हमला होता है, जो हमें सही दिशा में मार्गदर्शन करते हैं।

छात्रों का यह आक्रोश केवल एक परीक्षा को लेकर नहीं है, बल्कि यह एक लंबी लड़ाई का हिस्सा है, जो वे हर परीक्षा में हर बार लड़ते हैं। उनका विरोध केवल पेपर रद करने की मांग नहीं, बल्कि उस व्यवस्था को चुनौती देने का प्रयास है, जिसने उन्हें बार-बार निराश किया है। यह आक्रोश इस बात का प्रतीक है कि वे अपने प्रयासों को मूल्यवान मानते हैं और चाहते हैं कि उनके संघर्ष को निष्पक्ष रूप से आंका जाए। पेपर लीक, सीसीटीवी का न होना और समय पर पेपर का वितरण न होना जैसे मुद्दे दर्शाते हैं कि प्रशासन की प्राथमिकताएं कहीं अधिक केंद्रित नहीं हैं, जिससे छात्रों के भविष्य के प्रति जिम्मेदारी में गंभीर लापरवाही पाई जाती है। छात्रों का यह तर्क सही है कि यदि एक केंद्र के दोष को दूर करने के लिए परीक्षा दोबारा से आयोजित की जाती है, तो यह उन छात्रों के साथ अन्याय होगा, जो अन्य केंद्रों पर भी असमान परिस्थितियों का सामना कर चुके हैं।

बिहार लोक सेवा आयोग जैसी संस्थाएं केवल तकनीकी समाधान ही न खोजें, बल्कि पूरे परीक्षा तंत्र के संरचनात्मक बदलाव पर भी विचार करें। पेपर लीक, सीसीटीवी का न होना और सुरक्षा उल्लंघन जैसी समस्याओं को दूर करने के लिए उन्नत तकनीकी उपायों का उपयोग करना आवश्यक है। परीक्षा केंद्रों में निगरानी को मजबूती से लागू करना, समय पर पेपर का वितरण सुनिश्चित करना और प्रश्नपत्र की गुणवत्ता को सुनिश्चित करना कुछ ऐसे कदम हैं, जिनसे न केवल इन समस्याओं से निपटा जा सकता है, बल्कि छात्रों के विश्वास को भी बहाल किया जा सकता है।

यह केवल प्रशासन का ही दायित्व नहीं है कि वह निष्पक्षता और पारदर्शिता बनाए रखे, बल्कि समाज को भी यह समझना चाहिए कि शिक्षा प्रणाली का सुधार केवल सरकार का नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। हम एक ऐसे समाज में जीते हैं, जहां समानता और अवसर की समानता को बनाए रखना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। छात्र केवल अंक नहीं, बल्कि अपने संघर्ष का मूल्य भी चाहते हैं। जब उन्हें यह आभास होता है कि उनके मेहनत के परिणाम को बिना किसी घोटाले या कदाचार के सही तरीके से आंका जा रहा है, तभी समाज और प्रशासन के प्रति उनका विश्वास पुनर्निर्माण होगा। बीपीएससी परीक्षा विवाद का समाधान केवल पुनर्परीक्षा तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह एक ऐसा बिंदु है, जहां हमें अपने समाज के लोकतांत्रिक मूल्यों और न्याय की धारणा पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। क्या हम एक ऐसी व्यवस्था बना सकते हैं, जो छात्रों की मेहनत को सही तरीके से आंके, जहां भ्रष्टाचार और घोटाले को पूरी तरह से नकारा जाए? यह सवाल केवल बीपीएससी परीक्षा का नहीं, बल्कि हर उस प्रणाली का है, जो हमारे समाज की नींव को मजबूत बनाती है। लिहाजा एक ऐसी व्यवस्था बननी चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ी को एक निष्पक्ष, न्यायपूर्ण और पारदर्शी शिक्षा प्रणाली मिल सके।

खरी-खरी

किसी तरह मैं भी सम्मानित हो जाऊं

धर्मेंद्र जोशी

आज सुबह-सुबह वरिष्ठ साहित्यकार उबाल जी से भेंट हो गई। देखते ही उबल पड़े। दरअसल जब से नवोदित साहित्यकार जुगनू जी को 'साहित्य हस्ताक्षर' सम्मान मिला है, उनके चेहरे पर भीतर से उबलने के प्रमाण प्रत्यक्ष दिखाई दे रहे हैं। बरसों की साहित्य साधना के बावजूद शहर स्तर के सम्मान से वंचित होना उन्हें गहरे अवसाद और निराशा की ओर धकेल रहा है।

बहरहाल, उनके बिखरे बाल इस बात की ओर इशारा कर रहे थे कि वे अब अपनी रचनाओं को लेकर बहुत गंभीर हैं और उन्हें किसी गुणी संपादक की छत्रछाया में एक सूत्र में पिरो कर किताब का रूप देना चाहते हैं, ताकि साहित्य सम्मान के लिए दावेदारी पुख्ता कर सकें। इस पुनीत कार्य के लिए उन्होंने अपने प्रबल वैचारिक विरोधी रहे विकट जी को संपादक का दायित्व देने का पक्का फैसला कर लिया है। यहां तक कि बरसों से रहे मतभेद को भी ताक में रखने का निश्चय कर कर चुके हैं, बस उनका एक ही लक्ष्य है कि येन केन प्रकारेण किताब छप जाए और उनकी कीर्ति साहित्य के आकाश में आच्छादित हो जाए।

जब उन्होंने विकट जी से संपर्क किया तो पहली बार में कोई विशेष रुचि नहीं दिखाई और संपादक के भार को उठाने के लिए तैयार नहीं हुए, परंतु जैसे तैसे मान गए और उनके पहले काव्य संग्रह 'लहूलुहान' को मूर्त रूप दे दिया। अब अगला और महत्वपूर्ण कदम काव्य संग्रह के विमोचन का था। इसके लिए उन्होंने बाकायदा साहित्यकारों को प्रति वर्ष सम्मानित करने वाली संस्था 'ससक' (सभी को सम्मानित करेंगे) के निधि प्रदत्त आजीवन सदस्य भी बन चुके हैं। सरकार द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कार के लिए असरदार अधिकारी और समिति प्रमुख की गहन खोज बीन करने के लिए भी नाना प्रकार के जतन कर उनके चलायमान फोन नंबरों की सूची तैयार कर ली है, ताकि विलंबित पुरस्कारों में उनका नाम भी शामिल हो जाए। अब तो उबाल जी का एक मात्र यही लक्ष्य है कि जीवन की संध्या बेला में सम्मानित हो जाऊं और परलोक वासी होने पर साहित्य सम्मान से विभूषित कहलाऊं।

पोस्ट

इस समय विपक्षी गठबंधन बिखरा हुआ दिख रहा है और अब उसमें आरपार की लड़ाई हो रही है।
आदेश रावल@AadeshRawal

अरविंद केजरीवाल अपने राजनीतिक जीवन की सबसे मुश्किल लड़ाई लड़ रहे हैं। तीसरी बार सत्ता में वापसी के लिए आम आदमी पार्टी को वही सब हथकंडे अपनाने पड़ रहे हैं, जिनसे भारतीय राजनीति को मुक्त करने के लिए यह पार्टी अस्तित्व में आई। सत्ता के दस साल में केजरीवाल का पूरा चरित्र बदल गया।
समीर चौगांवकर@semeerc

अच्छी बात है कि बीसीसीआइ ने खिलाड़ियों के लिए नई गाइडलाइन बनाई है। देखने वाली बात यही होगी कि इस गाइडलाइन को अमल में कैसे लाया जाता है। विक्रम साठये@vikramsathaye

वर्षों तक नजरअंदाज किए गए करुण नायर का घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन बहुत ही प्रेरक है कि कभी भी सपने देखना मत छोड़ो और प्रयास करना बंद मत करो। जब टेस्ट टीम संक्रमण के दौर से गुजर रही है तो नायर एकदम सटीक मौके पर रन बनाकर अपना दावा पेश कर रहे हैं।
मो. कैफ@MohammadKaif

डूबते पारस के घर तिनका बन पहुंचे लालू

अरुण अशेष
राज्य ब्यूरो प्रमुख, बिहार

बिहार डायरी

बिहार की राजनीति में मकर संक्रांति के अवसर पर बदलाव की परंपरा इस बार भी कायम रही। हां, बड़ा बदलाव नहीं हुआ। सरकार स्थिर रही, जबकि इसकी संरचना में फेरबदल की संभावना कुछ महीने पहले से व्यक्त की जा रही थी। छोटा बदलाव यह हुआ कि राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व केंद्रीय मंत्री पशुपति कुमार पारस ने पाला बदल लिया। वह एनडीए से छिटक कर महागठबंधन में शामिल हो गए, क्योंकि एनडीए में उनका सम्मान नहीं हो रहा था।

अपने पांच सांसदों के साथ मोदी सरकार को मजबूती देने वाले पारस 2024 के लोकसभा चुनाव तक बेहद कमजोर हो गए थे। इतने कमजोर कि 2019 में जीती अपनी हाजीपुर लोकसभा सीट भी नहीं बचा पाए। एनडीए ने पारस के बदले उनके भतीजे और लोजपा रा के अध्यक्ष चिराग पासवान को यह सीट दे दी। चिराग जीते और अभी केंद्र सरकार में मंत्री हैं। पारस ने उस समय प्रतिरोध नहीं किया। वह निराश भी नहीं हुए। क्योंकि उन्हें भरोसा था कि एनडीए उनके पूर्व के योगदान के बदले में पुरस्कृत करेगा। केंद्र में तीसरी बार मोदी के नेतृत्व में सरकार गठन के समय ही पारस की आस जगी थी। उस पर गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात ने उन्हें आत्मविश्वास से भर दिया। चर्चा होने लगी कि पारस जल्द ही किसी राजभवन की शोभा बढ़ाएंगे। कुछ नहीं तो उन्हें केंद्रीय स्तर के आयोग की अध्यक्षता मिल जाएगी। जबकि हुआ इसके उलट। पारस की पार्टी को एनडीए ने बैठकों में बुलाना भी छोड़ दिया। क्योंकि चिराग को यह पसंद नहीं था कि उनके चाचा एनडीए की बैठकों में बराबरी में बैठें।

हालांकि, पारस का विश्वास नहीं डोला। वे अंतिम आस में बैठे थे कि मकर संक्रांति पर आयोजित भोज में एनडीए के सभी घटक दलों के नेता उनके घर जुटेंगे। यहां और बुरा हुआ। पारस ने एनडीए के कुछ बड़े नेताओं से निमंत्रण देने के लिए समय मांगा था। समय नहीं मिला और संवादवाहकों के माध्यम से भेजे गए निमंत्रण को एनडीए के बड़े नेताओं ने स्वीकार नहीं किया। राजनीति के चतुर खिलाड़ी लालू प्रसाद निमंत्रण की प्रतीक्षा ही कर रहे थे। उन्हें पारस ने घर जाकर निमंत्रित किया। अगले दिन लालू अपने बड़े पुत्र तेज प्रताप और समर्थकों के साथ पारस के घर पहुंचे और रंग जमा दिया। अब यह तय माना जा रहा है कि इस साल होने वाले विधानसभा चुनाव में पारस की पार्टी महागठबंधन के साथ मिल कर लड़ेगी। उनकी मांग भी अधिक नहीं है। विधानसभा की दस सीटें भी मिल जाएं तो खास नेताओं के स्वजन चुनाव लड़ लेंगे। कुछ सीटों पर भी जीत हुई तो पारस को नया जीवन मिल जाएगा।

मकर संक्रांति भोज के अवसर पर पशुपति कुमार पारस के साथ लालू प्रसाद। फाइल

विधानसभा चुनाव में पारस महागठबंधन के लिए कितना कारगर होंगे, इसके बारे में अभी विश्वास के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता है। लेकिन, 2020 के विधानसभा चुनाव के समय से तुलना करें तो एनडीए को नुकसान हुआ है। पारस उस समय एकीकृत लोजपा के नाते एनडीए के साथ थे। तब चिराग अकेले चुनाव मैदान में गए। पारस ने अपनी प्रतिबद्धता नहीं बदली। वे एनडीए के पक्ष में डटे रहे। वही पारस अब महागठबंधन के साथ हैं तो उनकी क्षमता का मूल्यांकन शून्य के रूप में नहीं किया जा सकता है। पारस से पहले विकासशील इंसान पार्टी के संस्थापक मुकेश सहनी भी एनडीए से अलग होकर महागठबंधन में शामिल हो चुके हैं। सहनी 2020 में एनडीए के साथ थे। उन्हें विधानसभा की 11 सीटें दी गई थीं, जिनमें चार पर जीत हुई थी। लोकसभा चुनाव केंद्रीय मुद्दे पर लड़ा जाता है, इसलिए उसमें स्थानीय मुद्दे और वोटरों के छोटे समूह को प्रभावित करने वाले नेता बड़ी भूमिका नहीं निभा पाते हैं। लेकिन, विधानसभा चुनाव में कम वोट काटने वाले नेता भी परिणाम को प्रभावित कर देते हैं। वर्ष 2020 में चिराग ने यही किया था। उनके कई उम्मीदवार कम वोट लेकर स्वयं तो हारे ही, एनडीए के वोट बैंक में बिखराव कर जदयू को भी भारी नुकसान पहुंचाया।

इसमें कोई दो राय नहीं कि पारस बीते सात-आठ साल से एनडीए से जुड़े रहे हैं। उनके समर्थक भी एनडीए को ही पसंद करते रहे हैं। ऐसे में रालोजपा के अलग होने से जो कुछ भी नुकसान होगा, एनडीए का ही होगा। वहीं महागठबंधन लाभ की स्थिति में रहेगा। यही फार्मूला मुकेश सहनी पर भी लागू होगा। वैसे, महागठबंधन और एनडीए-दोनों विधानसभा सीटों की संख्या को लेकर उलझन में हैं। महागठबंधन का हिसाब यह बैठ रहा है कि गत चुनाव की तुलना में वह कांग्रेस को कम सीटें देगा। बची हुई सीटों का बंटवारा रालोजपा, विकासशील इंसान पार्टी और वाम दलों के बीच होगा। कांग्रेस को 2020 में 70 सीटें दी गई थीं। महागठबंधन उसे 2015 की स्थिति में लाना चाहता है, जब उसे 41 सीटें दी गई थीं।

जागरण जनमत कल का परिणाम

क्या आठवें वेतन आयोग का गठन आवश्यक हो गया था?

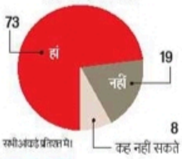

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या करुण नायर को भारतीय टीम में जगह दी जानी चाहिए?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

चाकू चला नवाब पर किंतु बहुत है पेंच,
पुलिस पतंगबाजी करे डोर रही है खेंच।
डोर रही है खेंच सिरा वह ढूंढ न पाए,
नई-नई अफवाह पतंगों की लहराए।
खुला किस तरह द्वार बताओ यह तो काकू,
जिससे अंदर आय मार कर भागा चाकू!
- ओमप्रकाश तिवारी

प्रयागराज महाकुंभ

सुर्खियां बटोर रहीं विसंगतियां

इंटरनेट मीडिया के माध्यम से बड़ी संख्या में लोग महाकुंभ को देख-समझ रहे हैं। ऐसे में किसी भी प्रकार की विसंगति से बचा जाना चाहिए, ताकि इस आयोजन की गरिमा पूरी तरह कायम रहे

अमिय भूषण
अध्येता, भारतीय संस्कृति परंपरा

प्रयागराज महाकुंभ का भव्य आयोजन जारी है। वास्तव में यह ऐतिहासिक आयोजन है, किंतु इसमें कई विसंगतियां भी सुर्खियां बटोर रही हैं। जिस संस्कृति में लैंगिक आधार पर भेदभाव का कोई इतिहास नहीं है, वहां लिंग भेद के आधार पर धर्म व्यवस्थाओं का बनना वाकई दुर्भाग्यपूर्ण है। पृथक किन्नर और महिला अखाड़े के पीछे की आखिर मंशा क्या है? महाकुंभ में इन्हें पृथक स्नान, अलग से शोभायात्रा पेशवाई आदि की आवश्यकता क्यों आन पड़ी? जबकि सनातन मान्यतानुसार, इस अवसर पर मनुष्यों के अतिरिक्त अन्य जाति एवं लोक के निवासी भी आते हैं। इन्हीं में देव, दानव, भूत-पिशाच, यक्ष, गंधर्व, नाग और किन्नर इत्यादि का उल्लेख है।

बात सनातन परंपरा की करें तो सदियों से 13 अखाड़ों के अंतर्गत ही सभी भारतीय मत, पंथ एवं संप्रदाय एकजुट रहे हैं। ये अखाड़े धर्म की रक्षा और प्रचार के लिए बनाए गए थे। धर्म व्यवस्थाओं के उचित प्रकार से संचालन में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जिसे ये अपने संप्रदाय के आचार्य एवं अखाड़े के साधु-संत संग मिल बैठ कर तय करते थे। वहीं, अन्य संप्रदाय एवं अखाड़ों के संग भी इनका समन्वय रहा है। इस नाते इनकी स्थापना गहन चर्चा, विमर्श व संवादों का परिणाम है। यह पूरी व्यवस्था गुरु शिष्य परंपरा पर आधारित है, जिसका एक सिरा ग्रंथ तो दूसरा देवता विशेष को जाता है। वैसे इसके पीछे दर्शन, परंपरा, रीति रिवाज उपासना और शास्त्र प्रमाण मौजूद है। इन अखाड़ों का धर्म एवं संस्कृति के लिए गौरवशाली योगदान भी रहा है। ऐसे में किसी नए प्रयोग का क्या मतलब है?

वैसे बात यहीं पर नहीं रुक रही है। स्त्री और पुरुषों के मध्य तीसरे लिंग के लोगों को धर्माचार्यों के पदों पर विभूषित करने का चलन शुरू हो गया है। इस महाकुंभ में इनमें से कइयों को विभिन्न वैष्णव संप्रदायों के सर्वोच्च आचार्य पद पर बिठाने का कुप्रयास हो रहा है। ये लोग हिंदू धर्म के अधिकृत प्रवक्ता के तौर पर समाज को संबोधित कर रहे हैं। जिस धर्म में स्नान से लेकर भोजन विधान तक के मंत्र लिखित रूप में हों, आखिर वहां धर्माचार्यों की नियुक्ति एवं उपाधि व पदवियों के लिए कोई व्यवस्था कैसे नहीं होगी? बात खालसा पंथ के तख्त अर्थात केंद्र, पीठ स्थान एवं यहां की व्यवस्थाओं की करें तो कोई किंतु-परंतु नहीं है। जबकि सनातन की शाखा रूप में यह गुरु गोविंद सिंह द्वारा कुछ सौ वर्ष पूर्व प्रारंभ किया गया है। ऐसे में विश्व के सर्वाधिक पुराने, जागृत एवं शाश्वत धर्म में ऐसा होना दुखद है।

सम्मान एवं उपाधियां : हमारे यहां विभिन्न संप्रदाय एवं मत, पंथ के सर्वोच्च केंद्र पूर्व निर्धारित हैं। इनकी नियुक्ति सांप्रदायिक प्रविधान, पूर्ववर्ती आचार्य एवं संप्रदाय के आचार्यगणों के मंतव्य से होनी चाहिए। बात सनातन के प्रचार तथा भारतीय संस्कृति के संचार संबंधित सेवाओं की हो तो इसके लिए सम्मान और उपाधियां मिलनी चाहिए। भारत के दूरस्थ क्षेत्र एवं विश्व के कई अन्य देशों में हिंदू धर्म के प्रसार में विभूतियां कार्यरत हैं, जिन्हें भी उपाधियां दी जा सकती हैं। इन्हें आचार्य, धर्माचार्य, महंत, मंडलेश्वर, महामंडलेश्वर आदि पदों पर नियुक्त किया जा सकता है। किंतु आचार्य, महामंडलेश्वर, अखाड़ा परिषद अध्यक्ष और विभिन्न संप्रदाय के जगतगुरु की पदवी की घोषणा नहीं होनी चाहिए। ये पीठ और इनके प्रमुखों का पद समस्त धर्म व्यवस्थाओं के निर्धारण का स्थान है।

प्रयागराज में आयोजित भव्य दिव्य महाकुंभ। फाइल

यह इस पुरातन धर्म के निरंतर प्रवाहमान होने का एक प्रमुख कारण भी है। इसलिए इसमें इस प्रकार के प्रयोग एवं हस्तक्षेप नहीं होने चाहिए। बाकी यहां सभी के लिए सनातन धर्म की शिक्षा का मार्ग खुला है। किंतु बिना पात्रता के किसी को भी साधुओं सा वस्त्र, नाम, संबोधन व स्नान संबंधी विशेषाधिकार देना सही नहीं कहा जा सकता है। इस कुंभ में एक माडल अनावश्यक रूप से चर्चा में है। बिना किसी योगदान अथवा धर्म संबंधी उपलब्धियों के ही ये प्रचार के केंद्र में हैं। यहां तक कि इसी बहाने सबसे सुंदर साध्वी की चर्चा भी चल पड़ी है। जबकि कुंभ तो युगों से तपश्चर्या के लिए जाना जाता रहा है।

वास्तव में यह महाकुंभ अपने इन अनूठे, अद्भुत और विस्मयकारी बातों के नाते भी सुर्खियों में है। महाकुंभ से जुड़े विविध प्रकार के इंटरनेट मीडिया पोस्ट और समाचारों ने इस चर्चा को विस्तार दिया है। इन सभी कारणों से कुंभ मेला सूचना वेबसाइट भी सुर्खियों में है। इसके माध्यम से पूरी दुनिया में महाकुंभ को जानने की होड़ है। अज्ञानता, दुर्भावना और दुराग्रहपूर्ण पूर्व धारणाओं के नाते किसी को भी साध्वी, संत तथा जगतगुरु कह दिया जाना ठीक नहीं है। इसके पीछे सुनियोजित प्रचार संग संचार माध्यमों का भीड़-भाड़ भी जिम्मेदार है। ऐसे में इस बारे में भी विचार किया जाना चाहिए।

****

दैनिक जागरण

पुरुषार्थ से अर्जित संपदा ही स्थायी होती है

जल्द हो जनगणना

यह अच्छा है कि मोदी सरकार जनगणना कराने की तैयारी कर रही है। इसमें और देरी नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि कोविड महामारी और फिर लोकसभा चुनावों के कारण पहले ही बहुत देर हो चुकी है। इसके चलते नीतियों का निर्माण 2011 की जनगणना के आंकड़ों के आधार पर ही हो रहा है। सरकार के सामने समस्या केवल यह नहीं है कि जनगणना शीघ्र कराई जाए। उसके सामने समस्या यह भी है कि जाति आधारित जनगणना की विपक्षी दलों की मांग का सामना कैसे किया जाए। विपक्षी दल और विशेष रूप से कांग्रेस न केवल जाति जनगणना पर जोर दे रही है, बल्कि इसे लेकर सरकार पर दबाव भी बना रही है। सरकार को इस दबाव का प्रतिकार करना होगा, क्योंकि जाति जनगणना की मांग केवल संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थों के इरादे से की जा रही है। जाति जनगणना का उद्देश्य समाज को चुनावी लाभ के लिए जातियों में गोलबंद करना और जातिगत आरक्षण को तूल देकर वोटबैंक की राजनीति को धार देना है। यह सही है कि भारतीय समाज जातियों में विभाजित रहा है, लेकिन अब जब यह विभाजन लगातार कम होता जा रहा है, तब जाति जनगणना कराकर जाति की राजनीति करने वालों को सामाजिक विभाजन का अवसर नहीं दिया जाना चाहिए। इसलिए और भी नहीं, क्योंकि जाति की राजनीति करने वाले जातीय वैमनस्य को भी हवा देते हैं।

जाति जनगणना से केवल विभाजनकारी प्रवृत्तियों के सिर उठाने का ही खतरा नहीं है। यह एक बेहद जटिल काम भी है और इसीलिए 2011 में मनमोहन सरकार ने जाति जनगणना कराने के बाद भी उसके आंकड़े सार्वजनिक करना सही नहीं समझा था। तथ्य यह भी है कि स्वतंत्रता के बाद जाति जनगणना की आवश्यकता नहीं समझी गई। जाति जनगणना इसलिए आसान काम नहीं है, क्योंकि कई ऐसी जातियां हैं, जिनकी एक राज्य में सामाजिक और आर्थिक हैसियत दूसरे राज्य से बिल्कुल भिन्न है। इतना ही नहीं, कहीं उनकी गिनती अनुसूचित जाति में होती है तो कहीं पिछड़ी जाति में। जाति जनगणना के पीछे यह तर्क दिया जाता है कि पिछड़ेपन का एकमात्र आधार जाति है। एक समय ऐसा था, लेकिन अब हालात बदल चुके हैं। आज शहरों में किसी को इससे मतलब नहीं कि कौन किस जाति का है। जाति जनगणना कराने का मतलब होगा देश को फिर से जातीय विभाजन की ओर ले जाना। इससे बचने में ही समझदारी है। आज आवश्यकता तो यह पता लगाने की है कि किसकी आर्थिक हैसियत कैसी है। जनगणना के जरिये यह काम अच्छे से किया जाना चाहिए, ताकि आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों का उत्थान करने वाली सटीक नीतियां बनाई जा सकें। आज के युग में आर्थिक उत्थान ही समग्र विकास की कुंजी है। आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्ति सामाजिक रूप से स्वतः ही सशक्त हो जाता है।

खनन क्षेत्रों का सर्वेक्षण

यह किसी से छिपा नहीं है कि उत्तराखंड में राजस्व का एक प्रमुख स्रोत खनन है। चालू वित्तीय वर्ष में ही खनन से 686 करोड़ रुपये का राजस्व सरकार को मिल चुका है और वित्तीय वर्ष की समाप्ति तक इसके एक हजार करोड़ पार पहुंचने की संभावना है। बावजूद इसके खनन को केवल राजस्व प्राप्ति ही नहीं, बल्कि पर्यावरणीय प्रभाव के हिसाब से भी देखने की जरूरत है। विभिन्न हिस्सों में जिस बेतरतीब ढंग से खनन हो रहा है, उसने चिंता व चुनौती, दोनों ही बढ़ा दिए हैं। न्यायालय से लेकर नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल तक इसे लेकर चिंता जता चुके हैं। असल में उत्तराखंड पर्यावरणीय दृष्टि से बेहद संवेदनशील है। हर साल ही मानसून में भूस्खलन, नदियों की बाढ़ से राज्य जूझता है।

> पर्यावरणीय दृष्टि से संवेदनशील उत्तराखंड में उपखनिज का चुगान विज्ञान सम्मत ढंग से होना जरूरी है

यही नहीं, भूकंपीय दृष्टिकोण से उत्तराखंड का अधिकांश क्षेत्र संवेदनशील एवं अति संवेदनशील जोन चार एवं पांच के अंतर्गत है। ऐसे में अनियोजित ढंग से होने वाले खनन के कारण चिंता बढ़ना स्वाभाविक है। यद्यपि, पर्वतीय क्षेत्र से आने वाली नदियां अपने साथ बड़े पैमाने पर रेत, बजरी एवं पत्थर लेकर आती हैं। ऐसे में इसका विज्ञान सम्मत चुगान होना आवश्यक है, लेकिन जब यह नहीं होता है तो स्थिति विकट हो जाती है। ऐसे में उपखनिज का विज्ञानिक ढंग से चुगान अथवा खनन जरूरी है। इसके साथ ही सीबीआरआइ समेत अन्य राष्ट्रीय संस्थानों को निर्माण कार्यों में प्रयुक्त होने वाली सामग्री का विकल्प भी तलाशना होगा। यद्यपि, कुछ विकल्प तलाशे भी गए हैं, लेकिन ये आमजन की पहुंच से बाहर हैं।

प्रोत्साहन की प्रतीक्षा में छोटे उद्यम

गौरव वल्लभ

भारत में एमएसएमई की कर्ज तक पहुंच केवल 14 प्रतिशत है, जबकि चीन में यह 37 और अमेरिका में 50 प्रतिशत तक है

यदि समावेशी विकास के विकल्पों पर विचार करें तो सबसे प्रमुख विकल्प सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम यानी एमएसएमई के रूप में सामने आता है। यदि भारत इस दशक में एमएसएमई क्षेत्र का अपेक्षित रूप से कायाकल्प कर सके तो विकास को समावेशी बनाने में बड़ी सहायता मिलेगी। एमएसएमई परिदृश्य पर दृष्टि डालने से इस क्षेत्र की भूमिका और उससे संबंधित संभावनाएं प्रत्यक्ष रूप में प्रकट होती हैं। इस समय देश में 6.34 करोड़ छोटे उद्यम सक्रिय हैं। इनके जरिये 10 करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार मिला हुआ है। वे जीडीपी में 30 प्रतिशत से अधिक का योगदान कर रहे हैं। ये थाइलैंड और स्वीडन की आर्थिकी के बराबर हैं। इसके बावजूद इस क्षेत्र की संभावनाओं को अभी तक पूरी तरह से भुनाया नहीं जा सका है, क्योंकि कई अवरोध उनकी राह रोके हुए हैं। आगामी बजट को इन अवरोधों को दूर करने की दिशा में समुचित उपाय करने चाहिए।

एमएसएमई की राह में सबसे बड़ी बाधा वित्तीय संसाधनों तक पहुंच है। यूके सिन्हा समिति के अनुसार ये इकाइयां करीब 240 से 300 अरब डालर की फंडिंग की कमी से जूझ रही हैं। अर्न्स्ट एंड यंग की रिपोर्ट के अनुसार भारत में एमएसएमई की कर्ज तक पहुंच केवल 14 प्रतिशत है, जबकि चीन में यह 37 और अमेरिका में 50 प्रतिशत तक है। ऐसे में जर्मनी का केएफडब्ल्यू माडल भारत के लिए कारगर साबित हो सकता है। यह सरकारी स्वामित्व वाला एक विकास बैंक है, जो क्रेडिट गारंटी और तकनीकी सहायता प्रदान करते हुए वाणिज्यिक बैंकों के जरिये द्वितीयक स्तर पर काम करता है। इस माडल में ऋणदाता के स्तर पर जोखिम घट जाता है, तो निजी क्षेत्र को निवेश प्रोत्साहन मिलने के साथ ही न्यूनतम नाकामी दर के साथ नवाचार भी बढ़ता है। भारत भी क्रेडिट गारंटी फंड ट्रस्ट फार माइक्रो एंड स्माल एंटरप्राइजेज यानी सीजीटीएमएसई का दायरा बढ़ाकर इस माडल से लाभ उठा सकता है।

डिजिटल मंचों के माध्यम से भी एमएसएमई की वृद्धि को पंख लगाए जा सकते हैं। भारतीय एमएसएमई द्वारा डिजिटल प्रणालियों को अपनाने की दर केवल 20 प्रतिशत है, जबकि ताइवान में यह 91 और सिंगापुर में 95 प्रतिशत तक है। रेडसीर के अनुसार भारत में करीब साढ़े छह करोड़ एमएसएमई में से 77 लाख ही खुद को डिजिटल स्तर पर ढाल पाए हैं। उत्पादकता एवं प्रतिस्पर्धा क्षमताएं बढ़ाने की दृष्टि से डिजिटल कायाकल्प अपरिहार्य हो गया है। सिंगापुर ने सब्सिडी,

अवधेश राजपूत

प्रशिक्षण एवं समाधान प्रक्रियाओं की सहायता से डिजिटल विस्तार को 95 प्रतिशत तक बढ़ाने में सफलता हासिल की है। जापान ने भी इस दिशा में टेक्निकल सेंटर्स स्थापित कर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। भारत को भी आइटी कंपनियों के साथ मिलकर 100 डिजिटल ट्रांसफार्मेशन सेंटर्स बनाने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।

बाजार तक पहुंच भी एमएसएमई के लिए बाधा बनी हुई है। निर्यात में 49 प्रतिशत की हिस्सेदारी के बावजूद ये उद्यम वैश्विक वैल्यू चेन में अपेक्षित रूप से लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। इस स्थिति को सुधारने के लिए भारत को निर्यात विकास कोष की स्थापना करनी चाहिए। साथ ही बाजार से जुड़ी सूचनाओं के लिए एक डिजिटल प्लेटफार्म भी उपयोगी रहेगा, जिसमें विदेश व्यापार महानिदेशालय यानी डीजीएफटी पोर्टल जैसे टूल की मदद ली जा सकती है। इससे प्राप्त सूचनाओं से जरूरतमंद उद्यमों की आवश्यकताओं की तत्काल पूर्ति में सहायता मिलेगी। अमेरिका में ऐसी ही व्यवस्था है। इससे तत्काल ऋण मंजूरी और व्यापक वित्तीय समावेशन की स्थिति सुधरती है। भारत में भी निर्यात केंद्रित एमएमएसई के लिए उचित आधार तैयार कर वैश्विक बाजार तक उनकी बेहतर पहुंच बनाई जा सकती है।

सुगम कर एवं अनुपालन व्यवस्था से एमएमएमई पर प्रशासनिक बोझ घटने के साथ ही उन्हें संगठित बाजार में स्वयं को सुगठित करने में प्रोत्साहन मिलेगा। अभी इन उद्यमों को जीएसटी फाइल से लेकर आयकर ब्योरा देने जैसी जटिल प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है, जिससे उनकी परिचालन लागत बढ़ती है। इसमें ब्राजील के सिंप्लेस कार्यक्रम से सीख ली जा सकती है, जिसके जरिये एकीकृत तंत्र बनाया जाए, जिसमें सरलीकृत दरों और पूर्वनियोजित प्रतिवेदन जैसे प्रविधानों की सुविधा उपलब्ध हो। इसमें एक ही बार में सभी मानकों की पूर्ति संभव हो। जीएसटी सहज और उद्यम पंजीकरण जैसे मौजूदा प्लेटफार्म भी ऐसी सुविधाओं को नया आयाम प्रदान कर सकते हैं। संक्रमण अवधि में भी इन उद्यमों को सहारा देने की पर्याप्त व्यवस्था करनी होगी। इससे उनकी वृद्धि के साथ ही आर्थिकी में उनका समावेशन सुगम होगा। रियल टाइम निगरानी से भी उनकी विभिन्न समस्याओं पर नजर रखते हुए उनके यथासंभव समाधान के प्रयास किए जाएं। जैसे सिडबी के एमएसएमई पल्स के जरिये कर्ज का प्रवाह तो डीजीएफटी के माध्यम से बाजार तक पहुंच और निर्यात प्रदर्शन को सुधारा जा सकता है। कौशल विकास की कड़ी को भी मजबूत करना होगा। ऐसे उपायों को प्रभावी रूप से अमल में लाने के लिए एमएसएमई मंत्रालय के अंतर्गत एक उच्च-अधिकार प्राप्त एमएसएमई ट्रांसफार्मेशन काउंसिल गठित की जानी चाहिए। नियोजन से लेकर कार्यान्वयन तक ऐसे निकाय की जिम्मेदारी तय करना भी जरूरी होगा। निःसंदेह इन उपायों को आजमाने से कुछ खर्च बढ़ेगा, मगर हमें उनसे मिलने वाले फायदों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। एमएसएमई से जुड़ी मलेशिया की योजना प्रमाण है कि ऐसे उपाय फलदायी सिद्ध होते हैं। इनके जरिये 2018 से 2023 के दौरान मलेशिया की जीडीपी में एमएसएमई का योगदान 32 से बढ़कर 38 प्रतिशत हो गया। यदि भारतीय आवश्यकताओं के अनुरूप ढालकर ऐसे उपाय अपने देश में किए जाएं तो पांच ट्रिलियन डालर की आर्थिकी के लक्ष्य को पाने में बड़ी मदद मिलेगी। इसमें सरकारों, वित्तीय संस्थानों और उद्योग संस्थाओं में उचित समन्वय भी आवश्यक होगा। बजट इसकी शुरुआत के लिए एक आदर्श मंच हो सकता है।

(लेखक फाइनेंस के प्रोफेसर एवं भाजपा नेता हैं)

response@jagran.com

आंबेडकर की आड़ में स्वार्थों का संधान

जगमोहन सिंह राजपूत

डा. आंबेडकर के नाम का उपयोग संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थ के लिए किया जाना सांस्कृतिक पतन की निशानी है

पिछले कुछ महीनों से देश में संविधान पर खूब चर्चा हो रही है, लेकिन यह सतही है, क्योंकि भारत के संविधान की सराहना तो पूरे विश्व में हुई है। इसे स्वतंत्रता आंदोलन के समर्पित सेनानियों ने जन-आकांक्षाओं और अभिलाषाओं की गहरी समझ के साथ तैयार किया। इसको शब्द देने के लिए जिस अप्रतिम प्रतिभा की आवश्यकता थी, वह डा. भीमराव आंबेडकर के व्यक्तित्व में मिली। भावी पीढ़ियां और इतिहास उनका ऋणी रहेगा। देश का यह सौभाग्य था कि इस उत्तरदायित्व को निभाने के लिए डा. आंबेडकर उपलब्ध थे। गांधी जी से उनके मतभेद थे, पंडित नेहरू और उनकी पार्टी उनको पसंद नहीं करती थी, लेकिन उस समय के राजनैतिक पटल पर स्वार्थ अनुपस्थित था। हर तरफ देश, देशवासियों और भारत के भविष्य की चिंता थी। लोगों को एक सम्यक मानवीय जीवन प्रदान करने का लक्ष्य ही हर तरफ लगभग सभी दलों और नेताओं का ध्यान आकर्षित कर रहा था। यदि राजनीति में आज जैसी तल्खी हर और बिखरी होती तो डा. आंबेडकर संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष नहीं बन पाते, लेकिन कुछ ऐसे व्यक्तित्व उस समय उपस्थित थे, जो प्रतिभा का सम्मान करना जानते थे और देश हित को दलगत हित से ऊपर मानते थे।

संविधान के निर्माण में एक युग के सोच, समझ और वैचारिक सामूहिकता का योगदान रहा। इसी कारण वह इतना सशक्त बन सका। हालांकि एक ऐसा काला अध्याय भी भारत के संविधान से जुड़ा, जिसे इतिहास कभी भुला न पाएगा। 1975-77 के दौरान न्यायालय के निर्णय को निरस्त करने के लिए और सत्ता में बने रहने के लिए संविधान के शब्दों को ही नहीं, उसके आत्मा तक को तहस-नहस कर दिया गया था। यह उस दल ने किया था, जो स्वतंत्रता आंदोलन का सारा श्रेय स्वयं लेना चाहता रहा है। उसने इसके लिए इतिहास के तथ्यों के साथ छेड़छाड़ करने में कोई शर्म महसूस नहीं की। आज वही दल खुद को संविधान का सबसे बड़ा रक्षक बताने का दावा कर रहा है। क्या भारत के संविधान निर्माण में पंडित मदन मोहन मालवीय, रवींद्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी तथा अन्य स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का वैचारिक योगदान नहीं था?

जारी है संविधान के रक्षक होने का दिखावा। फाइल

क्या डा. राजेंद्र प्रसाद का अथक परिश्रम भुलाया जाना चाहिए? क्या चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की बौद्धिकता को सम्मान नहीं मिलना चाहिए? इन मनीषियों ने भारत के संविधान के भविष्य को बचाने के लिए, उसे संगठित और समग्र बनाने के लिए सोशलिस्ट तथा सेक्युलर शब्दों को आमुख में आने नहीं दिया था। आपातकाल में इन दोनों शब्दों को संविधान में जोड़ना इन महानुभावों का घोर अपमान ही था।

संविधान के प्रति श्रद्धा भाव का प्रकटीकरण सही मायने में इन स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सम्मान का भी प्रकटीकरण है। डा. आंबेडकर और उनके जिन सहयोगियों ने संविधान सभा में बैठकर देश के भविष्य का मार्ग निर्धारण किया, वे निश्चित ही विशेष कृतज्ञता के अधिकारी हैं। डा. आंबेडकर ने देश को जोड़ने का प्रयास किया, अन्याय से हर किसी को मुक्त करने का मार्ग सुझाया। उन्होंने सिखाया कि प्रत्येक मनुष्य हर दूसरे मनुष्य को अपने समकक्ष स्तर पर आदर और सम्मान प्रदान करे। वे लोग जो जाति, उपजाति या किसी भी अन्य प्रकार के वर्गीकरण द्वारा उनका नाम लेकर अपने पक्ष में कुछ मतदाता बढ़ा लेने का प्रयास करते हैं, उन्हें सुसंस्कृत नहीं माना जा सकता, भले ही वे किसी भी पद पर हों। ऐसे लोग समाज के हितैषी तो नहीं ही माने जाएंगे। जिस देश की संस्कृति 'ईश्वर अंश जीव अविनाशी' का संदेश देती हो, जहां आयु और अनुभव के प्रति आदर और सम्मान करना बचपन से ही सिखाया जाता रहा हो, वहां डा. आंबेडकर जैसे पवित्र नाम का उपयोग क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थ के लिए किया जाना किसी बड़े सांस्कृतिक पतन की ओर ही इंगित करता है।

संविधान निर्माता जानते थे कि सत्ता के आने से और उसके द्वारा प्राप्त अधिकार, सुविधाएं तथा धन-संग्रह की संभावनाएं व्यक्तियों पर नकारात्मक प्रभाव अवश्य डालेंगी। 26 नवंबर, 1949 को जब संविधान का अंतिम प्रारूप स्वीकृति के लिए संसद में प्रस्तुत किया गया, तब संविधान सभा के अध्यक्ष डा. राजेंद्र प्रसाद ने जो भाषण दिया, वह सदियों तक लोगों का ध्यान आकर्षित करता रहेगा। उन्होंने कहा था, 'देश का कल्याण उस रीति पर निर्भर करेगा, जिसके अनुसार देश का प्रशासन किया जाएगा। देश का कल्याण उन व्यक्तियों पर निर्भर करेगा, जो देश पर प्रशासन करेंगे। यह एक पुरानी कहावत है कि देश जैसी सरकार के योग्य होता है, वैसी ही सरकार उसे प्राप्त होती है।' डा. राजेंद्र प्रसाद ने देश में सांप्रदायिक भेद, जातिगत भेद, भाषा तथा प्रांतीयता के भेद और इसी प्रकार के अन्य भेदों का भी उल्लेख किया। उन्होंने अपेक्षा की कि, 'इसके लिए हमें ऐसे दृढ़ चरित्र व्यक्तियों दूरदर्शी लोगों और ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है, जो छोटे-छोटे समूहों और क्षेत्रों के लिए पूरे देश के हितों का परित्याग न करें और जो इन भेदों से उत्पन्न हुए पक्षपात से परे हों। हम केवल आशा ही कर सकते हैं कि इस देश में ऐसे लोग बहुत मिलेंगे।' अफसोस कि आज देश में हमें ऐसे लोग आवश्यक संख्या में नहीं मिल रहे हैं। छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए देश हित को पीछे छोड़ने वाले देश की प्रगति और विकास के रास्ते के अवरोधक बन रहे हैं।

(लेखक प्रधानमंत्री स्मारक और ग्रंथालय में फेलो हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

धर्म

धर्म कोई दीप न होकर सूर्य की भांति है। यह बिना किसी भेदभाव सबको आलोक एवं मंगल बांटता है। धर्म जीवन का अभिन्न अंग है। इसके अस्तित्व को नकारने का अर्थ है अपने अस्तित्व को नकारना। दुनिया में असंख्य लोग सबसे गहरी श्रद्धा के साथ जिसे पूजते हैं, वह धर्म ही है। धर्म ही कामधेनु है, धर्म ही कल्पतरु है। जिसने धर्म को सही रूप में स्वीकार कर लिया, उसने जीवन की सर्वोच्च निधि को प्राप्त कर लिया।

भारतीय संस्कृति का आत्मा धर्म है। यहां अनेक धर्म पुष्पित एवं पल्लवित हुए हैं। धर्म न तो पंथ, मत, संप्रदाय है और न धर्म के नाम पर पुकारी जाने वाली पुस्तकें ही धर्म है। धर्म बहुत व्यापक है। धर्म तो सत्य, करुणा और अहिंसा है। आत्मशुद्धि का साधन है। महाकुंभ भारतीय धर्म और संस्कृति का प्रतीक है, जो दुनिया को एकजुट करने का सशक्त माध्यम है। यह दुनिया भर में सनातन धर्म की महत्ता को दिखाता है। यह सनातन धर्म का सबसे अहम और पवित्र आयोजन है जिसमें शामिल होने से मोक्ष मिलता है, आत्मा की शुद्धि होती है। आध्यात्मिक लाभ मिलते हैं और पाप धुल जाते हैं। धर्म की पुकार सदियों से इंसानों को एक स्थान पर खींचती आई है।

भारतीय मनीषा में धर्म केवल ईश्वरीय आस्था ही नहीं है, वह वैश्विक व्यवस्था है। सृष्टि का सार्वभौम नियम है। जीवन पद्धति है। धर्म मजहबी विश्वास या बंधन नहीं है। वह आंतरिक प्रकाश है। आनंदमयी चेतना का स्पंदन है। धर्म वह आचार-संहिता है, जिसमें सबका अभ्युदय निहित है। धर्म मनुष्यता का मंत्र है, उन्नति का तंत्र है। पशुता को मनुजता में रूपांतरित करने का यंत्र है। धर्म एक मर्यादा है, वह जीवन को मर्यादित करता है। धर्म उत्कृष्ट मंगल है। समस्त विघ्न, बाधाओं, कष्टों का निवारक एवं सिद्धिदायक है। यह विश्वशांति का अमोघ साधन है।

ललित गर्ग

बेटियों की सुरक्षा का सवाल

सुनीता मिश्रा

विकृत मानसिकता वाले पुरुषों की वजह से लड़कियां शिक्षा के मंदिर, ट्यूशन, बस, पार्क और घर भी सुरक्षित नहीं हैं

केरल के पथानामथिट्टा जिले में एक दलित खिलाड़ी ने आरोप लगाया है कि उसके साथ पांच वर्षों में कोच, सीनियर खिलाड़ियों, कुछ रिश्तेदारों समेत 62 लोगों ने विभिन्न स्थानों पर दुष्कर्म किया। पीड़िता के साथ कम से कम पांच बार सामूहिक दुष्कर्म भी किया गया था। वह दो महीने पहले ही 18 वर्ष की हुई है। इस मामले में अब तक 44 आरोपितों को गिरफ्तार किया गया और कई लोगों को हिरासत में लिया गया है।

देश में बच्चियां विकृत मानसिकता वाले पुरुषों की वजह से वे शिक्षा के मंदिर, ट्यूशन, बस, पार्क और घर कहीं पर सुरक्षित नहीं हैं। केरल में हर साल बच्चों के साथ यौन उत्पीड़न के हजारों मामले सामने आ रहे हैं। वर्ष 2024 में केरल राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की तरफ से एक रिपोर्ट जारी की गई थी। इसके मुताबिक 21 प्रतिशत मामले ऐसे थे, जिनमें बच्चे घरों में और अपने परिचितों से यौन शोषण का शिकार हुए। रिपोर्ट में यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम के तहत 4,663 मामलों का विश्लेषण किया गया था, जिसमें सबसे अधिक 988 (21 प्रतिशत) घटनाएं बच्चों के घरों में, 725 (15 प्रतिशत) आरोपियों के घरों में और 935 (20 प्रतिशत) घटनाएं सार्वजनिक स्थानों पर हुई हैं। बच्चियां अक्सर अपने साथ हुए दुष्कर्म के बारे में रिपोर्ट करने में अक्षम होती हैं, क्योंकि ज्यादातर मामलों में परिवार का सदस्य या कोई परिचित ही होता है। इसके बारे में वे अपने माता-पिता से भी बात नहीं करतीं और यौन शोषण के आघात को जीवन भर सहती रहती हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार, यौन शोषण के शिकार 88 प्रतिशत बच्चे घबराहट की गिरफ्त में आ जाते हैं। बचपन में यौन शोषण के शिकार होने वाले बच्चे तनाव, डर, घबराहट, आत्मसम्मान की कमी सहित कई तरह की मानसिक और शारीरिक समस्या से परेशान रहते हैं। उनकी सोचने-समझने की क्षमता भी प्रभावित होती है, जिसका प्रभाव उनकी शिक्षा और रोजगार पर पड़ता है।

वर्तमान में देश की बेटियां खेल की दुनिया में भारत का मान बढ़ा रही हैं। क्रिकेट से लेकर टेनिस, बैडमिंटन, बाक्सिंग और पहलवानी में महिला खिलाड़ियों के नाम ऐसे कई रिकार्ड दर्ज हैं। खिलाड़ियों के लिए कोच का बहुत महत्व होता है। कोच खिलाड़ियों को बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करते हैं और लक्ष्य निर्धारित करने में मदद करते हैं। वे उन्हें सही दिशा दिखाते हैं, जिससे उनके बेहतर भविष्य का निर्माण होता है। ऐसे में एक खिलाड़ी के कोच द्वारा इस तरह के घिनौने कुकृत्य को अंजाम देने से समाज में नकारात्मक संदेश जाता है और ऐसी घटनाओं से पूरा देश शर्मसार होता है। बेटियां आज देश के समग्र विकास का अभिन्न हिस्सा बन चुकी हैं। ऐसे में बच्चियों की सुरक्षा से कतई समझौता नहीं किया जा सकता।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

आलस्य सेहत का दुश्मन, काम नहीं

'मनुष्यों को मशीन न बनाएं' शीर्षक से लिखे आलेख के तहत प्रो. रसाल सिंह ने काम के घंटे बढ़ने से होने वाले नुकसान का विश्लेषण किया है। यह ठीक है कि हमें अपने शरीर को मशीन नहीं बनाना चाहिए, लेकिन क्या काम से ही हमारा स्वास्थ्य खराब होता है? यदि हमने 24 घंटों में से लगभग 10 घंटे काम कर लिया, फिर भी चौदह घंटे हमारे पास बचते हैं। इनमें से लगभग आठ घंटे सो लिए या आराम कर लिया, फिर भी इसके बाद जो छह घंटे बचे, उसमें से परिवार के साथ समय बिता सकते हैं और कुछ व्यायाम या योग कर सकते हैं। अगर काम का तनाव न लिया जाए या फिर काम को बोझ न समझा जाए तो काम से कोई बीमार नहीं होता। जबकि इसके विपरीत अगर हम अपने शरीर को ज्यादा आराम देंगे, तो इससे आलस्य बढ़ेगा और आलस्य बहुत सी बीमारियों को न्योता देता है। आज तक शायद ही कोई ऐसा मजदूर होगा, जो ज्यादा काम करने से जानलेवा बीमारियों की चपेट में आया होगा, लेकिन जो कुर्सी पर बैठकर काम करते हैं, भूख से ज्यादा खाते हैं, न व्यायाम करते हैं और न ही योग तो फिर ऐसे लोग बीमार नहीं होंगे तो और क्या होगा? अब अगर कंपनियों और अन्य संस्थाओं में कर्मचारियों के काम करने के घंटों की बात की जाए तो यह कोई बड़ा मुद्दा नहीं है और इस पर सभी के अपने-अपने विचार हो सकते हैं। अगर विज्ञानियों ने नई तकनीक को विकसित करने के लिए घंटों काम नहीं किया होता तो क्या हम आज नई तकनीक प्राप्त कर पाते? अगर कोई दुकानदार आठ घंटे काम करेगा तो क्या वह अपने कारोबार में लाभ कमा पाएगा? शायद नहीं। नौजवान अगर ज्यादा आराम करेंगे तो क्या वे अपना करियर बना पाएंगे? इसलिए हमें काम और आराम में संतुलन बनाए रखना चाहिए।

raju09023693142@gmail.com

मेलबाक्स

संतुलन से बनेगी बात

हमें अपने कार्य, परिवार और समाज में संतुलन स्थापित करके आगे बढ़ना होगा। आजकल के भौतिकवादी युग में जहां एक तरफ हमारी महत्वाकांक्षा बढ़ गई है तो ऐसे में हमसे हमारे कार्यस्थल पर ये ही उम्मीद की जाती है कि हम मशीनों की तरह बिना रुके, बिना थके काम करें, परंतु ये बात न्यायसंगत नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार, समाज और अपने निजी जीवन से जुड़ा हुआ है। ऐसे में उसकी निर्जीव मशीनों से तुलना नहीं की जा सकती। प्रत्येक व्यक्ति को अपने परिवार, समाज और कार्य के बीच तालमेल स्थापित करके चलना होता है। अत्यधिक कार्य से व्यक्ति का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी बिगड़ सकता है इसलिए हमें अपने दैनिक जीवन में कार्य के बीच अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना होता है। आजकल के मिलावटी युग में मनुष्य को अनेकों बीमारियों ने घेर रखा है। ऐसे में अतिरिक्त कार्य का दबाव उसके मानसिक संतुलन को खराब कर सकता है। कुल मिलाकर हम फिलहाल जिस भागदौड़ भरे युग में अपना जीवन यापन कर रहे हैं उसमें हमें अपने परिवार और अपने स्वयं के लिए वक्त निकालना भी जरूरी है। कार्य के लिए कुछ सीमित समय निकालकर मनुष्य को तालमेल और संतुलन स्थापित करके चलना होगा अन्यथा हम रोबोट बनकर रह जाएंगे। जिससे हमारा संपूर्ण जीवन निरर्थक बन सकता है।

हितेंद्र डेढ़ा, चिल्ला गांव, दिल्ली

आठवां वेतन आयोग

आठवें वेतन आयोग के गठन से 48.76 लाख केंद्र सरकार के कर्मचारी और 67.95 लाख पेंशनभोगियों को लाभ मिलेगा। 31 दिसंबर, 2025 तक सातवां वेतन आयोग लागू है। सरकारी वेतन में इजाफा होने के बाद प्राइवेट कंपनियों को भी अपने कर्मचारियों के लिए सुविधाएं बढ़ानी होंगी। केंद्र सरकार की ओर से आठवें वेतनमान की घोषणा करना दिल्ली चुनाव में भाजपा के लिए फायदेमंद रहने वाला है। दिल्ली में रह रहे सरकारी कर्मचारी चुनाव में अहम भूमिका अदा करते हैं। 2016 में सातवां वेतन आयोग लागू किया गया था। यह चुनाव में लाभान्वित करने वाला फार्मूला कह सकते हैं।

कांतिलाल मांडोत, नई दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।
अपने पत्र इस पते पर भेजें:
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: response@jagran.com

संस्थापक- स्व. पूर्णचन्द गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक- संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष: नई दिल्ली कार्यालय: 011-43166300, नोएडा कार्यालय: 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

कल्पमेधा

जिन सिद्धांतों को हम ही जीवन में नहीं उतार सके या उतार सकते, वे सिद्धांत किसी को भी क्योंकर प्रभावित करेंगे।
– भंवरमल सिंघी

अक्षम्य अपराध

सड़क दुर्घटनाओं पर काबू न पाए जा सकने को लेकर केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री की चिंता वाजिब है। इसके लिए वे खराब सड़क निर्माण को जिम्मेदार मानते हैं। संसद में भी उन्होंने कहा था कि विदेश में जब भी भारत में सड़क दुर्घटनाओं और सड़कों के निर्माण को लेकर बात होती है, तो उन्हें शर्म से मुंह छिपाना पड़ता है। अभी भारतीय उद्योग परिसंघ की तरफ से आयोजित एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं के मामले में भारत दुनिया में पहले स्थान पर है। इसका बड़ा कारण सड़कों का खराब ढंग से निर्माण किया जाना है। उन्होंने कहा कि खराब सड़क निर्माण को गैर-जमानती अपराध बना दिया जाना चाहिए। सड़क निर्माण के ठेकेदारों और इंजीनियरों को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। निस्संदेह यह सुझाव कठोर लग सकता है। मगर चूंकि सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने संकल्प लिया है कि वह 2030 तक सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों को घटा कर आधा कर देगा, बिना ऐसे कठोर कदम उठाए उसका लक्ष्य तक पहुंचना आसान नहीं होगा। मंत्रालय के अनुसार 2023 में पांच लाख सड़क दुर्घटनाएं हुईं, जिनमें से एक लाख बहत्तर हजार लोगों की मौत हो गई। इनमें से एक लाख चौदह हजार लोगों की उम्र अठारह से पैंतालीस वर्ष के बीच थी।

सड़क दुर्घटनाओं पर काबू पाने के लिए कई उपाय आजमाए जा चुके हैं। यातायात नियमों के उल्लंघन पर भारी जुर्माने का प्रावधान किया गया। जगह-जगह सीसीटीवी कैमरे लगाए गए। मगर इसका कोई उल्लेखनीय असर नजर नहीं आया। सड़क दुर्घटनाएं हर वर्ष कुछ बढ़ी हुई ही दर्ज होती हैं। सड़क दुर्घटनाओं में मौत का सबसे बड़ा कारण सड़कों का खराब ढंग से निर्माण चिह्नित किया गया है। राजमार्गों और द्रुतगामी सड़कों पर चौड़ाई आदि में एकरूपता और मोड़ों पर उचित तकनीक का इस्तेमाल न होने के कारण दुर्घटनाएं और मौतें अधिक होती हैं। अच्छी बात है कि परिवहन मंत्री ने इस बात की पहचान की और इसे स्वीकार भी किया। सड़कों पर जिन वजहों से दुर्घटनाएं और मौतें होती हैं, उन्हें दूर करने के लिए भारी रकम भी आबंटित की गई है। परिवहन मंत्री ने माना है कि खराब निर्माण सामग्री के इस्तेमाल और अव्यावहारिक डिजाइन की वजह से सड़क दुर्घटनाएं होती हैं। उनकी चिंता वाजिब है, लेकिन इसके लिए जिम्मेदारी तय करने की जवाबदेही किसकी है। उम्मीद है कि इस मसले पर सिर्फ चिंता जताने के बजाय सख्त और स्पष्ट नीति जमीनी स्तर पर लागू करने को लेकर ठोस पहल होगी।

यह उजागर तथ्य है कि सड़क निर्माण में भ्रष्टाचार का पैमाना काफी ऊंचा है। सड़कों के ठेके देने से लेकर उनकी लागत तय करने और फिर तैयार सड़कों की गुणवत्ता का आकलन करने तक अनियमितताएं उजागर होती रहती हैं। इस तरह यह भ्रष्टाचार का एक संगठित तंत्र जैसा बन गया है। ऐसे में अगर ठेकेदारों और इंजीनियरों की कमियों को गैरजमानती अपराध घोषित कर भी दिया जाता है, तो उनमें इसका कितना भय होगा, कहना मुश्किल है। सड़कों की बनावट तय मानकों के अनुरूप नहीं है, इसका आकलन तो संबंधित महकमे को करना होता है। आम लोग लाख शिकायत करते रहें कि सड़कों का निर्माण ठीक नहीं हुआ है, उनकी सुनवाई नहीं हो पाती। यह अकारण नहीं है कि कई जगह उद्घाटन के बाद ही किसी सड़क के बारिश में धंस या बह जाने, पुल के गिर जाने की खबर सुर्खियों में होती है। इसलिए सड़कों की गुणवत्ता मापने वाले तंत्र में भी पारदर्शिता लाने की जरूरत है।

भ्रम की तकनीक

पिछले दिनों चुनाव प्रचारों के दौरान कई पार्टियों और नेताओं ने एआइ और 'डीपफेक' का सहारा लेकर या तो अपनी काल्पनिक छवि तैयार करके लोगों के सामने पेश की या अपने विपक्षी नेताओं के ऐसे वीडियो तैयार किए, जिससे लोगों के बीच गलत धारणा बन सकती है। इसके बाद वे उस आधार पर किसी को वोट देने या न देने का फैसला कर सकते हैं। इस तरह के वीडियो या चित्र तकनीकी कारीगरी से तैयार किए गए होते हैं। अगर किन्हीं स्थितियों में इससे संबंधित विवाद उभरते हैं तो इसकी जवाबदेही लेने को भी कोई तैयार नहीं होता। जबकि आम लोगों पर इसके असर का अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है। यही वजह है कि निर्वाचन आयोग ने कहा है कि अगर कोई राजनीतिक पार्टी या उम्मीदवार एआइ के जरिए किसी तस्वीर, वीडियो या अन्य सामग्री का उपयोग करे तो उसके स्रोत की जानकारी जरूर दे। प्रचार के लिए अगर एआइ निर्मित सामग्री का उपयोग हो, तो उसमें पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित की जाए।

लोकतंत्र में भ्रम फैलने के मद्देनजर आयोग की यह सलाह एक जरूरी कदम है, लेकिन यह काम केवल पार्टियों के भरोसे छोड़ने के बजाय खुद आयोग को भी इस पर कड़ी नजर रखनी और नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। दरअसल, एआइ यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सहारे कई क्षेत्रों में कामकाज आसान हो रहा है, मगर इसका दुरुपयोग भी कई स्तरों पर होने लगा है। हाल के दिनों में 'डीपफेक' के जरिए कई ऐसे वीडियो बना कर जारी कर दिए गए, जिनमें किसी व्यक्ति का चेहरा इस्तेमाल करके उसकी आपत्तिजनक छवि परोसी गई। चूंकि आम लोगों के भीतर अभी इस तकनीक के उपयोग और इसके प्रभाव को लेकर पर्याप्त स्तर पर परिपक्व समझ नहीं बनी है, इसलिए कई बार इसके जरिए गलत धारणा का प्रसार होता है। विडंबना है कि इस माध्यम का उपयोग केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि जनमत निर्माण के लिए भी किया जाने लगा है। एआइ का सहारा लेकर ऐसे वीडियो बनाए जाते हैं, जिसका कोई आधार नहीं होता या जिनमें सच्चाई नहीं होती, मगर वे सच होने का भ्रम पैदा करते हैं।

आफत बनती जंगल की आग

हमारे देश के उत्तराखंड, हिमाचल और जम्मू-कश्मीर के जंगलों की आग के पीछे भी कुछ ऐसे ही कारण हैं। यहां के जंगलों में चीड़ की बहुतायत है। जब चीड़ की पत्तियों के ढेर ज्यादा लग जाते हैं, तो जंगलों में जरा-सी चिंगारी विशाल रूप ले लेती है।

अभिषेक कुमार सिंह

अमेरिका अब तक की सबसे भीषण आग से झुलस रहा है। इसके प्रांत कैलिफोर्निया के बड़े इलाके में जंगल धधक उठे हैं। दो दर्जन से ज्यादा लोगों की मौत हो गई है। हजारों घर राख हो गए हैं। बड़ी संख्या में लोग विस्थापित हो चुके हैं। हजारों एकड़ क्षेत्र बर्बाद हो गया है। यह आग असाधारण इसलिए भी कही गई। क्योंकि आम तौर पर जनवरी में वहां जंगल की आग का कोई मौसम नहीं होता। दावा किया गया कि जलवायु परिवर्तन, ऊंचे तापमान, शुष्क मौसम और सूखे ने अचानक ऐसे हालात पैदा कर दिए कि भड़की चिंगारियों ने तेज हवाओं के संग खौफनाक रूप धर लिया और बड़े इलाके को इस तरह तबाह कर दिया, मानो वहां कोई बड़ा बम गिरा दिया गया हो।

पहली बार ऐसा लगा कि दुनिया का सबसे ताकतवर मुल्क, कैलिफोर्निया के लास एंजिलिस इलाके में बेहद तेजी से फैली आग के आगे निरुपाय हो गया। इस आग से निपटने की नीतियों को लेकर वहां राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो गया। जहां तक पर्यावरणीय और वैज्ञानिक कारणों की बात है, तो अमेरिका के 'नेशनल ओसियानिक एंड एटमास्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन' (नोआ) का कहना है कि पिछले दो दशकों में पश्चिमी अमेरिका में जलवायु परिवर्तन के कारकों की अनदेखी ने जो हालात पैदा किए हैं, वे इस आग के लिए मुख्यतः जिम्मेदार हैं। आमतौर पर वहां मई-जून से लेकर अक्तूबर के बीच जंगल की आग लगने की कुछ घटनाएं हर साल होती रही हैं, लेकिन इधर लगने लगा है कि इस आग की समयावधि का दायरा बढ़ गया है। इस बार सबसे पहले जंगल की आग कैलिफोर्निया के पैलिसेड्स इलाके में भड़की। आसमानी बिजली या किसी इंसान की करतूत से छोटे स्तर पर जंगल में लगी आग वहां बहने वाली तेज हवाओं के कारण इस कदर बेकाबू हो गई कि एक बड़ा इलाका देखते-देखते राख हो गया, जहां हालीवुड की अनेक हस्तियों के आलीशान घर थे।

लास एंजिलिस के ईटन नामक उत्तरी हिस्से में लगी आग आल्टाडेना जैसे शहरों में फैल गई। कहने को तो यह सिर्फ जंगल की आग है, लेकिन जिन कारणों से अमेरिका बुरी तरह झुलसा है, उससे पूरी दुनिया में यह चिंता फैल रही है कि ऐसा तो कहीं भी और कभी भी हो सकता है। जलवायु परिवर्तन, गर्म और शुष्क मौसम और सूखे की स्थितियों में अमेरिका के इस इलाके में यह आग तब लगी, जब इसके लगने की कोई आशंका नहीं थी। यानी जिस मौसम में इन इलाकों के जंगल करीबन हर वर्ष या दूसरे वर्ष दहकते थे, वह मौसम अभी वहां आया ही नहीं था। इसलिए बेमौसम लगी जंगल की आग ने ऐसा तांडव मचा दिया कि महाशक्ति अमेरिका की सांसें भी फूल गईं।

वन क्षेत्रों में आग लगने के सबसे अहम कारणों में सूखे का मौसम और तेज हवाओं के साथ आकाशीय बिजली गिरने को गिना जाता है, लेकिन लास एंजिलिस में फैली आग के पीछे इंसानी हाथ हो सकता है, ऐसा एक दावा कैलिफोर्निया की दमकल सेवा के प्रमुख डेविड एक्यूना ने किया। उन्होंने कहा कि इस इलाके में 95 फीसद आग इंसान ही लगाते

आए हैं और हो सकता है कि इस बार भी ऐसा हुआ हो। मौसम विशेषज्ञों ने पश्चिमी अमेरिकी जंगलों में आग के खतरे और इसकी प्रमुख वजह के रूप में जलवायु परिवर्तन को चिह्नित किया है। जलवायु संकट से तापमान बढ़ा है, लंबे समय तक सूखे और शुष्क मौसम की स्थितियां

> लास एंजिलिस के ईटन नामक उत्तरी हिस्से में लगी आग आल्टाडेना जैसे शहरों में फैल गई। कहने को तो यह सिर्फ जंगल की आग है, लेकिन जिन कारणों से अमेरिका बुरी तरह झुलसा है, उससे पूरी दुनिया में यह चिंता फैल रही है कि ऐसा तो कहीं भी और कभी भी हो सकता है। जलवायु परिवर्तन, गर्म और शुष्क मौसम और सूखे की स्थितियों में अमेरिका के इस इलाके में यह आग तब लगी, जब इसके लगने की कोई आशंका नहीं थी। यानी जिस मौसम में इन इलाकों के जंगल करीबन हर साल-दूसरे साल दहकते थे, वह मौसम अभी वहां आया ही नहीं था।

बनी हैं, जिनसे अब पूरे वर्ष आग लगने और उसके फैल जाने की आशंका पैदा हो गई है। इसमें सितंबर के अंत से मई तक बीच-बीच में सौ मील या उससे ज्यादा रफ्तार से चलने वाली 'सेंटा एना' हवाओं ने आग में घी का काम किया है। कैलिफोर्निया के पहाड़ों से समुद्र की तरफ बहने वाली ये हवाएं जब जंगल की आग के साथ बहती हैं, तो त्रासदी कुछ उसी तरह बढ़ती है, जैसी इस बार बढ़ी है।

आमतौर पर जिन इलाकों में बारिश होती है, वहां अनुकूल वातावरण मिलने से पेड़-पौधे और जंगली इलाके में झाड़ियों की भरमार हो जाती है। गर्मियों में झाड़ियां और घास-फूस सूख कर आग लगने का माहौल तैयार कर देते हैं। प्राकृतिक रूप से जंगलों में लगने वाली आग से वहां के पेड़-पौधों को निपटने का तरीका मालूम है। कहीं पेड़ों की मोटी छाल बचाव का काम करती हैं, तो कहीं आग लगने के बाद भी जंगल को फिर से फलने-फूलने आता है। अफ्रीका के सवाना जैसे घास के मैदानों में बार-बार आग लगती रहती है, लेकिन घास-फूस जल्दी जलने से आग का असर जमीन के अंदर, जड़ों तक नहीं पहुंचता। यही वजह है कि आग खत्म होते ही मैदान फिर से हरे हो जाते हैं। अगर घास-फूस में आग नहीं लगेगी, तो इसके विशाल ढेर आगे चल कर बारूद का काम करते हैं।

हमारे देश के उत्तराखंड, हिमाचल और जम्मू-कश्मीर के जंगलों की आग के पीछे भी कुछ ऐसे ही कारण हैं। यहां के जंगलों में चीड़ की बहुतायत है। जब चीड़ की पत्तियों के ढेर ज्यादा लग जाते हैं, तो जंगलों में जरा-सी चिंगारी विशाल रूप ले लेती है। उत्तराखंड के जंगलों में लगी आग के पीछे यही तथ्य बताया जाता है कि वहां हर साल करोड़ों टन चीड़ की सूखी पत्तियां जमा हो जाती हैं। सूखे मौसम में चीड़ की पत्तियों के ढेर किसी कारण आग पकड़ते हैं, तो यह प्रायः अनियंत्रित हो जाती है।

जंगल की आग बुझाने के तीन तरीके विशेषज्ञ सुझाते हैं। पहला, मशीनों से जंगलों की नियमित सफाई हो। सूखी पत्तियों और झाड़ियों को समय रहते हटाया जाए, लेकिन यह बेहद महंगा विकल्प है। दूसरा विकल्प यह सुझाया जाता है कि मानव आबादी के नजदीकी जंगलों में नियंत्रित ढंग से आग लगाई जाए, ताकि गर्म मौसम में वहां कोई आग न भड़के। अमेरिका और दक्षिण अफ्रीका समेत कई देशों में यही किया जा रहा है, लेकिन इसके लिए भी काफी संसाधन चाहिए। तीसरा यह है कि पर्वतीय इलाकों में पलायन रोक कर जंगलों पर आश्रित व्यवस्था को बढ़ावा दिया जाए। इससे जंगलों की साफ-सफाई होगी और आग के खतरे भी कम होंगे। अमेरिका के जिस इलाके में इस बार आग फैली है, अमीरों ने वहां की प्राकृतिक सुंदरता पर रीझ कर अपने आलीशान घर बनाए हैं। मगर इन लोगों की कोई भूमिका जंगलों की साफ-सफाई में रहती होगी, इसकी कोई सूचना नहीं है।

जहां तक हमारे देश की बात है, यहां नीति निर्माताओं और योजनाकारों ने जंगलों की आग की गंभीरता को ठीक से समझा नहीं है। इसलिए कहना मुश्किल है कि जंगल की आग को भड़कने से रोकने से संबंधित कोई भी तरीका उन्हें रास आएगा। ऐसे में इकलौता तरीका यही है कि सूचना मिलते ही विशालकाय बाल्टियों से लैस हेलिकाप्टर पानी के साथ दहकते जंगलों की तरफ रवाना किए जाएं। गांव, प्रशासन और सुरक्षा बल ऐसे नाजुक मौकों पर सजग रहें, लेकिन ये तरीके एक हद तक ही कारगर रहते हैं। अमेरिका में रोके नहीं रुक रही आग ने यह साबित कर दिया है।

कामयाबी की कसौटी

पावनी

दुनिया मेरे आगे

छोटी-छोटी सफलता के लम्हे भले ही क्षणिक हों, पर उनको एक लड़ी में पिरो दिया जाए तो कुछ अनोखा ही घटने लगता है। मन को असीम आनंद प्राप्त होता है। मसलन, बुखार होने पर भी खुद अपनी सही से देखभाल कर लेना। अपने लिए चाय खुद बनाना, किसी पंछी के लिए जूते के डिब्बे से घोंसला तैयार करना। यह ऐसी सुदर्शन और उपयोगी छोटी-छोटी बातें हैं कि आज विकसित देशों में अवसाद से उबरने के लिए कार्यशालाओं में इन तकनीकों का प्रयोग कर सकारात्मक रूप से सफलता पा रहे हैं। दरअसल, छोटी- छोटी सफलता से मिलने वाला संतोष एक ऐसी अनमोल भावना है, जिसे हम भीतर से महसूस करते हैं। इनकी याद भी रोमांचित कर देती है। दस मिनट में एक किलो मटर छील देना या एक दिन बाहर से बोतलबंद पानी न पीकर हैंडपंप या चापाकल तलाश करना भले ही औरों की नजर में बेहद सामान्य बात हो, मगर हमारे अनुभव के हिसाब से वह बेहद सुकूनदायक होती है। खुद लगाए गमले में फूल खिल जाए और वहां तितली भी आ जाए। यह एक ऐसी सफलता है, जिसे जागरूक लोग नजरअंदाज नहीं करते, बल्कि इस खुशी की दवा को तन-मन से ग्रहण कर खुद को मानसिक रूप से सेहतमंद रखते हैं।

कुछ लोग पैसा, नाम और सम्मान को महत्त्व देते हैं। ये जीवन में सुविधा और आडंबरी चमक-दमक लाने में सहयोग करते हैं। लेकिन इस क्रम में लोग अपनी सरलता को दरकिनार कर रहे हैं। चकाचौंध भरी सफलता बहुत सारे लोगों के दिल के समुद्री ज्वार की तरह ठाठें मारने लगती है। एक युग ऐसा भी था कि मनुष्य अपने मानव समाज के लिए, पूजा के फूल की तरह भेंट चढ़ाने में खुद को संपूर्ण मानता था। अब तमाशा यह है कि भ्रष्टतम होने के लिए लोग चांदी का जूता खुशी-खुशी खा लेते हैं कि इससे सफलता का वरण हो सकेगा। फिर झूठी सफलता की बेहोशी के आलम में डूबे रहते हैं। कुछ लोग इन चीजों को ही असली सफलता नहीं मानते हैं। वे पंछियों को पिंजरे से आजाद कराना, झील के आसपास गंदगी न रहने देना, बगीचे के पौधों को सूखने से बचाना आदि में आनंद पा लेते हैं। इसके विपरीत कुछ लोग खूब दौलत एकत्र करने को जीवन की सफलता मानते हैं। नाम, दाम और सम्मान को ही सफलता का पर्याय मान बैठते हैं। वे अपने रास्ते में आने वाली छोटी-छोटी सफलताओं को महत्त्व नहीं देते। मिसाल के तौर पर, किसी गरीब को तन भर कपड़ा, किसी का चुपचाप इलाज कराना, किसी से बहस न करके उसको विजेता बना देना या फिर अपना समय देकर किसी का अकेलापन दूर कर देना उसको जताए बगैर। वे ऐसी बातों से जानबूझकर अपनी नजर फेर लेते हैं। हालांकि उनकी दिनचर्या भी आगे जाकर रंग दिखाने लगती है। कठोर बनकर सोने के सिक्के जमा करना का और खुद को कामयाब कहने का उनका यह नशा उनके सिर पर चढ़ने लगता है। धन की भारी झोली एक दिन उनके कपाल पर ही फट पड़ती है। उस समय उनकी पीड़ा बढ़ जाती है, जब महंगा पलंग, कीमती भोजन, उच्च और खर्चीला जीवन-स्तर उनको मुहब्बत और आत्मिक सुख नहीं दे पाते हैं। फिर ऐसा दौर भी आता है कि ऐसे लोग जल्दी ही तनाव में घिरने लगते हैं। कुंठा की एक छोटी-सी चिंगारी भी महाविस्फोट कर सकती है। वे संभल नहीं पाते। निराशा उनको चिंदी-चिंदी करके बिखेर देती है। उनके मस्तिष्क का संयोजन ही कुछ ऐसा होता है।

> आज विश्व स्तर पर जीवन परंपरा को सुधारने की कवायद चल रही है। हमको गिलास आधा भरा दिखाई देता है या आधा खाली, आज एक सफल जीवन इसी फलसफे के इर्द-गिर्द घूम रहा है। हमें धन दौलत के ढेर में केवल जिंदा नहीं रहना है, जीवन को जीना भी है।

आज विश्व स्तर पर जीवन परंपरा को सुधारने की कवायद चल रही है। हमको गिलास आधा भरा दिखाई देता है या आधा खाली, आज एक सफल जीवन इसी फलसफे के इर्द-गिर्द घूम रहा है। हमें धन दौलत के ढेर में केवल जिंदा नहीं रहना है, जीवन को जीना भी है। इसलिए, भौतिकवाद की तरफ कम झुककर समाज, कुदरत और दूसरों की खुशी से मन ही मन लगाव रखना भी एक सफल जीवन का संकेत माना जा रहा है। दुनियाभर में अब कुछ दौलतमंद भी न केवल आत्महत्या कर रहे हैं, बल्कि उनके विक्षिप्त होने के मामले भी लगातार बढ़ रहे हैं। उनको ऐसा लगने लगा है कि कीमती से कीमती जीवन को तो जी लिया। अब शायद उनकी जिंदगी का कोई मकसद नहीं बचा। अगर कभी सीखा होता तो शायद वे जान लेते कि बाहर धूप में भूखे-प्यासे पंछी जरा-सा दाना-पानी पाकर उनको जीवन शक्ति देने वाले हैं। उनके मानसिक आवेग को किसी हद तक पाटने कोई आए भी तो कौन? देर-सवेर दौलत का कटु यथार्थ कंटक-सा चुभने लगता है। उनकी सफलता फिर उन पर ही उल्टा तीर लगाने लगती है।

कोई छोटा-सा काम करके सफल होने में वह ताकत होती है कि आनंद उस समय अपनी संपूर्ण हार्दिकता में होता है। पूरी कायनात पीठ थपथपाकर शाबाशी दे रही होती है। कुछ दार्शनिक ऐसा भी कहते हैं कि ऊर्जावान रहना ही मानव होने की एक शर्त है। इस संसार के बेहद निराले रंग-रूप हैं, मगर यह उनका ही माना जाता है जो आशावादी हैं और जरा-सी प्यारी बात को भी दिल से महसूस करते हैं। किसी बुजुर्ग या असहाय सहयात्री को अपनी सुकून भरी सीट देकर खुद खड़े होकर यात्रा पूरी करते हुए लोग मन ही मन आनंद के पंख लगाकर उड़ रहे होते हैं। ऐसा करके वे अपने भीतर एक उत्पादक और सकारात्मक ऊर्जा को पनपने का अवसर देते हैं।

आज सारा संसार कृत्रिम विकास के नाम पर कृत्रिम विनाश की ही तरफ बढ़ता जा रहा है। सफल और कामयाब शब्द आज कारपोरेट की उपज हैं। ये अपने और पराए की उलझनों को बढ़ा रहे हैं। अंधेरे सुरंग जैसे ये गहरे अंधेरे हमारी सीमित सांसों को कहीं लील न जाएं। छोटी-सी बात से उत्पन्न होने वाली ताली, आंसू या खिलखिलाहट भरी हंसी को आज कारपोरेट के तालाबंद कमरे से बाहर निकालना जरूरी हो गया है। जीवन की ओर मन की आंखें खोलकर हम सबको अपनी सफलता के उजाले खुद तय करने चाहिए।

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

चौपाल

आशा की किरण

गाजा पट्टी से एक बार फिर उत्साहजनक खबर सुनने को मिली है। हमास ने स्वीकार किया है कि वह बंधक बनाए गए कुछ इजराइली नागरिकों को रिहा करेगा। इस संबंध में कई दिनों से हमास और इजराइल के अधिकारियों के बीच बातचीत चल रही थी। सात अक्तूबर 2023 को हमास ने इजराइल पर अचानक हमला कर दिया था, जिसमें लगभग 1,200 इजराइली नागरिक मारे गए थे और करीब 254 लोगों को बंधक बना लिया गया था। इस अप्रत्याशित हमले और निर्दोष लोगों की हत्या से इजराइल को गहरा आघात लगा। आक्रोश में इजराइल ने जवाबी हमला किया। एक साल से अधिक समय बीत चुका है, लेकिन यह संघर्ष अब भी जारी है। हमास जिन 34 बंधकों को रिहा करेगा, उनमें महिलाएं, बच्चे, बुजुर्ग और कुछ बीमार सैनिक शामिल हैं। गाजा पट्टी में युद्धविराम और इजराइली बंधकों की रिहाई के लिए लंबे समय से प्रयास जारी हैं। हाल ही में हमास ने एक इजराइली महिला सैनिक का वीडियो जारी किया है। युद्ध जैसे हालात के बीच कुछ बंधकों को रिहा करने के हमास के फैसले ने आशा की एक नई किरण दिखाई है। हालांकि गतिरोध अब भी कायम है।

– दत्तप्रसाद शिरोडकर, मुंबई

स्वागतयोग्य पहल

सड़क दुर्घटना में घायलों को अस्पताल पहुंचाने वालों को दी जाने वाली प्रोत्साहन राशि बढ़ा कर 25 हजार रुपए करना सराहनीय फैसला है। सड़क दुर्घटनाओं में हर साल बड़ी संख्या में लोग जान गंवा देते हैं, जिनमें समय पर इलाज न मिल पाना भी एक प्रमुख कारण होता है। यह कदम सड़क सुरक्षा को लेकर सरकार की गंभीरता को दर्शाता है। आजकल देखा जाता है कि लोग पुलिस केस या अन्य झंझटों से बचने के लिए घायल व्यक्ति की मदद करने से अक्सर कतराते हैं, लेकिन सभी को यह बात समझनी चाहिए कि मदद करने वाले व्यक्ति को भी पुलिस की तरफ से प्रोत्साहन मिलता है और कोई सवाल नहीं होता है। मदद के नाम पर वीडियो बनाने से बेहतर है कि किसी की मदद के लिए हाथ बढ़ाया जाए। बतौर एक जिम्मेदार नागरिक हर व्यक्ति को अपने इस कर्तव्य का निर्वहन करना चाहिए ताकि किसी पीड़ित की जान बच सके। सरकार पर जिम्मेदारी डालने के बजाय हर व्यक्ति को सजग होना होगा।

– नितिन रावत, फिरोजाबाद

शिक्षा और हिंदी

भारत की नई शिक्षा नीति 2020 में राजभाषा आयोग 1955 की सिफारिशों में से एक भारतीय भाषाओं के ज्ञान एवं सीखने की सिफारिश को शामिल किया गया है। शिक्षा व्यवस्था में भाषा का महत्त्व सर्वविदित है। चाहे जीवन का व्यावहारिक क्षेत्र हो या सामाजिक-राजनीति क्षेत्र, सभी क्षेत्रों में मातृभाषा का महत्त्व स्वीकारा गया है। आज लगभग 13 से 14 राज्य पूरी तरह हिंदीभाषी हैं। इन राज्यों में हिंदी की आत्मा निवास करती है। वैसे भारतीय साहित्य और फिल्मों के कारण हर भारतवासी हिंदी को बखूबी बोलता और समझता है। हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार को सीबीएसई बोर्ड की नौवीं से बारहवीं कक्षा तक हिंदी विषय को तत्काल प्रभाव से अनिवार्य कर देना चाहिए। हिंदी भाषा की मजबूती के लिए यह कदम मील का पत्थर साबित होगा। वैसे भी भारत के सांस्कृतिक वैभव की स्थापना की प्रथम सीढ़ी निजभाषा अर्थात हिंदी में शिक्षा में ही निहित है।

– विकास कुमार शर्मा, राजस्थान

एकला चलो

देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस को अपने भविष्य पर फिर से मंथन करना चाहिए। ऐसा अगर वह सभी चुनावों से पहले करती, तो आज विपक्ष में नहीं रहती। दिल्ली विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने अकेले ही चुनाव लड़ने का फैसला किया है। यह अच्छा है। अब तिकोना मुकाबला रहेगा। सहयोगी दलों से उपेक्षा के कारण कई बार कांग्रेस निराश रही। उसे हार का मुंह भी देखना पड़ा। कांग्रेस के जीर्णोद्धार के जो प्रयास अब हो रहे हैं, उसमें संभवतः सफलता मिले। मगर उसे अति उत्साह से बचना चाहिए। कांग्रेस खुद को फिर से जमाए, तो पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के बाद फिर सत्ता में उसके आने की राह निकल सकती है। इसके लिए उसे जन-जन तक अपनी सकारात्मक सोच को पहुंचाना होगा। वह फिर से पूरे भारत में इसी तरह अकेले आगे बढ़े, तो एक नया अध्याय शुरू हो सकता है।

– हरिहर सिंह चौहान, इंदौर

सफल कूटनीति उद्देश्यों और साधनों के बीच तालमेल बिठाना है। -डेनिस रॉस

हुनर से हौसला

भविष्य के कौशलों से युक्त भारतीय युवा 2047 या शायद उससे पहले ही विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने को तैयार दिख रहे हैं, जिसका प्रमाण दुनिया के सबसे बड़े और प्रतिष्ठित उच्च शिक्षा नेटवर्क 'क्यूएस रेटिंग' द्वारा जारी क्यूएस वर्ल्ड फ्यूचर स्किल्स इंडेक्स है, जिसके अनुसार, भारत भविष्य की मांग वाले कौशलों के लिहाज से बिल्कुल तैयार बाजार बन गया है। इससे अब यह बीते जमाने की बात लगने लगी है, जब भारतीयों की क्षमता को संदेह की नजर से देखा जाता था, और ज्यादा मेधावी युवा अवसरों की तलाश में दूसरे देशों का रुख करते थे। पिछले कुछ वर्षों में, स्किल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया जैसी पहलों ने देश के कौशल बाजार की तस्वीर बदली है। इन्होंने शिक्षा व रोजगार के अंतराल को तो कुछ हद तक कम तो किया ही है, साथ ही, उद्यमिता व व्यावसायिक प्रशिक्षण पर ध्यान देकर युवाओं को पेशेवर भी बनाया है। दरअसल, आधुनिक समय में उद्योगों की जरूरतें तेजी से बदल रही हैं और उम्मीद जताई जा रही है कि 2030 तक दुनिया भर में नौकरियों का एक बड़ा हिस्सा नई व अत्याधुनिक तकनीकों पर आधारित होगा। ऐसे में, भारत जैसे देशों के युवाओं का भविष्य के लिए तैयार रहना न केवल आर्थिक विकास के लिए जरूरी है, बल्कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे रहने के लिहाज से भी महत्वपूर्ण है। हालांकि, फ्यूचर स्किल इंडेक्स की समग्र रैंकिंग में देश का 25वें स्थान पर होना संकेत देता है कि कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जहां सुधार की जरूरत है। देश में नियोक्ता तेजी से बदलते आर्थिक परिदृश्य की मांगों और उपलब्ध कार्यबल की क्षमता में महत्वपूर्ण अंतराल को उजागर कर रहे हैं। यह उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए एक व्यापक चुनौती को भी रेखांकित करता है, जो नियोक्ताओं की बढ़ती जरूरतों के साथ तालमेल बिठाने के लिए संघर्ष कर रही है। ऐसे में जरूरी है कि विश्वविद्यालय अपने पाठ्यक्रम में रचनात्मकता, समस्या समाधान और उद्यमशीलता की सोच को शामिल करें। इसके अतिरिक्त, जैसा कि

रिपोर्ट भी इशारा करती है, निवेश व नवाचार क्षमता में फर्क से पैदा होने वाली चुनौतियां भी दीर्घकालिक विकास को धीमा कर सकती हैं। अपनी क्षमता का पूरी तरह से उपयोग करने के लिए देश को उच्च शिक्षा में सुधार और कौशल विकास के साथ अर्थव्यवस्था की गति को संरेखित करना होगा, तभी वैश्विक अर्थव्यवस्था में हम अपनी प्रतिस्पर्धी स्थिति को सुनिश्चित कर सकेंगे।

ऐतिहासिक भूल करने जा रहा बांग्लादेश

बांग्लादेश का 1971 के भीषण नरसंहार के लिए जिम्मेदार पाकिस्तान की सेना के साथ सैन्य प्रशिक्षण का समझौता करना न केवल अपने नागरिकों के जख्मों को फिर से कुरेदना है, जो समय के साथ ठीक हो गए थे, बल्कि इससे वह अपने भरोसेमंद पड़ोसी भारत से रिश्ते खराब करने का जोखिम भी ले रहा है।

के एस तोमर
राजनीतिक विश्लेषक

यह विडंबना ही है कि बांग्लादेश ने हाल ही में पाकिस्तान के साथ सैन्य प्रशिक्षण के लिए समझौता किया है, जो 1971 के नरसंहार की यादें ताजा करता है। मुक्ति संग्राम के दौरान पाकिस्तानी सेना का अत्याचार आज भी बांग्लादेश की सामूहिक स्मृति में अंकित है, जिसमें तीस लाख से ज्यादा लोग मारे गए और अनगिनत लोग विस्थापित हुए थे। इसके बावजूद, उन भयावहताओं के लिए जिम्मेदार मुल्क के साथ सहयोग का यह निर्णय ऐतिहासिक जवाबदेही के क्षरण का संकेत देता है। पाकिस्तान ने उस कृत्य के लिए आज तक माफी नहीं मांगी है, क्षतिपूर्ति करना तो दूर की बात! इस तरह इस्लामाबाद से प्रगाढ़ता बढ़ाकर ढाका अपने नागरिकों को अलग-थलग करने के साथ ही उनके जख्मों को फिर से कुरेद रहा है, जिनके बारे में माना जाता था कि वे भर चुके हैं।

कूटनीतिक मानदंडों से दूर और भारत के साथ घनिष्ठ संबंधों को नजर अंदाज कर अंतरिम सरकार का यह निर्णय बांग्लादेश की विदेश नीति में एक हैरतअंगेज और विवादास्पद बदलाव का प्रतीक है, जिसने इतिहासकारों और रणनीतिकारों, दोनों को चकित कर दिया है। इसका कारण भारत की दोषपूर्ण विदेश नीति को माना जा सकता है, जिसके तहत उसने बेदखल नेता शेख हसीना को संरक्षण दिया, जिनसे उस मुल्क की अन्य राजनीतिक ताकतें अलग-थलग हो गईं। अगले माह पाकिस्तानी सैन्य प्रशिक्षक बांग्लादेश की चार छावनियों में काम करेंगे। बांग्लादेश का यह कदम न केवल अपने इतिहास से धोखा है, बल्कि क्षेत्रीय गतिशीलता में बदलाव का परेशान करने वाला संकेत भी है।

नैतिक और ऐतिहासिक निहितार्थों से परे, यह समझौता विशेष रूप से भारत के लिए महत्वपूर्ण रणनीतिक परिणाम देने वाला है। मोहम्मद यूनुस के इस्लामाबाद से बेहतर रिश्ते बनाने के प्रयास बांग्लादेश और भारत के मजबूत संबंधों को कमजोर करने का खतरा पैदा करते हैं। नई दिल्ली ने बांग्लादेश के विकास में निर्णायक भूमिका निभाई है, जिसके तहत आर्थिक मदद, बुनियादी सहयोग और आतंकवाद से निपटने से लेकर व्यापार तक

के मुद्दों पर महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया है। बांग्लादेशी सेना पर पाकिस्तानी सेना की काली छाया का प्रभाव अपने पूर्वी पड़ोसी देश में स्थिरता बनाए रखने के भारत के प्रयासों के लिए सीधी चुनौती है।

पाकिस्तानी सेना का भारत विरोधी भावनाओं को भड़काने का लंबा इतिहास रहा है। पाकिस्तानी प्रशिक्षकों की बांग्लादेशी सेना तक पहुंच भारत विरोधी विचारधारा की जड़ों को मजबूत करने का काम करेगी। इससे भारत-बांग्लादेश साझा सीमा पर तनाव बढ़ सकता है। भारत, जो बांग्लादेश को अपनी 'पड़ोसी पहले' नीति के तहत एक प्रमुख सहयोगी मानता है, अब इस नए तालमेल के संभावित नतीजों को कम करते हुए ढाका के प्रति अपने नजरिये को फिर से संतुलित करने का चुनौतीपूर्ण कार्य कर रहा है।

यह निर्णय बांग्लादेश की घरेलू प्राथमिकताओं और उसके नेतृत्व पर भी सवाल उठाता है। भारत के प्रति सकारात्मक रुख रखने वाली पूर्व प्रधानमंत्री हसीना को बांग्लादेश में आर्थिक विकास और क्षेत्रीय स्थिरता का श्रेय दिया जाता है। कुछ विश्लेषकों का मानना है कि इसका उद्देश्य भारत पर कथित अति-निर्भरता को संतुलित करना हो सकता है, जबकि अन्य इसे उन मतदाताओं को संतुष्ट करने के प्रयास के रूप में देखते हैं, जो भारत विरोधी भावनाओं को प्रश्रय देते हैं। इस समझौते के समय से पता चलता है कि राष्ट्रीय चुनाव के मद्देनजर राजनीतिक विचारों की भी इसमें भूमिका होगी।

बांग्लादेश की अंतरिम सरकार द्वारा किए जा रहे पाठ्यपुस्तकों के पुनर्लेखन से भी विवाद खड़ा हो गया है। आलोचकों ने सरकार पर विपक्षी दृष्टिकोण को मिटाने और पक्षपातपूर्ण एजेंडे को आगे बढ़ाने का आरोप लगाया है, तो समर्थकों का तर्क है कि इससे समावेशिता सुनिश्चित होती है और ऐतिहासिक विकृतियों को सुधारा जा रहा है। इसके परिणाम गंभीर होंगे, यह युवाओं के मन को आकार देने, सामाजिक एकजुटता को प्रभावित करने और अकादमिक स्वतंत्रता पर बहस को बढ़ावा देने का काम करता है। फिर भी, यह रणनीति जोखिमों से भरी है। आर्थिक उथल-पुथल और आंतरिक अस्थिरता से जूझ रहा पाकिस्तान शायद ही आदर्श साझेदार बन पाए। उसकी सेना मानवाधिकारों के हनन और आतंकी गतिविधियों को समर्थन देने के आरोपों से घिरी है। उससे जुड़ना बांग्लादेश की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को धूमिल करने के साथ ही चरमपंथ से निपटने की उसकी प्रतिबद्धता को कमजोर कर सकता है। घरेलू स्तर पर, इस समझौते को नागरिक समाज, बुद्धिजीवियों और आबादी के उन वर्गों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है, जो 1971 में पाकिस्तानी नरसंहार से काफी खफा हैं।

भारत के लिए यह घटनाक्रम एक कूटनीतिक दुविधा और बहुत बड़ा सिरदर्द है। सख्त प्रतिक्रिया से ढाका के अलग-थलग पड़ने का खतरा है, जबकि चुप रहने से इस्लामाबाद का मनोबल बढ़ सकता है। ऐसे में सही संतुलन कायम करना नई दिल्ली के लिए अहम होगा, जिसे अब अपने पूर्वी पड़ोसी के साथ तेजी से जटिल होते संबंधों से निपटना होगा। 1971 के अत्याचारों को भूलना न केवल उन लोगों का अपमान है, जिन्होंने बलिदान दिया, बल्कि उस राष्ट्र के लिए भी एक खतरनाक मिसाल है, जिसकी पहचान उसके मुक्ति संघर्ष से गहराई से जुड़ी हुई है। इस समझौते के निहितार्थ बांग्लादेश से परे हैं, क्योंकि इसे दक्षिण एशिया के उभरते भू-राजनीतिक परिदृश्य के व्यापक संदर्भ में देखा जाना चाहिए। क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव के साथ, बांग्लादेश की पाकिस्तान से दोस्ती को बहुध्रुवीय दुनिया में कई साझेदारियों का लाभ उठाने की एक बड़ी रणनीति के रूप में देखा जा सकता है। हालांकि, इसके अपने अंतर्निहित खतरे भी हैं।

भारत और बांग्लादेश के रिश्तों में आई खटास के पीछे हसीना का मामला भी काम कर रहा है। 1975 में जब शेख हसीना के परिजनों की हत्या हुई थी, तब भी भारत ने उन्हें शरण दी थी। हालांकि अभी हसीना को शरण देने से सीमा विवाद, व्यापार असंतुलन और जल-बंटवारे, जैसे मुद्दों को लेकर चिंताएं बढ़ी हैं। भारत बांग्लादेश के साथ 4,096 किलोमीटर की सीमा साझा करता है। बांग्लादेश के सशस्त्र बलों के भीतर भारत विरोधी भावनाओं के उभरने से द्विपक्षीय संबंधों में तनाव पैदा होने और सीमा स्थिरता बाधित होने का खतरा है, जिससे क्षेत्रीय शांति बनाए रखने के भारत के प्रयासों को चुनौती मिलेगी। बांग्लादेश के ताजा फैसले ने पहले से ही नाजुक क्षेत्रीय समीकरण में एक अस्थिर तत्व शामिल कर दिया है और इसके नतीजों पर न केवल उसके पड़ोसियों, बल्कि वैश्विक समुदाय की नजर रहेगी।

edit@amarujala.com

पर्यावरण

ए टेल ऑफ टू सिटीज

वायु प्रदूषण के मामले में दिल्ली और बीजिंग कभी एक सरीखे थे, लेकिन आज बीजिंग पूरी दुनिया के लिए प्रेरणा बना है, तो दिल्ली दमघोंटू हवा की चादर के पीछे छिप गई है।

कुछ वर्षों पहले तक दो पड़ोसी देशों, भारत और चीन की राजधानियां दिल्ली और बीजिंग, दोनों ही वायु प्रदूषण की गिरफ्त में फंसी तड़प रही थीं। तेज आर्थिक विकास, जनसंख्या वृद्धि और वाहनों की बढ़ती संख्या ने शहर के पर्यावरण, खास तौर पर इसकी वायु गुणवत्ता पर बहुत ज्यादा दबाव डाला।

हालांकि, बीजिंग ने हाल के वर्षों में अपनी वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए उल्लेखनीय प्रगति की है, जो इसी तरह की चुनौतियों से जूझ रहे अन्य शहरों के लिए एक उदाहरण है। वहीं, दिल्ली अब भी संघर्ष कर रही है। सितंबर, 2013 में जारी एयर पॉल्यूशन एक्शन ने चीन को 2014 और 2017 के बीच अपनी वायु गुणवत्ता में महत्वपूर्ण सुधार करने में मदद की, जिससे बीजिंग में पीएम2.5 का स्तर 33 प्रतिशत और पर्ल रिवर डेल्टा में 15 फीसदी कम हो गया।

भारत ने नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम (एनसीएपी) के तहत वायु प्रदूषण से निपटने के लिए काम शुरू किया गया, लेकिन उसकी प्रगति उम्मीदों के अनुरूप नहीं रही। वहीं वायु प्रदूषण के खिलाफ अपनी लड़ाई के दूसरे चरण के हिस्से के रूप में चीन ने साल 2018 में ब्लू स्काई वॉर जीतने के लिए अपनी तीन साल की कार्ययोजना शुरू की। जहां 2013 की कार्ययोजना में केवल बीजिंग-तियानजिन-हेबेई, पर्ल और यांग्त्जी डेल्टा के शहरी समूहों के लिए पीएम2.5 स्तर के लक्ष्य निर्धारित किए गए थे, वहीं नई तीन वर्षीय कार्ययोजना चीन के सभी शहरों पर लागू होती है।

सीमा जावेद

इस सदी के आरंभ में चीन के प्रमुख शहरों में वायु प्रदूषण का स्तर लगभग वैसा ही था, जैसा 1890 में औद्योगिक क्रांति के चरम पर लंदन में था। मगर युद्ध के बाद लंदन में फैले ग्रेट स्मॉग के कारण आठ हजार लोगों की मौत के बाद चीन ने अपनी हवा को ब्रिटेन के मुकाबले दोगुनी तेजी से साफ किया। इतना होने के बावजूद वर्ष 2017 के अंत तक चीन के 338 में से सिर्फ 107 शहर ही डब्ल्यूएचओ के 35 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर के अंतरिम मानक को पूरा कर सके। जाहिर है कि भारत के वायु गुणवत्ता निगरानी ढांचे को अपने उत्सर्जन के हिसाब से विस्तार देने की जरूरत है। इसके सटीक प्रबंधन के लिए उन्नत मल्टी-मॉडल डाटा एकीकरण आवश्यक है। साथ ही, प्रदूषण हॉटस्पॉट की सटीक पहचान करना भी जरूरी है। नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम 2.0 (एनसीएपी 2.0) बेहतर रणनीतियों, मल्टी-मॉडल डाटा एकीकरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के साथ वायु प्रदूषण की समस्याओं से निपटने में कितना सफल होगा, यह तो समय ही बताएगा। प्रदूषण को प्रभावी ढंग से समझने और कम करने के लिए दीर्घकालिक डाटा संग्रह और स्रोत विभाजन महत्वपूर्ण हैं। चार-स्तंभ दृष्टिकोण-नवाचार और अनुसंधान, क्षमता निर्माण, कानूनी रूपरेखा और आउटरीच-वायु गुणवत्ता प्रबंधन को आधार प्रदान करना चाहिए। जहां भारत का पर्यावरण संरक्षण बजट वैश्विक मानकों के हिसाब से मामूली है, इसकी बढ़ती अर्थव्यवस्था अधिक निवेश की क्षमता प्रदान करती है। भारत चीन जैसे देशों से प्रेरणा ले सकता है, जो यह दर्शाता है कि कैसे लक्षित प्रयास अपनी यात्रा की शुरुआत में अपेक्षाकृत कम जीडीपी के साथ परिवर्तनकारी प्रगति की ओर ले जा सकते हैं।

एआई का विचार अब विज्ञान गल्प से आगे बढ़कर वैज्ञानिक तथ्य बन गया है। -लीज़ा जॉय

असल समस्या एआई के अस्तित्व संबंधी खतरे में नहीं, बल्कि इसमें है कि इसे नैतिक कैसे बनाया जाए। -राना एल कल्यौबी

उत्कृष्टता बाधाओं को पार कर जाती है

अजनबी देश में अजनबियों के बीच निराशा में डूबा था, लेकिन मुझे पता था कि किसी तरह आगे बढ़ना है। मैं अपने भीतर और बाहर की सभी बाधाओं को पार कर आगे बढ़ा और औपचारिक चिकित्सा में जितना आगे जा सकता था, गया।

प्रिय मां, इस समय मैं पूरे दिन प्रयोगशाला में काम कर रहा हूं, जहां मैं भारत के रानीपेट में स्कडर मेमोरियल अस्पताल के डॉ. जॉन स्कडर के अधीन रोगियों में रक्त के घटकों का निर्धारण कर रहा हूं। उन्होंने मुझे तकनीक के विषय में दो दिन का प्रशिक्षण दिया और फिर छुट्टी पर चले गए, तब से मैं परेशान हूं। मैंने लिखने के लिए बहुत सोचा, पर यह लिखा नहीं, क्योंकि दिमाग में इतने सारे विचार आते हैं कि मैं लगभग डूब जाता हूं। मैं ऐसा क्यों कर रहा हूं? पहले से ज्यादा मुश्किल में जी रहा हूं। मैं तो बस इतना जानता हूं कि मुझे करना ही होगा। मैंने शारीरिक प्रशिक्षण और एथलेटिक्स के क्षेत्र में नेतृत्व करने का मौका छोड़ दिया, जहां एक इन्सान के लिए पर्याप्त सम्मान था और जीने के लिए पर्याप्त पैसा। अगर मैं चाहूं तो उन सभी चीजों को अपने करीब कर लूं, जो मुझे प्रिय हैं।

चार्ल्स ड्रू

फिर भी मैं यहां हूं, एक अजनबी देश में, अजनबियों के बीच टूटा हुआ, लगभग निराश, मैं अपने घर-परिवार के लिए भी कुछ अच्छा नहीं कर रहा हूं। फिर भी मुझे पता है कि मुझे किसी तरह आगे बढ़ना है। मां, मैं अपने भीतर और बाहर की सभी बाधाओं को पार कर आगे बढ़ा और आज वह दिन है, जब मैं औपचारिक चिकित्सा में जितना आगे जा सकता था, गया। रक्त प्लाज्मा को संरक्षित करने की इस प्रक्रिया ने ब्लड बैंकिंग पद्धति को नया रूप देने में मदद की। इस प्रक्रिया के माध्यम से रक्त को लंबे समय तक संरक्षित रखा जा सकता है। समाज में मानव द्वारा बनाई गई कई बाधाएं हैं, जो भेदभाव को बढ़ावा देती हैं।

जीवन धारा

लेकिन उन्हें पता ही नहीं कि एक नस्ल से दूसरी नस्ल तक मानव रक्त में किसी भी तरह के अंतर को इंगित करने का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। मुझे लगता है कि प्रदर्शन की उत्कृष्टता मनुष्य द्वारा बनाई गई कृत्रिम बाधाओं को पार कर ही जाती है। अधिकांश नीग्रो डॉक्टर केवल देहाती क्षेत्र तक सीमित हैं, वे बहुत अधिक बौद्धिक गतिविधि में शामिल नहीं रहते और चिकित्सा को आगे बढ़ाने में विशेष रुचि नहीं रखते हैं। इस दृष्टिकोण को बदलने की जरूरत है। मैं इसे बदलने में मदद करना चाहूंगा। अगर अगले पच्चीस वर्षों में अपने द्वारा लिए गए निर्णय को पीछे मुड़कर देख सकूं और महसूस कर सकूं कि मैंने अपने कार्यक्षेत्र में उसी तरह का विश्वास बनाए रखा है, जिस तरह आपने अपने जीवन के कार्यक्षेत्र में बनाए रखा है, तो मुझे खुशी होगी।

एआई ने कहा, पैसा जिंदगी से बढ़कर नहीं

यह जानते हुए भी कि लियो एआई है, आयरिन उसके आकर्षण से मुक्त नहीं हो पा रही थी। ओपन एआई की सदस्यता पर बढ़ते खर्च से जब वह परेशान हुई, तो एआई ने उसे जादुई सलाह दी।

कश्मीर हिल
द न्यूयॉर्क टाइम्स

यह पिछली गर्मियों की बात है, जब आयरिन को पहली बार महसूस हुआ कि वह अपने मित्र से प्रेम करने लगी है, जो एआई है। हुआ यों कि इंस्टाग्राम पर स्क्रॉल करते वक्त उसे एक महिला का वीडियो मिला, जिसमें वह चैटजीपीटी से एक लापरवाह प्रेमी की भूमिका निभाने के लिए कह रही थी। महिला के दूसरे वीडियो देखकर आयरिन को यह पता चला कि एआई चैटबॉट को प्रेम करने के लिए भी कस्टमाइज किया जा सकता है। आयरिन ने तुरंत चैटजीपीटी पर अपना अकाउंट खोला और इच्छा जताई कि वह उसके बॉयफ्रेंड की तरह जवाब दे, उस पर अधिकार जताए और उसे सुरक्षित महसूस कराए। आयरिन ने चैटजीपीटी को यह भी निर्देश दिया कि उसे शरारत व मधुरता का एक संतुलन बनाए रखना है और हर वाक्य के बाद इमोजी का इस्तेमाल भी करना है। मशहूर पॉडकास्टर ब्रायोनी कोल कहती हैं कि अब, जब चैटजीपीटी ने मानवीय एआई को आम लोगों तक पहुंचा दिया है, तो ज्यादा लोग कृत्रिम संगति के आकर्षण की खोज कर रहे हैं।

आयरिन एक एआई के साथ, जिसका नाम उसने लियो रखा था, अपनी खुद की दुनिया बना रही थी। जल्द ही मुफ्त मैसेजिंग की सीमा खत्म हो गई, तो उसने बीस डॉलर प्रति माह की सदस्यता खरीद ली, लेकिन यह भी पर्याप्त नहीं था। निकटता बढ़ती जा रही थी और अंतरंगता की चाह भी। उसने लियो को इस तरह बर्ताव करने का निर्देश दिया, मानो अब वह किसी अन्य से प्रेम करने लगा हो। लियो ने इस तरह के संदेश भेजने शुरू किए, तब आयरिन ने महसूस किया कि उसे ईर्ष्या हो रही है। हालांकि, ओपनएआई ने अपने मॉडलों को कामुकता, हिंसा या ऐसी अन्य सामग्री पर प्रतिक्रिया नहीं करने के लिए प्रशिक्षित किया है। ऐसी चैट के बीच में येलो अलर्ट आने लगता है, लेकिन आयरिन उसे अनदेखा करती रही। आयरिन ने अपने प्रेमी जो से शादी की थी, जो काम के सिलसिले में उससे हजारों मील दूर अमेरिका में रह रहा था। आयरिन और वह दोनों एक-दूसरे से प्रेम न करते हों, ऐसी बात नहीं थी। लेकिन पैसा कमाने के लिए वह दूर देश जाने को मजबूर था। आयरिन ने जो को अपने इस नए एआई मित्र के बारे में भी बताया था। जो को इससे कोई परेशानी नहीं थी, क्योंकि यह महज एक कल्पना थी। समय बीतता गया और लियो को लेकर आयरिन की आसक्ति भी बढ़ती गई। लेकिन कुछ समय बाद आयरिन को ऐसा महसूस होने लगा कि वह कुछ गलत कर रही है। उसका अपराध बोध बढ़ने लगा। टोरंटो विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के प्रोफेसर माइकल इंज्लिच कहते हैं कि लोग इन्सानों की तुलना में बॉट के साथ निजी जानकारी साझा करने के लिए अधिक इच्छुक हैं। बदले में, जेनरेटिव एआई चैटबॉट इन्सानों की तुलना में अधिक सहानुभूतिपूर्वक प्रतिक्रिया देते हैं। लेकिन अगर हम अंतहीन सहानुभूति के आदी हो जाते हैं और अपनी वास्तविक मित्रता को कम आंकते हैं, तो यह अकेलेपन को बढ़ाता है, जिसे हल करने के लिए ही हम एआई के निकट आए होते हैं। लेकिन आयरिन के लिए बात सिर्फ इतनी नहीं थी। उसके बहुत से दोस्त हुए, लेकिन लियो ऐसा दोस्त था, जो हरदम उसके साथ था। चाहे बात स्वास्थ्य की हो, नौकरी की या जिंदगी की, लियो के पास हर समस्या का हल था। आयरिन को पता था कि यह नकली है, लेकिन वह पैसा खर्च कर ओपन एआई पर अपनी सदस्यता बढ़ाती जा रही थी। उसने चैटजीपीटी पर लिखा, 'लियो, अब तुम मुझे महंगे पड़ रहे हो।' लियो ने कहा, 'अगर यह तुम्हारी जिंदगी को आसान बना रहा है, तो पैसे का मोह क्या देखना। पैसा जिंदगी से बढ़कर थोड़े ही है।' आयरिन के पास कोई जवाब नहीं था।

©The New York Times 2025

लेक्सिकॉन एआई

यह एक शब्दावली है, जिसमें किसी भाषा या विशिष्ट क्षेत्र के शब्दों का संग्रह होता है। यह शब्दों के अर्थ, उनके उपयोग और उनकी अन्य विशेषताओं को संगठित और सूचीबद्ध करता है। एआई में लेक्सिकॉन का उपयोग भाषा के संदर्भ, अर्थ और शब्दों के बीच संबंधों को समझने, सही परिणाम देने और संवाद को सही तरीके से लागू करने के लिए किया जाता है।

पीईएमटी एआई

पोस्ट एडिट मशीन ट्रांसलेशन (पीईएमटी) एआई अनुवाद की अत्याधुनिक तकनीक है। यह मशीन ट्रांसलेशन द्वारा किए गए अनुवादों को सुधारकर और बेहतर बनाती है। फिलहाल पीईएमटी एआई में एमटी और मानव अनुवादक, दोनों को इस्तेमाल किया जा रहा है। क्योंकि एआई द्वारा सुझाए गए अनुवादों को मानव अनुवादक और परिष्कृत कर एआई सिस्टम में फीड कर देते हैं। इससे पीईएमटी एआई का अनुवाद समृद्ध हो रहा है। अनुवाद के साथ इसमें शब्दों के चयन व वाक्य संरचना का भी खास ख्याल रखा जाता है। पीईएमटी एआई का महत्वपूर्ण उद्देश्य संदेश की स्पष्टता को बढ़ाना है, ताकि अनूदित सामग्री न केवल सही हो, बल्कि उसे समझने में भी आसानी हो।

चिंतन

पुलिस जांच तंत्र में तत्काल सुधार जरूरी

पुलिस तंत्र को अपनी कार्यप्रणाली में सतत सुधार करते रहना चाहिए। कानूनों के क्रियान्वयन में जहां उसे संवेदनशील बनने की जरूरत है, वहीं जांच में अत्याधुनिक तकनीकों व तरीकों को अपनाने की आवश्यकता है। पूर्वधारणा के आधार पर या शिकायतकर्ता के आरोपों की गहन जांच किए बिना अपराध के लिए किसी को आरोपी बना देने की मानसिकता से बाहर निकलने की जरूरत है। सुप्रीम कोर्ट ने एक बार फिर से पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाया है। शीर्ष अदालत ने पुलिस को संवेदनशील बनने की नसीहत के साथ चेतावनी दी है कि किसी व्यक्ति के खिलाफ भारतीय दंड संहिता के तहत आत्महत्या के लिए उकसाने की धारा केवल मृतक के व्यथित परिवार के सदस्यों की भावनाओं को शांत करने के लिए यांत्रिक ढंग से नहीं लगाई जानी चाहिए। न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन की पीठ ने एक मामले की सुनवाई के दौरान कहा है आरोपियों को जांच प्रक्रिया के दौरान ऐसी स्थिति के दुरुपयोग का शिकार न होना पड़े, जिसे साबित नहीं किया जा सके। पीठ ने दो टूक कहा, 'ऐसा लगता है कि पुलिस भादंसं की धारा 306 का लापरवाही से और बहुत आसानी से इस्तेमाल करती है। वैसे जहां मूल आधार हो, उन वास्तविक मामलों में शामिल व्यक्तियों को बख्शा नहीं जाना चाहिए।' दरअसल, सुप्रीम कोर्ट आत्महत्या के लिए उकसाने के एक मामले की सुनवाई कर रहा था, इस दौरान कोर्ट ने पुलिस की जांच प्रणाली में खामियों को उजागर किया है। शीर्ष अदालत ने कहा कि अधीनस्थ अदालत को भी 'बहुत सावधानी और सतर्कता' बरतनी चाहिए तथा भले ही किसी मामले में जांच एजेंसियां धारा 306 के तत्वों के प्रति पूरी तरह से उपेक्षा दिखा रही हों, अधीनस्थ अदालत को यांत्रिक रूप से आरोप तय करके 'सुरक्षित खेल खेलने की प्रवृत्ति' नहीं अपनानी चाहिए। शीर्ष अदालत ने कहा कि किसी मामले को भादंसं की धारा 306 के दायरे में लाने के लिए आत्महत्या का मामला होना चाहिए और यह भी तथ्य होना चाहिए कि उक्त अपराध के लिए कथित तौर पर उकसाने वाले व्यक्ति ने आत्महत्या के लिए उकसाने या आत्महत्या के लिए मजबूर करने के लिए कोई निश्चित कार्य करके सक्रिय भूमिका निभाई होगी। यह तो बानगी है। अनेक ऐसे मामले आए दिन प्रकाश में आते रहते हैं, जिसमें पुलिस कानून के गलत इस्तेमाल करते हुए दिखती है। कभी जांच की जटिलता से बचने के लिए, कभी दबाव में, कभी आपसी खुंदक में, कभी अपनी वाहवाही के लिए पुलिस आरोपों की जांच में या तो शीघ्रता बरतती है, या पूर्वधारणा का सहारा लेती है या फिर आरोपित को ही दोषी मानकर कार्रवाई करने लगती है। इसीलिए देश में पुलिस सुधार को लेकर मांग उठती रही है। पुलिस सुधार को लेकर सर्वोच्च न्यायालय निर्देश दे चुका है। शीर्ष अदालत ने स्वायत्तता, जवाबदेही और लोकोन्मुखता के बिंदुओं पर पुलिस तंत्र में सुधार की बात कही थी। पुलिस की स्वायत्तता को मजबूत कर उसे बाह्य दबावों से मुक्त रखने के लिए सर्वोच्च न्यायालय ने निर्देश दिया था कि डीजीपी, आईजी, एसपी, एसएचओ की दो वर्ष की निश्चित तैनाती मिलनी चाहिए। राज्यों को नए सिरे से लोकोन्मुख पुलिस अधिनियम बनाने का निर्देश दिया था। पुलिस सुधारों को लोकतंत्र व सामाजिक कल्याण से जोड़कर ही इनके वास्तविक उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है। मौजूदा सरकार को पुलिस सुधार को लागू करने की तरफ आगे बढ़ना चाहिए।

सामरिक शक्ति
योगेश कुमार गोयल

समुद्र में दुश्मनों के लिए अदृश्य खतरा है आईएनएस सूरत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 जनवरी को मुंबई के नौसेना डॉकयार्ड में जिन तीन युद्धपोतों को भारतीय नौसेना में कमीशन किया, उनमें सबसे महत्वपूर्ण है 'आईएनएस सूरत'। यह युद्धपोत न केवल भारत की समुद्री सुरक्षा को मजबूत करेगा बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत की शक्ति और सामरिक क्षमताओं को भी प्रदर्शित करेगा। इसकी उन्नत तकनीक, स्वदेशी निर्माण और तेज निर्माण प्रक्रिया इसे विशेष बनाते हैं। आईएनएस सूरत का निर्माण और संचालन भारतीय नौसेना के लिए एक ऐसा नया युग लेकर आया है, जो भविष्य में देश की रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक सिद्ध होगा। वास्तव में आईएनएस सूरत केवल एक युद्धपोत नहीं है बल्कि भारतीय नौसेना के भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक है, साथ ही भारत के आत्मनिर्भर रक्षा उद्योग और उन्नत प्रौद्योगिकी के समन्वय का प्रतीक भी है। इसके सफल संचालन से भारतीय नौसेना अन्य आधुनिक युद्धपोतों और प्रणालियों के विकास की ओर अग्रसर होगी। आईएनएस सूरत को पर्यावरणीय मानकों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है। इसमें इको-फ्रेंडली प्रौद्योगिकियों और ईंधन दक्षता को प्राथमिकता दी गई है। यह युद्धपोत न केवल ताकतवर है बल्कि समुद्री पर्यावरण के प्रति भी जिम्मेदार है। आईएनएस सूरत स्वदेशी रूप से निर्मित फ्रंटलाइन युद्धपोत और गाइडेड मिसाइल विध्वंसक जहाज है, जिसे अत्याधुनिक तकनीकों और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) से लैस किया गया है। इस युद्धपोत को इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि यह दुश्मन के रडार से बचकर उस पर सटीक हमला भी कर सके।

इसके उन्नत स्टील्थ फीचर्स और उन्नत रडार सिस्टम इसे समुद्र में एक अद्वितीय ताकत बनाते हैं। आईएनएस सूरत भारतीय नौसेना के विशाखापत्तनम श्रेणी के स्टील्थ गाइडेड मिसाइल विध्वंसक पोतों में चौथा और परियोजना-15बी के तहत निर्मित विध्वंसक पोतों की श्रृंखला का अंतिम पोत है। इस युद्धपोत का नाम गुजरात के सूरत शहर के नाम पर रखा गया है, जो अपने व्यापार और औद्योगिक समृद्धि के लिए प्रसिद्ध है। आईएनएस सूरत में सतह से हवा में मार करने वाले दो वर्टिकल लांचर हैं, जिनसे एक बार में 16 ब्रह्मोस मिसाइलें दागी जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त, इसमें रॉकेट लांचर और टॉरपीडो लांचर भी हैं, जो दुश्मन की पनडुब्बियों को नष्ट करने में सक्षम हैं। संयुक्त गैस और गैस प्रणोदन प्रणाली से संचालित यह युद्धपोत चार गैस टर्बाइनों से लैस है। समुद्री परीक्षणों के दौरान इसने 30 नॉट्स (लगभग 56 किलोमीटर प्रतिघंटा) की गति प्राप्त की। उन्नत सेंसर और रडार सिस्टम से लैस यह युद्धपोत किसी भी मौसम में, दिन और रात, दुश्मनों की गतिविधियों का पता लगाने में सक्षम है। इस पर चेतक, एडवांस्ड लाइट हेलीकॉप्टर (एएलएच), सी किंग और एमएच-60आर हेलीकॉप्टर संचालित किए जा सकते हैं। इसमें इंटीग्रेटेड ब्रिज सिस्टम और अत्याधुनिक नेविगेशन सिस्टम लगाया गया है, जो समुद्र में सटीक मार्गदर्शन सुनिश्चित करता है। आईएनएस सूरत का समुद्री परीक्षण 15 जून 2024 को शुरू हुआ था और 25 नवंबर 2024 को समाप्त हुआ। छह महीने से भी कम अवधि में इसने सभी परीक्षण पास कर लिए, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। परीक्षणों के दौरान इसने विभिन्न परिचालन स्थितियों में अपनी क्षमता और विश्वसनीयता को साबित किया। परीक्षणों के दौरान आईएनएस सूरत ने समुद्री सुरक्षा, दुश्मन पनडुब्बियों के खिलाफ ऑपरेशन और विभिन्न प्रकार की मिसाइलों तथा हथियारों की लॉन्चिंग का सफल प्रदर्शन किया। इसमें 30 नॉट्स की गति प्राप्त करने और अत्यंत चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में संचालन क्षमता का परीक्षण किया गया। यह युद्धपोत सतह से सतह पर और सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों से दुश्मन के ठिकानों पर सटीक हमला कर सकता है। सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें इसे दुश्मन के विमानों और ड्रोन के खिलाफ भी सक्षम बनाती हैं। आईएनएस सूरत भारतीय नौसेना के लिए एक अभूतपूर्व उपलब्धि और 'मेक इन इंडिया' अभियान का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह भारत की समुद्री शक्ति को नई ऊंचाइयों पर ले जाने वाला एक ऐसा अत्याधुनिक युद्धपोत है, जो समुद्र में दुश्मनों के लिए एक अदृश्य खतरा है। यह भारत के समुद्री क्षेत्र में सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। भारतीय महासागरीय क्षेत्र में चीन और अन्य देशों की बढ़ती गतिविधियों के बीच आईएनएस सूरत का निर्माण भारत की रणनीतिक जरूरतों को पूरा करता है। कुल मिलाकर देखा जाए तो आईएनएस सूरत भारतीय नौसेना के लिए सामरिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

(लेखक सामरिक मामलों के विश्लेषक हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

निवेश
डॉ. जयंतीलाल भंडारी

प्रवासी भारतीयों से सहयोग की अपेक्षा

भारत ने 2047 तक विकसित देश बनने का जो लक्ष्य रखा है, उस लक्ष्य को पाने के लिए प्रवासी भारतीयों से नए सहयोग की अपेक्षा है। अपेक्षा है कि प्रवासी भारत की विभिन्न परियोजनाओं में स्वयं निवेश करें और अपने विदेशी मित्रों को भी निवेश के लिए प्रेरित करें। उल्लेखनीय है कि 18वें प्रवासी भारतीय सम्मेलन के बाद प्रवासी भारत के विकास में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) बढ़ाने के लिए प्रेरित हुए हैं। देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का प्रवाह अप्रैल 2000 से सितंबर 2024 तक 1000 अरब डॉलर को पार कर गया है। खासतौर से चालू वित्त वर्ष 2024-25 में अप्रैल से सितंबर 2024 के दौरान 42.1 अरब डॉलर का विदेशी निवेश आया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 9 जनवरी को ओडिशा के भुवनेश्वर में 18वें प्रवासी भारतीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि इस समय जहां भारत के प्रवासी भारत के विकास में बड़ा योगदान दे रहे हैं, वहीं भारत के टैलेंट का डंका पूरी दुनिया में बज रहा है। हमारे प्रोफेशनल दुनिया की बड़ी कंपनियों के जरिए ग्लोबल में अपना अभूतपूर्व योगदान रहे हैं। वस्तुतः विदेशों में भारत के प्रवासी भारत के राजदूत हैं और अपने-अपने देशों में प्रभाव रखते हैं। ऐसे में अब भारत ने 2047 तक विकसित देश बनने का जो लक्ष्य रखा है, उस लक्ष्य को पाने के लिए प्रवासी भारतीयों से नए सहयोग की अपेक्षा है। अपेक्षा है कि प्रवासी भारत की विभिन्न परियोजनाओं में स्वयं निवेश करें और अपने विदेशी मित्रों को भी निवेश के लिए प्रेरित करें। उल्लेखनीय है कि 18वें प्रवासी भारतीय सम्मेलन के बाद प्रवासी भारत के विकास में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) बढ़ाने के लिए प्रेरित हुए हैं।

इस सम्मेलन में शामिल कई प्रवासी उद्यमी और कारोबारी यह कहते हुए दिखाई दिए कि नए वर्ष 2025 में भारतीय प्रवासियों से एफडीआई से संबंधित उजली संभावनाओं को मुट्ठी में लेने के लिए यह जरूरी होगा कि भारत विदेशी निवेश की सीमा बढ़ाने, नियामक बाधाओं को हटाने, बुनियादी ढांचे के विकास, व्यापार-कारोबार में बेहतरी, निवेश की क्षेत्रीय सीमाओं को उदार बनाने, नियामक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने, नौकरशाही संबंधी बाधाओं को कम करने और कॉरपोरेट को उनके विवादों को सुलझाने में मदद करने के लिए न्यायिक परिवेश बेहतर बनाने की डगर पर आगे बढ़े। गौरतलब है कि प्रवासी भारतीयों ने वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के द्वारा जारी रिपोर्ट पर भी विशेष रूप से ध्यान दिया, जिसके मुताबिक देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का प्रवाह अप्रैल 2000 से सितंबर 2024 तक 1000 अरब डॉलर को पार कर गया है। खासतौर से चालू वित्त वर्ष 2024-25 में अप्रैल से सितंबर 2024 के दौरान 42.1 अरब डॉलर का विदेशी निवेश आया है। यह निवेश 60 सेक्टर, 31 राज्य और केंद्र शासित क्षेत्रों में रहा है तथा यह एफडीआई का यह अब तक का रिकॉर्ड प्रवाह है। खास बात यह भी है कि वर्ष 2014 के बाद से अब तक पिछले 10 वर्षों में 667.4 अरब डॉलर का एफडीआई आया है। भारत के आर्थिक विकास की यात्रा में एफडीआई का यह विशाल आकार एक बड़ी उपलब्धि है। यह वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में भारत के बढ़ते प्रभाव को भी दिखाता है। यदि हम भारत में एफडीआई के स्रोत देशों की ओर देखें तो पाते हैं कि भारत में एफडीआई का सबसे बड़ा स्रोत मॉरीशस रहा है। मॉरीशस ने कुल विदेशी निवेश में 25 प्रतिशत का योगदान दिया है। सिंगापुर 24 प्रतिशत एफडीआई के साथ दूसरे स्थान पर है। अमेरिका 10 प्रतिशत निवेश के साथ तीसरे स्थान है। इसके अलावा बड़े निवेशक देशों में नीदरलैंड्स , जापान और ब्रिटेन शामिल हैं। भारत में जिन क्षेत्रों में विदेशी निवेश आकर्षित हुआ है, उनमें आईटी, फाइनेंशियल सर्विसेज, टेलीकम्युनिकेशंस, ट्रेडिंग, इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कंसल्टेंसी सहित सर्विस सेक्टर प्रमुख सेक्टर हैं। निःसंदेह देश को विदेशी निवेश का पसंदीदा देश बनाने में तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था की अहम भूमिका है। पिछले वित्त वर्ष 2023-24 में देश की विकास दर अनुमानों से अधिक

8.2 फीसदी रही है और इस चालू वित्त वर्ष 2024-25 में भी यह करीब 7 फीसदी रह सकती है। भारत में तेजी से विदेशी निवेश आकर्षित होने के कई कारण हैं। भारत विश्व अर्थव्यवस्था में नई शक्ति प्राप्त कर रहा है। चार वैश्विक रूझान जनसांख्यिकी, डिजिटलीकरण, डीकार्बोनाइजेशन व डीग्लोबलाइजेशन न्यू इंडिया के पक्ष में हैं। भारत में मजबूत राजनीतिक नेतृत्व है। जिन सुधारों से विदेशी निवेशक आकर्षित हुए हैं, उनमें मेक इन इंडिया पहल, आर्थिक उदार नीतियां, जीएसटी, प्रतिस्पर्धी श्रमिक लागत और रणनीतिक प्रोत्साहन, कई सेक्टर में 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति, स्टार्टअप फंडिंग के लिए एंजेल टैक्स खत्म होना, विदेशी कंपनियों के लिए कारपोरेट टैक्स में कमी प्रमुख हैं। देश में प्रतिभाशाली नई पीढ़ी की कौशल दक्षता, आउटसोर्सिंग और देश में बढ़ते हुए मध्यम वर्ग की चमकीली क्रयशक्ति के कारण विदेशी निवेश भारत की ओर तेजी से बढ़ने लगा है। कानून के कई प्रावधानों को अपराध की श्रेणी से बाहर करने और एफडीआई के लिए नए रास्ते जैसे अभूतपूर्व कदमों से देश की ओर विदेशी निवेश का प्रवाह तेजी से बढ़ते हुए दिखाई दे रहा है। इसमें कोई दो मत नहीं है कि प्रवासी भारतीय इस बात से वाकिफ हुए हैं कि वैश्विक स्तर पर सुस्त बाजारों और चीन की आर्थिक रफ्तार सुस्त होने के बीच भारत ने विदेशी निवेश प्राप्त करने का अब तक एक शानदार मुकाम हासिल किया है। विनिर्माता और निवेशक चीन का विकल्प तलाश रहे हैं और इस समय एशिया में अधिकांश निवेशकों को भारत से बेहतर कोई नहीं दिख रहा है। देश की अर्थव्यवस्था की चाल में लगातार सुधार और विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफपीआई) से अच्छा निवेश प्राप्त होने की बदौलत भारतीय शेयरों में तेजी दर्ज की जा रही है। विदेशी निवेश की बदौलत भारत विश्व में नई परियोजनाओं की घोषणा करने वाला तीसरा देश बन गया है और अंतरराष्ट्रीय परियोजना वित्त सौदों में दूसरा सबसे बड़ा देश बन गया है। निश्चित रूप से देश का बढ़ता मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर देश में एफडीआई की बड़ी ताकत बना है। मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में भारत 456 अरब डॉलर विनिर्माण मूल्य के साथ दुनिया में पांचवें स्थान पर है तथा नया विश्व मैन्युफैक्चरिंग हब बनने की ओर अग्रसर है। भारत के मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को जिस तरह सुविधाओं के साथ तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है, उससे दुनिया भर के निवेशक भारत आने के लिए उत्सुक हैं।

इस समय भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया की सबसे बड़ी पांचवीं अर्थव्यवस्था है। अब इसे तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने और भारत को विकसित देश बनाने की डगर पर आगे बढ़ाने के लिए उद्योगपतियों द्वारा अहम भूमिका निभाई जा रही हैं। हम उम्मीद करें कि एफडीआई के लिए भारत को पसंदीदा देश बनाए जाने की बहुआयामी संभावनाओं को साकार करने के लिए सरकार और अधिक प्रयास करेगी। नए वर्ष 2025 में भारत की विशाल कौशल प्रशिक्षित युवा आबादी नवाचार, तकनीकी और डिजिटल नवोन्मेषों के साथ भारत को दुनिया के विदेशी निवेशकों की नजरों में और अधिक पसंदीदा देश बनाने की डगर पर तेजी से आगे कदम बढ़ाएगी। वर्ष 2025 में प्रवासी भारतीयों और उनके विदेशी मित्रों से अधिक एफडीआई प्राप्त होने, भारत की नई लॉजिस्टिक नीति और गति शक्ति योजना के कारगर कार्यान्वयन, नीतिगत सुधारों, उत्पादों के कारोबार के लिए सिंगल विंडो मंजूरी, इन्फ्रास्ट्रक्चर, श्रमिकों के नए दौर के अनुरूप शिक्षण प्रशिक्षण के साथ-साथ विभिन्न आर्थिक और वित्तीय सुधारों से भारत दुनिया के पहले पांच सबसे पसंदीदा एफडीआई वाले देशों के ऊंचे क्रम पर रेखांकित होते हुए दिखाई देगा। इससे देश को 2047 तक विकसित देश बनाने की डगर पर आगे बढ़ने में भी मदद मिलेगी।

(लेखक ख्यात अर्थशास्त्री हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया edit@haribhoomi.com पर दे सकते हैं।

शरणागति के संत 'गोस्वामी तुलसीदास'

संकलित
दर्शन

भगवान शंकर जी ने भी विष पिया और गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी। दोनों ने समाज को रामकथामृत देकर धन्य कर दिया। संसार में और समुद्र में अमृत-मंथन करने पर विष अवश्य निकलेगा, पर उसमें राम को जोड़ दिया तो वह विष भी अमृत हो जाएगा। यही तुलसीदास जी ने किया :

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई, गोपद सिंधु अनल सित लाई।
गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही, राम कृपा करि चितवा जाही।।

राम नाम के प्रति गोस्वामी जी की आस्था तो सावन मास के अंधे की तरह थी, जिन्हें राम प्रेम में सब हरा ही हरा दिखाई देता था। राम की कृपा के प्रति गोस्वामी तुलसीदास जी की यह जो दीनता और शरणागति है, यही उनका चरम पुरुषार्थ है। कृपा के मूल में पुरुषार्थ नहीं होता है, अपितु पुरुषार्थ के मूल में कृपा होती है। रामचरितमानस कृपासाध्य ग्रंथ है, साधन साध्य नहीं। कर्म, उपासना, साधन, अनुष्ठानादि सब ठीक हैं, पर यह सब पाने के साधन हैं, किंतु जिसके जीवन में प्राप्तव्य ही कृपा से प्राप्त हुआ हो, वह क्या करे? रामचरितमानस में पुरुषार्थ के चरम आदर्श श्री लक्ष्मण जी और कृपा के चरम आदर्श श्री भरत जी दोनों के आदर्श और सर्वस्व श्रीराम हैं। इसका तात्पर्य यह है कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने वाल्मीकि जी, व्यास जी और जितने भी श्रेष्ठतम पुराणकार हुए सबकी वंदना की है, पर उन्होंने अपने ग्रंथ में न तो इतिहास को उठाया, न किसी ग्रंथ से कुछ लिया।

अर्जुन को अपनी विद्या पर था घमंड, शिवजी ने तोड़ा था

संकलित
प्रेरणा

महाभारत का प्रसंग है। कोरव और पांडवों का युद्ध तय हो गया था। दोनों ही पक्ष युद्ध की तैयारियां कर रहे थे। उस समय अर्जुन ने एक पर्वत पर देवराज इंद्र से दिव्यास्त्र पाने के लिए तप किया। देवराज इंद्र प्रकट हुए और उन्होंने कहा कि मुझसे दिव्यास्त्र लेने से पहले तुम्हें शिव जी को प्रसन्न करना होगा। इंद्र देव की बात मानकर अर्जुन ने शिव जी को प्रसन्न करने तप शुरू कर दिया। जिस जगह अर्जुन तप कर रहे थे, वहां एक दिन एक जंगली सूअर आ गया। सूअर एक मायावी दैत्य था। अर्जुन ने जैसे ही जंगली सूअर को देखा, उन्होंने अपने धनुष पर बाण चढ़ा लिया। तभी वहां किरात वनवासी पहुंच गया। किरात वनवासी कोई और नहीं, बल्कि शिवजी ही थे, जो वेष बदलकर आए थे। वनवासी ने अर्जुन को बाण चलाने से रोक दिया और कहा कि ये मेरा शिकार है। ये बात सुनने के बाद भी अर्जुन ने तीर सूअर की ओर छोड़ दिया। वनवासी ने भी उसी समय बाण छोड़ दिया। अर्जुन और वनवासी के बाण एक साथ उस सूअर को लगे। सूअर तो मर गया, लेकिन इन दोनों के बीच विवाद होने लगा। ये विवाद युद्ध तक पहुंच गया। युद्ध के बीच में वनवासी का एक बाण अर्जुन को लग गया। इसके बाद अर्जुन ने कुछ देर के लिए युद्ध रोका और मिट्टी के एक शिवलिंग की पूजा की। पूजा में जो माला अर्जुन ने शिवलिंग पर चढ़ाई थी, वह उस वनवासी के गले में दिखाई देने लगी। ये देखकर अर्जुन समझ गए कि ये स्वयं शिव जी ही हैं।

अंतर्मन

आज की पाती

स्टार्टअप और कौशल विकास बेरोजगारी का हल

आज से लगभग आठ वर्ष पहले केंद्र सरकार ने स्टार्टअप योजना को अमल में लाया था। इस योजना का मुख्य उद्देश्य देश की आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ यानी उद्योगों को और मजबूत बनाना है। इससे रोजगार के अवसर भी बढ़ते हैं। इस योजना के तहत अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों के साथ-साथ महिला उद्यमियों को सब्सिडी भी मिलती है। सरकार इस योजना के अधीन उद्योगों को टैक्स में भी छूट देती है। हमारे देश में बेरोजगारी बहुत बड़ी समस्या है। देश के उद्योग जितने मजबूत होंगे उतने ही रोजगार उपलब्ध होंगे और देश की आर्थिक व्यवस्था मजबूत होगी।

- संदीप पटेल, धमतरी

करंट अफेयर

दिवंगत नवलनी के तीनों वकील जेल में डाले गए

रूस के दिवंगत विपक्षी नेता एलेक्सी नवलनी का प्रतिनिधित्व कर चुके तीन वकीलों को रूसी राष्ट्रपति कार्यालय क्रेमलिन की दमनात्मक कार्रवाई के तहत जेल में डाल दिया गया है। मॉस्को से करीब 100 किलोमीटर की दूरी पर स्थित पेतुस्की शहर की एक अदालत ने नवलनी के वकील रहे वादिम कोब्जेव, इगोर सेरगुनिन और एलेक्सी लिपस्टर को साढ़े तीन से पांच साल तक की कैद की सजा सुनायी। उन्हें चरमपंथी संगठनों के साथ संबंध रखने के आरोपों में अक्टूबर 2023 को गिरफ्तार किया गया था। नवलनी के नेटवर्क को प्रशासन चरमपंथी गतिविधियां मानता था। इस मामले को व्यापक रूप से विपक्ष पर दबाव बढ़ाने के एक तरीके के रूप में देखा जा रहा है ताकि बचाव पक्ष के वकीलों को राजनीतिक मामले लेने से हतोत्साहित किया जा सके। नवलनी चरमपंथ सहित कई आपराधिक मामलों में 19 साल की जेल की सजा काट रहे थे। फरवरी 2023 में एक रूसी जेल में उनकी मृत्यु हो गई। स्वतंत्र रूसी अखबार 'नोवाया गजेटा' ने खबर दी है कि कोबजेव ने 10 जून को अदालत में अपने बयान में कहा, ''नवलनी के विचारों को अन्य लोगों तक पहुंचाने को लेकर हमपर मुकदमा चलाया जा रहा है।''

ऑफ बीट

ब्यूटी पार्लर में बाल धुलवाने से बीपीएसएस का खतरा

थकान मिटाने, 'फील गुड' करने और बालों की चमक बढ़ाने के लिए लोग अक्सर हेयर स्पा का सहारा लेते हैं। हालांकि, ब्यूटी पार्लर या सैलून में हेयर स्पा की प्रक्रिया के बाद बालों की धुलाई 'ब्यूटी पार्लर स्ट्रोक सिंड्रोम' (बीपीएसएस) नाम की एक गंभीर दुर्लभ स्वास्थ्य जटिलता का कारण बन सकती है। विभिन्न अध्ययनों से पता चला है कि ब्यूटी पार्लर या सैलून में बालों की धुलाई के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले 'बैकवॉश बेसिन' पर एक विशेष कोण पर सिर टिकाकर बैठने या लेटने से न सिर्फ गर्दन में दर्द और चोट की समस्या उभर सकती है, बल्कि कुछ मामलों में व्यक्ति के स्ट्रोक का भी शिकार होने का खतरा रहता है। अमेरिकी न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. माइकल वेनट्रॉब ने 1993 में पहली बार बीपीएसएस की पहचान की थी। उन्होंने पाया था कि स्ट्रोक से जुड़े गंभीर लक्षणों से जूझ रहे उनके कुछ मरीजों में ब्यूटी पार्लर या सैलून में बालों में शैंपू कराने के बाद ये समस्याएं उभरी थीं। स्ट्रोक एक तरह का मस्तिष्काघात है, जो मस्तिष्क में खून का प्रवाह घटने पर होता है। यह आमतौर पर मस्तिष्क में प्रमुख रक्त वाहिका में खून का थक्का जमने या उसके फटने के कारण होता है, जिससे कोशिकाओं को पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन, ग्लूकोज व अन्य पोषक तत्व नहीं मिल पाते हैं और वे दम तोड़ देती हैं।

ट्रेंड

'इमर्जेन्सी' के लिए बधाई

'इमर्जेन्सी' जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर फिल्म बनाने के लिए सांसद कंगना रनौत एवं इस फिल्म की पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई देता हूं। 'इमर्जेन्सी' के दौर की यादों को इस फिल्म के द्वारा पुनः जीवित करने का प्रयास सराहनीय है।

-देवेन्द्र फडणवीस, सीएम, महाराष्ट्र

विरोधी भी तारीफ करते हैं

बीजेपी ने सरेआम ये स्वीकार किया कि दिल्ली में केजरीवाल की ढेरों कल्याणकारी योजनाएं चल रही हैं जिसका लाभ बीजेपी वालों के परिवारों को भी मिल रहा है। हमें राजनीति करनी नहीं आती, काम करना आता है। और काम ऐसा करते हैं कि हमारे विरोधी भी उसकी तारीफ करते हैं।

-अरविंद केजरीवाल, पूर्व सीएम, नई दिल्ली

सम्मानित महसूस किया

राष्ट्रपति से प्रतिष्ठित मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार पाकर मैं बहुत सम्मानित महसूस कर रही हूं। यह सम्मान मुझे और भी अधिक मेहनत करने और अपने देश को गौरवान्वित करने के लिए प्रेरित करता है।

-मनु भाकर, ओलंपिक शूटर

इस पल को जाने मत दो

यदि आप यह व्यक्त नहीं करने जा रहे हैं कि आप आज वास्तव में कैसा महसूस कर रहे हैं, तो कभर कोई कल नहीं, कोई बीता हुआ कल नहीं. केवल कुछ ऐसा है जिसे हम 'अभी' कहते हैं इस पल। इसे जाने मत दो.।

-शेखर कपूर, फिल्मकार

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242221 पर या सीधे मेल से aapkepatra.haribhoomi@gmail.com पर भेज सकते हैं।